माघ मास, कृष्ण पक्ष 2, वर्ष 11, अंक 260, पृष्ठ 12, मूल्य: 5.00

प्रयागराज, रविवार, 8 जनवरी, 2023

परख सच की

जनसंदेश टाइम्स

प्रयागराज, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं गोरखपुर से प्रकाशित

अन्दर : चेतन शर्मा फिर बने चीफ सेलेक्टरः

अंदर - बिजली के बकायेदार किसानों को नहीं होगी जेल

नगर संस्करण

E-paper : www.jansandeshtimes.net | Portal : www.jansandeshtimes.news

जोशीमठ का मामला पहुंचा सुप्रीम कोर्ट

ज्योतिष्पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की याचिका

नई दिल्ली। उत्तराखंड के जोशीमठ में जमीन धंसने का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। इस मामले में ज्योतिष्पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराज ने शनिवार को अपने वकील के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल की है। याचिका में कहा गया है कि इस भू-धंसाव की वजह से पूरा इलाका दहशत में है। इसलिए सुप्रीम कोर्ट इस मामले में तुरंत दखल दे, और सरकार को सहयता कार्यों के लिए आदेश दे।

इस जनहित याचिका में कहा गया है कि जोशीमठ में वर्तमान समय में जो जमीन धंसने की घटनाएं हुई हैं उसे राष्ट्रीय आपदा घोषित किया जाए और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को यहां के निवासियों की मदद के लिए भेजा जाए। वहीं इससे पहले उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी जोशीमठ पहुंचे और प्रभावित क्षेत्रों का मुआयना किया। अपने दौरे के दौरान सीएम धामी पीड़ित परिवारों से मुलाकात की। बता दें कि 6 जनवरी तक यहां 603 घरों में दरारें आ चुकी हैं। इनमें 100 से ज्यादा घर ऐसे हैं, जो

जनहित याचिका

लोगों की जान बचाना हमारी पहली प्राथमिकताः धामी

जोशीमठ में रोके गए सारे कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट

कभी भी गिर सकते हैं। इनमें 44 परिवारों को फिलहाल सुरक्षित जगह पर भेज दिया गया है। जानकारी के मुताबिक, आईएसआरओ और ओएनजीसी की टीमें जोशीमठ का सर्व करेंगी।

जानकारी के मुताबिक, जोशीमठ में कम से कम 9 वार्डों में दरारें और भूमि धंसने की घटनाएं सामने आई हैं। बता दें कि जिला प्रशासन ने प्रभावित परिवारों के लिए 1271 लोगों की क्षमता वाले 229 कमरों की पहचान की है। सीएम धामी ने इससे पहले शुक्रवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए अधिकारियों के साथ जोशीमठ की मौजूदा स्थिति की समीक्षा करने के बाद कहा कि लोगों की जान बचाना हमारी पहली प्राथमिकता है। जोशीमठ में दरारें तेजी से बढ़ रही हैं। इसी को देखते हुए उत्तराखंड के चमोली जिले के जोशीमठ और उसके आसपास सभी कंस्ट्रक्शन गतिविधियों को रोक दिया गया है, क्योंकि कस्बे की इमारतों में दरारें आ गई हैं। जिलाधिकारी हिमांशु खुराना ने शनिवार इसकी जानकारी दी है। एएनआई से बात करते हुए, जिलाधिकारी ने कहा कि जोशीमठ में स्थिति को देखते हुए सभी कंस्ट्रक्शन वर्क रोक दिए गए हैं। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का कस्बे का दौरा करने और लैंडस्लाइड प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण करने का कार्यक्रम है। जिलाधिकारी ने आगे कहा कि जोशीमठ में स्थानीय स्थिति को देखते हुए, अगले आदेश तक सभी प्रकार के निर्माण कार्य रोक दिए गए हैं। इन घटनाओं के बाद प्रशासन भी हरकत में आया और चमोली जिला प्रशासन की ओर से संयुक्त टीम गठित की गई। टीम ने दो दिनों तक नगर में भू-धंसाव से प्रभावित मकानों के सर्वे किया। तहसील प्रशासन, नगर पालिका, आपदा प्रबंधन और एसडीआरएफ की संयुक्त टीम ने घर-घर जाकर बारीकी से निरीक्षण किया। जोशीमठ नगर में करीब दो हजार मकान हैं। रविवार तक भू-धंसाव से 581 मकानों में दरारें आ चुकी थीं।

विस्थापित परिवारों को मिलेगा मकान का किराया

नई दिल्ली। जोशीमठ में भू धंसाव के कारण विस्थापित परिवारों को मकान के किराये के लिए चार हजार रुपये प्रति माह दिए जाएंगे। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर छह माह तक के लिए इसे लागू करने के निर्देश दिए गए हैं। मुख्यमंत्री राहत कोष से राशि स्वीकृत की गई है। जोशीमठ भू-धंसाव की वजह से बेघर हुए लोगों को सरकार छह महीने तक चार हजार रुपये प्रतिमाह का भुगतान करेगी। जिला प्रशासन ने इसकी शुरूआत कर दी है। वहीं आज सरकार ने पैसा जारी कर दिया है। राज्य सरकार ने दो सितंबर 2020 को एक आदेश जारी किया था, जिसके तहत बेघर हुए लोगों को किराये के मकान में रहने के लिए चार हजार रुपये प्रति परिवार की दर से छह माह तक मुख्यमंत्री राहत कोष से देने का निर्णय लिया गया था। इसी आधार पर चमोली के डीएम हिमांशु खुराना ने सचिव आपदा प्रबंधन को पत्र भेजकर सीएम राहत कोष से भुगतान कराने की स्वीकृति मांगी थी। सचिव आपदा प्रबंधन डॉ.रंजीत सिन्हा ने बताया कि नियमानुसार जिला प्रशासन ने राशि का भुगतान शुरू कर दिया है। जोशीमठ के अंतर्गत विगत दिनों से हो रहे भू धंसाव से प्रभावित ऐसे परिवार जो बेघर हो गये हैं, उन्हें सुरक्षित स्थानों पर किराये के मकान में अस्थायी रूप से विस्थापित करने के लिए चार हजार रुपये प्रति परिवार किराये मिलेगा।

अगले 24 घंटे और कहर ढाएगी ठंड

मौसम

पश्चिमी यूपी, राजस्थान और दिल्ली में अगले 24 घंटे के लिए रेड अलर्ट जारी

लखनऊ। उत्तर भारत के राज्यों में इन दिनों कड़ाके की ठंड पड़ रही है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के कुछ हिस्सों और आसपास के इलाकों में घने कोहरे की स्थिति में सुधार हुआ है। कोहरे से कुछ राहत भले ही मिली हो मगर तापमान तो और ज्यादा नीचे गिरा है। तापमान घटने के कारण पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी यूपी, राजस्थान और दिल्ली में अगले 24 घंटे के लिए रेड अलर्ट जारी किया गया है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ आरके जेनामणि ने शनिवार को यह जानकारी दी।

आरके जेनामणि ने बताया कि दिल्ली में शीतलहर में बढ़ोत्तरी हुई है। शनिवार को दिल्ली में सबसे कम तापमान दिल्ली यूनिवर्सिटी के पास 1.5 डिग्री दर्ज किया गया। लोधी रोड में 2.0 और सफदरजंग में 22 डिग्री दर्ज हुआ। उन्होंने बताया कि राजधानी और उसके आसपास के इलाकों में 9 जनवरी के बाद तापमान में बढ़ोत्तरी हो सकती है। घने कोहरे के कारण पालम में दृश्यता घटकर 50 मीटर रह गई, जिससे सड़क और रेल यातायात प्रभावित हुआ। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास पालम वेधशाला में सुबह साढ़े पांच बजे दृश्यता 25 मीटर थी।

जम्मू कश्मीर में न्यूनतम तापमान थोड़ा चढ़ा कश्मीर में न्यूनतम तापमान में कई डिग्री के इजाफे से लोगों को शनिवार को भयंकर सर्दी से राहत ड्ट मिली। अब कुछ दिनों तक हिमपात हो सकती है। मौसम विभाग ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि श्रीनगर में शुक्रवार रात को न्यूनतम तापमान शून्य से 1.4 डिग्री सेल्सियस नीचे रहा। उससे पिछली रात यह शून्य से 5.5 डिग्री सेल्सियस नीचे था।

मेयर चुनाव को लेकर केजरीवाल और एलजी के बीच छिड़ा लेटर वॉर

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम के मेयर चुनाव को लेकर सीएम अरविंद केजरीवाल और एलजी वीके सक्सेना के बीच लेटर वॉर छिड़ गया है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को 'शक्तियों के टकराव' को लेकर उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना को एक पत्र लिखा. सीएम ने एलजी से दिल्ली नगर निगम अधिनियम में इस्तेमाल किए गए एलजी/प्रशासक शब्द पर अपनी आधिकारिक स्थिति पर स्पष्टीकरण मांगा और कहा कि अगर एडमिनिस्ट्रेटर का मतलब गवर्नर होगा तो चुनी हुई सरकार व्यर्थ साबित होगी। एमसीडी सदन में शपथ ग्रहण को लेकर हंगामे के कारण मेयर के चुनाव से पहले शुक्रवार को एमसीडी की बैठक स्थगित कर दी गई थी। जिसके एक दिन बाद यानी आज अरविंद केजरीवाल ने एलजी को पत्र लिखा है। अपने पत्र में सीएम केजरीवाल ने कहा कि मुझे आज आपके कार्यालय की ओर से जारी एक बयान मिला है, जिसमें कहा गया है कि चूंकि यह डीएमसी अधिनियम के संबंधित प्रावधानों में लिखा गया है कि प्रशासक नियुक्त करेगा .. , इसलिए 10 एल्डरमैन और महापौर के चुनाव के लिए पीठासीन अधिकारी को निर्वाचित सरकार की भागीदारी के बिना आपकी ओर से सीधे नियुक्त और अधिसूचित किया गया था।

आईएस के दो आतंकी हावड़ा से पकड़े गए

कोलकाता। कोलकाता पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने कोलकाता से सटे हावड़ा में दो आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि इनका संबंध कुख्यात आतंकवादी संगठन आईएसआईएस से रहा है। इन्हें शुक्रवार को गिरफ्तार किया गया था। शनिवार को इन्हें कोर्ट में पेश किया गया है, जहां से 19 जनवरी तक के लिए पुलिस रिमांड पर ले लिया गया है। सूत्रों के मुताबिक ये आतंकी पाकिस्तान समेत मध्य-पूर्व के कई देशों के हैंडलर उनके संपर्क में थे। पुलिस गिरफ्तार दोनों को अपनी हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। जानकारी मुताबिक दोनों हावड़ा में एक साथ मिलकर लोगों का ब्रेनवॉश और देश विरोधी गतिविधियों के लिए उकसाते थे।

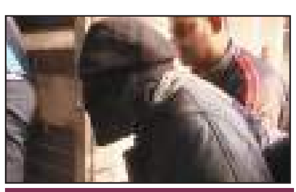

पुलिस ने 19 तक रिमांड पर लिया

गिरफ्तार लोगों की पहचान हो गई है। इनमें एक मोहम्मद सद्दाम है, जो टिकियापारा के आफताबुद्दीन मुंसी लेन का निवासी है। वह एमटेक बताया जा रहा है। वहीं दूसरे का नाम सईद हुसैन हैं। शुक्रवार रात कोलकाता पुलिस की एसटीएफ ने हावड़ा के टिकियापारा में छापेमारी कर दोनों को गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि एक आरोपी के पिता सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी हैं।

लखनऊ में कुत्तों का आतंक जारी, महिला के चेहरे पर काटा

लखनऊ। राजधानी में स्ट्रीट डॉग्स का आतंक बदस्तूर जारी है। यहां के सृष्टि अपार्टमेंट में रहने वाली स्मृति पर अचानक कुत्तों के झुण्ड ने हमला बोल दिया। घबराई स्मृति जब भागी तो कुत्तों ने उसके चेहरे पर काट लिया। उनके चेहरे पर चोट आई और खून निकल आया है। यहां पिछले दो महीने के अंदर तीसरी बार आवारा कुत्तों ने स्थानीय लोगों का अपना निशाना बनाया है। शनिवार को स्मृति पर जब कुत्तों ने अटैक किया तो आसपास के लोगों ने उनको दौड़ कर बचाया और कुत्तों को वहां से भगाया। लेकिन तब तक महिला को काफी चोट आई थी। उन्होंने जैकेट पहना था , इसकी वजह से बच गई। उनके जैकेट को कुत्तों को नोच कर फाड़ दिया है। इससे पहले यहां 6 से ज्यादा कुत्तों ने एक लड़के पर हमला कर दिया। इस घटना में लड़का बुरी तरह से जख्मी हो गया था।

बिहार में जातीय गणना शुरू होते ही यूपी में हलचल

सपाध्यक्ष अखिलेश यादव से मिले चंद्रशेखर 'रावण'

लखनऊ। बिहार में जाति आधारित गणन शुरू होते ही यूपी में भी हलचल शुरू हो गई है। बिहार में भले ही सत्ताधारी नीतीश सरकार खुद जातीय गणना करा रही है, लेकिन यूपी में विपक्ष इसके लिए रणनीति बनाने में जुट गया है। निकाय चुनाव में ओबीसी आरक्षण को लेकर पहले ही भाजपा पर हमलावर विपक्ष अब जातीय गणना को हथियार बनाकर योगी सरकार पर दबाव बनाने की रणनीति पर काम कर रहा है।

शनिवार को भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर आजाद रावण ने इसी को लेकर सपा प्रमुख अखिलेश यादव से मुलाकात की। मुलाकात के बाद चंद्रशेखर ने मुलाकात की फोटो ट्वीट कर अपने इरादे भी साफ कर दिए। चंद्रशेखर ने अखिलेश के साथ मुलाकात के बाद कहा कि जब बिहार में जब जाति गणना हो रही है तो पूरे

रणनीति शुरू

जब बिहार में जाति गणना हो रही है तो पूरे देश में क्यों नहीं हो सकती : रावण

देश में क्यों नहीं हो सकती है। यह भी कहा कि यूपी निकाय चुनाव में भाजपा द्वारा साजिश करके छीने गए ओबीसी आरक्षण की लड़ाई में हम पिछड़े भाइयों के साथ हैं। इन मुद्दों पर विपक्ष एकजुटता के तहत जनांदोलन की तैयारी कर रहा है। इसी को लेकर अखिलेश यादव से आज चर्चा की गई है। चंद्रशेखर के रुख से साफ है कि निकाय चुनाव से पहले ओबीसी आरक्षण और जातीय गणना को लेकर विपक्ष भाजपा पर चौतरफा दबाव बनाने की तैयारी कर रहा है। अखिलेश यादव निकाय चुनाव पर हाईकोर्ट का फैसला

आने के बाद से ही ओबीसी को लेकर योगी सरकार पर हमलावर हैं। शनिवार को ओबीसी और आरक्षण को लेकर अखिलेश यादव ने भी सरकार पर हमला बोला। ड्टअखिलेश ने कहा कि भाजपा शुरू से सामाजिक न्याय की विरोधी रही है और यही कारण है कि वह लगातार पिछड़ों और दलितों को दिए जा रहे आरक्षण पर हमला कर कमजोर कर रही है। विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की भर्तियों में आरक्षण की अनदेखी की गई। कई विश्वविद्यालयों में पिछड़ों का हक मारा गया। पिछड़ों को मान-सम्मान और हक देने को लेकर भाजपा की नीयत कभी ठीक नहीं रही है। भाजपा आरक्षण के खिलाफ पिछले दरवाजे की राजनीति कर रही है। उन्होंने कहा कि देश में विदेशी विश्वविद्यालयों के कैम्पस खोलने की तैयारी हो रही है। इससे देश के छात्र-छात्राएं कितना लाभाविन्त होंगे यह तो समय बताएगा मगर यह निश्चित है कि इनमें आरक्षण जैसी कोई व्यवस्था नहीं होगी। भाजपा अपने राजनीतिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए पिछड़ों के साथ रहने का दिखावा कर रही है। भाजपा सत्ता पाने के बाद धोखा दे देती है। भाजपा के धोखे और छलावा को पिछड़े और दलित समझ चुके हैं। समय आने पर इस धोखे का जवाब देंगे। देश और प्रदेश के विश्वविद्यालयों में जब आरक्षण का लाभ नहीं दिया जा रहा है।

नफरत की जमीन पर बन रहा राम मंदिर

राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के बयान पर बवाल

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जनता दल (आजेडी) के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने कहा कि भारत की भूमि राम और कृष्णमय मानी जाती थी। अब सब खत्म हो गया है। अब राम रामायण से भाग जाएंगे। कण-कण से हट जाएंगे। यह भारत राम का नहीं रहेगा। केवल एक मंदिर राम का रहेगा। नफरत की जमीन पर राम के मंदिर का निर्माण हो रहा है। राम उसी एक मंदिर में बैठ जाएंगे। पत्थरों के बीच रहेंगे, हृदय के बीच में नहीं रहेंगे। आरएसएस वाले यही कर रहे हैं। हम तो हे राम वाले हैं, जय श्री राम वाले नहीं। हमारे राम तो भारत के कण-कण में रहेंगे,

बयान

बोले- कण-कण के राम को मंदिर में कैद कर रहा आरएसएस

बीजेपी का पलटवार, हिंदू आस्था का अपमान करने का आरोप लगाया

आरएसएस वालों के राम जहां-जहां बैठें! अयोध्या के निर्माणाधीन राम मंदिर निर्माण में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर उन्होंने कहा- भारत के कण-कण से सिमट कर पत्थरों की चारदीवारी में राम को कैद किया जा रहा है। क्योंकि इंसानियत से बड़ा इस भारत

में उन्मादियों के राम बचे हैं। बाकी सब जगह से राम खत्म हो गए।

भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने राजद नेता जगदानंद सिंह पर हमला बोलते हुए ट्वीट किया कि वे राम जन्मभूमि को 'नफरत की जमीन', राम मंदिर को 'चहारदीवारी', उन्मादी के राम कहते हैं। इससे पहले उन्होंने पीएफआई पर प्रतिबंध लगाए जाने के दौरान हिंदुओं को निशाना बनाते हुए विवादित टिप्पणी की थी। हुसैन दलवई से जगदानंद सिंह तक यह विवादित टिप्पणी कोई संयोग नहीं है, बल्कि वोटबैंक के लिए एक प्रयोग है।

राष्ट्रीय जनता दल के नेता जगदानंद सिंह ने राम मंदिर पर अपनी टिप्पणी में यह कहते हुए विवाद खड़ा कर दिया है कि यह 'नफरत की जमीन' (नफरत की भूमि) पर बनाया गया है। अब इसे लेकर भारतीय जनता पार्टी ने भी करारा पलटवार किया है।

विमान में महिला पर 'पेशाब' करने वाला गिरफ्तार

नई दिल्ली। एअर इंडिया की फ्लाइट में महिला से बदसलूकी करने करने वाले शख्स शंकर मिश्रा को पुलिस ने शनिवार को गिरफ्तार कर लिया है। दिल्ली पुलिस ने एअर इंडिया की उड़ान में सह-यात्री पर पेशाब करने के आरोपी को बेंगलुरु से गिरफ्तार किया है। पुलिस उपायुक्त (हवाई अड्डा) रवि कुमार सिंह ने कहा, दिल्ली पुलिस के एक दल ने आईजीआईए मामले में आरोपी शंकर मिश्रा को बेंगलुरु से गिरफ्तार कर लिया है। उसे दिल्ली लाया गया है और मामले में जांच की जा रही है।

शंकर मिश्रा ने पिछले साल 26 नवंबर को न्यूयॉर्क से दिल्ली आ रही एअर इंडिया की एक उड़ान की बिजनेस

कार्रवाई

दिल्ली पुलिस ने बेंगलुरू से पकड़ा

क्लास में नशे की हालत में एक बुजुर्ग महिला पर कथित तौर पर पेशाब कर दिया था। दिल्ली पुलिस ने महिला द्वारा एअर इंडिया को दी गई शिकायत के आधार पर चार जनवरी को मिश्रा के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की थी। दिल्ली पुलिस ने नशे में धुत एक यात्री द्वारा सहयात्री पर कथित तौर पर पेशाब किए जाने की घटना के संबंध में एअर इंडिया के कर्मचारियों को तलब किया है। सूत्रों ने यह जानकारी दी। दरअसल, मामले में पायलट और सह-पायलट समेत एअर इंडिया के कुछ कर्मचारियों को शुक्रवार को पेश होने के लिए समन जारी किया गया था, लेकिन वे पेश नहीं हुए। सूत्रों ने शुक्रवार को बताया कि अब उन्हें सात जनवरी को सुबह 10.30 बजे पुलिस उपायुक्त के कार्यालय में तलब किया गया है।

बीएसपी के पूर्व मंत्री याकूब कुरैशी को भेजा गया न्यायिक हिरासत में

मेरठ/नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश की बसपा सरकार में मंत्री रहे 50 हजार के इनामी हाजी याकूब कुरैशी और उनके बेटे इमरान कुरैशी को दिल्ली से गिरफ्तार कर शनिवार को मेरठ अदालत में पेश किया गया जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। पुलिस ने शनिवार को यहां बताया कि हाजी याकूब कुरैशी और उनके पुत्र इमरान कुरैशी दोनों

को दिल्ली के चांदनी महल क्षेत्र में अपने रिश्तेदार के यहां एक किराये के फ्लैट में रह रहे थे, जिन्हें एसओजी की टीम ने दिल्ली पुलिस के साथ मिलकर शुक्रवार देर रात गिरफ्तार किया। इसका समाचार मिलते ही खरखौदा थाने के आस पास हाजी याकूब के समर्थकों और बसपा कार्यकर्ताओं का भारी जमावड़ा लग गया। पुलिस अधीक्षक अपराध अमित कुमार ने बताया कि हाजी याकूब कुरैशी और इमरान कुरैशी को खरखौदा थाने में रखा गया था, जहां उनसे पूछताछ के बाद मेरठ की अदालत में पेश किया गया। अदालत में पेश होने के बाद दोनों को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि एक सप्ताह पहले ही दोनों पर पुलिस ने 50 हजार का इनाम घोषित किया था। उल्लेखनीय है कि खरखौदा के अलीपुर स्थित मीट कम्पनी अल फहीम मीटेक्स प्राइवेट लिमिटिड में बिना अनुमति के मीट पैकेजिंग और प्रोसेसिंग के आरोप में 31 मार्च 2022 को पूर्व मंत्री कुरैशी के बेटे इमरान, फिरोज और पत्नी समेत 17 लोगों पर खरखौदा थाने में मामला दर्ज करवाया गया था। इस मामले में याकूब कुरैशी के दूसरे बेटे फिरोज को पहले ही गिरफ्तार करके जेल भेजा जा चुका है।

केंद्र की सख्ती से टीआरएफ बौखलाया

नई दिल्ली। केंद्र सरकार की सख्ती के बाद आतंकी संगठन द रेसिस्टेंस फ्रंट बौखला गया है। शनिवार को उसने कश्मीरी पंडितों की नई लिस्ट जारी की है। इस आतंकी संगठन ने उन लोगों पर हमले की चेतावनी दी है, जिनके नाम इस लिस्ट में हैं। बता दें, गृह मंत्रालय के प्रतिबंध लगाने के एक दिन बाद आतंकी संगठन टीआरफ ने लिस्ट जारी की है।

सच्चाई उजागर होने के बाद टीआरएफ खुद को एक स्थानीय आतंकवादी समूह के रूप में पेश करना चाहता है, जबकि वास्तव में यह पाकिस्तान स्थित लश्कर ए तैयबा की शाखा है। पाकिस्तान स्थित आतंकी समूह लश्कर-ए-तैयबा की शाखा टीआरएफ को गुरुवार को गृह मंत्रालय ने प्रतिबंधित संगठन घोषित कर दिया था। केंद्रीय गृह मंत्रालय की एक अधिसूचना के अनुसार, रेजिस्टेंस

दहशत

टीआरएफ ने कश्मीरी पंडितों के खिलाफ जारी की नई हिट लिस्ट

टीआरएफ कश्मीरी पंडितों को कॉलोनियों में न रहने की दे चुका चेतावनी

फ्रंट आतंकवादी गतिविधियों को आगे बढ़ाने, आतंकवादियों की भर्ती, आतंकवादियों की घुसपैठ और पाकिस्तान से जम्मू-कश्मीर में हथियारों और नशीले पदार्थों की तस्करी के लिए ऑनलाइन माध्यम से युवाओं की भर्ती कर रहा है।यह संगठन 2019 में प्रतिबंधित लश्कर-ए-तैयबा के प्रॉक्सी के रूप में अस्तित्व में आया, जो 26/11

के मुंबई आतंकवादी हमलों सहित कई आतंकी गतिविधियों में शामिल था।

भारत सरकार के खिलाफ आतंकवादी संगठनों में शामिल होने के लिए जम्मू और कश्मीर के लोगों को उकसाने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर यह संगठन काफी एक्टिव है। गृह मंत्रालय ने कहा कि शेख सज्जाद गुल द रेजिस्टेंस फ्रंट का एक कमांडर है और उसे गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम 1967 के तहत आतंकवादी घोषित किया गया है। संगठन की गतिविधियां भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और संप्रभुता के लिए हानिकारक हैं। द रेजिस्टेंस फ्रंट के सदस्यों और सहयोगियों के खिलाफ भी बड़ी संख्या में मामले दर्ज किए गए हैं। इसकी भारत विरोधी गतिविधियों को देखते हुए गृह मंत्रालय ने समूह को प्रतिबंधित संगठन घोषित किया है। सरकार ने मोहम्मद अमीन उर्फ अबू खुबैब को आतंकी घोषित किया है, जो जम्मू-कश्मीर से ताल्लुक रखता है, लेकिन वर्तमान में पाकिस्तान में एक आतंकवादी के रूप में रहता है।

वह लश्कर-ए-तैयबा के लॉन्चिंग कमांडर के रूप में कार्य कर रहा है। टीआरएफ कश्मीरी पंडितों को जम्मू कश्मीर प्रशासन द्वारा बनाए जा रहे कॉलोनियों में न रहने की चेतावनी भी दे चुका है। जानकारी के मुताबिक टीआरएफ ने प्रवासी सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ धमकियां जारी करने के अलावा स्थानीय अखबारों के संपादकों सहित स्थानीय पत्रकारों को भी धमकी दी है। टीआरएफ ने हाल ही में श्रीनगर जिले के शिक्षा विभाग के 56 कर्मचारियों को भी धमकी दी थी।

संक्षेप

धूप निकलने से लोगों ने ठंड से राहत महसूस की

नैनी। बीते एक सप्ताह से लगातार चल रही शीतलहर एवं हाड़ कपाने वाली ठंड से लोग काफी परेशान हो गए थे। शनिवार की सुबह से तेज धूप निकलने से लोगों ने ठंड से काफी राहत महसूस की। जैसा कि मालूम हो, बीते एक सप्ताह से ठंड का प्रकोप काफी तेजी से बढ़ता जा रहा था। सुबह से शाम तक आसमान में बादल छाए रहते थे। सूर्य भगवान का दर्शन तक नहीं मिल रहा था। शीतलहर एवं भीषण ठंड के चलते सारा दिन लोग अपने- अपने घरों में कैद रहते रहे और जिधर देखो उधर लोग आग के सहारे बैठे रहते थे। शीतलहर व ठंड के चलते क्षेत्र की सड़कों एवं बाजारों में सन्नाटा पसरा रहता था। दुकानदार ग्राहकों के इंतजार में सारा दिन दुकान खोले बैठे रहते थे। भीषण ठंड के चलते क्षेत्र में दुकानें जल्द ही बंद कर दी जाती रही। शनिवार की सुबह से तेज धूप निकलने से लोगों ने ठंड से काफी राहत महसूस की। लोग घर के दरवाजे एवं छतों पर जाकर धूप का जमकर आनंद लिया। बच्चे भी पार्क में जाकर बैडमिंटन चिड़िया एवं गेंद खेलकर लुफ्त उठाया।

ट्रेन से कटकर महिला की मौत

फूलपुर। फूलपुर क्षेत्र के ढोकरी गांव के सामने स्थित रेलवे ट्रैक पर शनिवार की सुबह एक महिला का शव मिलने से हड़कंप मच गया। ग्रामीणों ने बताया कि महिला सुबह करीब साढ़े नौ बजे प्रयागराज से वाराणसी जाने वाली काशी एक्सप्रेस की चपेट में आ गई जिससे उसकी मौत हो गई। सूचना पर कोतवाली पुलिस के साथ पहुंची फूलपुर जीआरपी ने शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त करने की कोशिश की। फूलपुर पुलिस ने शव का पंचनामा कर उसे पीएम के लिए भेज दिया।

भारतगंज में हो रही ताबड़तोड़ चोरी

माण्डा। भारतगंज कस्बे में इस समय चोरों का खौफ है जिससे आम आदमी भय में जी रहा है अपने सामान की सुरक्षा के लिए लोगों को रात में नींद नहीं आ रही है। रोहित केशरी निवासी त्रिमुहानी भारतगंज ने अपनी गुहार भारतगंज चौकी पर लगाई है कि मेरा बगीचा व गौशाला सराफी मुहल्ला भारतगंज में है जहां पर नशेड़ियों का जमावड़ा लगा रहता है शुक्रवार की रात को गौशाला से ढाई सौ किलो लोहा चुरा लिया व दो दिन पूर्व रामदास केशरी के यहां से अस्सी किलो लोहे का दरवाजा चोरी हो गया है आये दिन चोरी की घटनाएं हो रही हैं इससे लोगों में भय व्याप्त है।

संपूर्ण समाधान दिवस पर निस्तारण न होने से मायूस लौटे फरियादी

संपूर्ण समाधान दिवस करछना में फरियादियों की समस्या सुनते प्रशासनिक अधिकारी

करछना। शनिवार को आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस अब महज एक दिखावा बनकर रह गया है समाधान दिवस पर अधिकारी आते तो जरूर हैं लेकिन उनके द्वारा दिए गए आदेशों का पूरी तरीके से अनुपालन नहीं हो पा रहा है जिसके चलते फरियादी लगातार तहसील और थाने का चक्कर लगा रहे हैं। सैकड़ों शिकायतें तो तहसील और थाने के कूड़ेदान में पड़ी रहती है मौजूदा प्रदेश की सरकार के निर्देश के बाद भी उच्च अधिकारियों द्वारा निर्देशित किए गए स्थानीय प्रशासन में मौजूद कर्मचारियों की उदासीनता के चलते फरियादी लगातार थाने और तहसील का चक्कर लगाने पर मजबूर है। अध्यक्षता कर रहे एसडीएम गणेश कनौजिया के समक्ष कुल 75 शिकायतें आई लेकिन मौके पर निस्तारण न होने से फरियादी मायूस होकर लौट गये।कुलहरिया के महेश वर्मा ने अपात्रो को आवास दिए जाने की शिकायत की। चनैनी के रामदेव पाल ने शिकायत की मकान के ऊपर से हाईवोल्टेज तार गया है जिससे खतरे के साये मे जीने को विवश है। अकोढ़ा के चितरजन सिंह ने शिकायत की है कि उनकी पैतृक भूमि पर दबगो द्वारा कब्जा से सबधित रही। इस मौके पर डीसीपी सौरभ दीक्षित, एसीपी अजीत सिंह चौहान, तहसीलदार रमेश पाडेय समेत विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

दुबई भेजने के नाम पर डेढ़ लाख रुपये हड़पे, अब पांच लाख रंगदारी की मांग

मऊआइमा। दुबई जाने का वीजा देने के नाम पर जालसाजों ने डेढ़ लाख रुपये ऐंठ लिए। अब पांच लाख रुपये रंगदारी मांगी जा रही है। न देने पर जान से मारने की धमकी भी दी गई। भुक्तभोगी ने तीन जाल साजों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा के ग्राम सराय टोडलमल उर्फ दांदूपुर निवासी अंसार अहमद पुत्र निसार अहमद का कहना है कि वह दुबई के लिए एजेंटों का नाम मोबाइल से सर्च कर रहा था तभी उन्हें कई नाम आए।अंसार अहमद का कहना है कि तीन लोगों ने उससे अपने बैंक एकाउंट में चार बार में डेढ़ लाख रुपया दुबई भेजने के लिए मांगा। और फिर पासपोर्ट स्टंप के लिए भी मांगवा लिया। जब काफी दिन गुजर गया तो अंसार ने फोन किया तो कहा कि पांच लाख रुपये और भेजो वरना जान से मरवा दूंगा। अंसार अहमद ने पासपोर्ट के लिए पासपोर्ट आफिस में शिकायत किया तो पासपोर्ट तो वापस आ गया। परन्तु पैसा नहीं आया तो अंसार अहमद ने मऊआइमा थाने में इमाद अहमद मुरादाबाद, नदीम लखनऊ, तथा कार्बन ट्रैवल एजेंसी के मालिक आदिल अब्दुल्ला निवासी गांधीनगर मूर्ती काम्प्लेक्स नियर बैंक ऑफ बड़ौदा रामपुर रोड मुरादाबाद के खिलाफ जालसाजी फ्राड ,अमानत में ख्यानत एव जान से मारने की धमकी देने आदि धाराओं में मऊआइमा थाने में मुकदमा दर्ज करा दिया है।

रेलवे ओवर ब्रिज पर काम कर रहा मजदूर हाई वोल्टेज की चपेट में आने से झुलसा, गंभीर

मजदूर को इलाज के लिए ले जाते लोग

ठेकेदार की घोर लापरवाही बिना सेफ्टी डिवाइस के चलते हुआ हादसा

करछना। ठेकेदार एवं संबंधित अधिकारियों की लापरवाही के चलते पचदेवरा में बन रहे रेलवे ओवरब्रिज में काम कर रहे युवक की हाई वोल्टेज करंट के चपेट में आ जाने के कारण शरीर का एक हिस्सा पूरी तरीके से झुलस गया युवक सोनभद्र जिले के रेणुकूट का रहने वाला बताया जा रहा है करछना थाने पर सूचना मिलने के बाद तत्काल थाना प्रभारी विश्वजीत सिंह अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और युवक को तत्काल एक नीजी प्राइवेट हॉस्पिटल में एडमिट करवाया गया संबंधित अधिकारियों से दुर्घटना के विषय में पूछा गया तो अधिकारियों ने किसी भी प्रकार की बात करने से मना कर दिया कोई भी सवाल पूछने पर हीला हवाली करते रहे वहीं देखा जाए ओवर ब्रिज में काम कर रहे वर्करों के पास किसी भी प्रकार की सेफ्टी डिवाइस उपलब्ध नहीं है मौत के साए में सारे वर्कर काम करते हैं।

चौथे दिन भी नहीं मिला ट्रैक्टर चालक का शव, घटनास्थल पर पहुंचे विधायक

कोरांव। बीते 4 दिन पूर्व कोरांव थाना क्षेत्र के चांदी गांव निवासी रूपेंद्र तिवारी उम्र 32 वर्ष पुत्र अमरनाथ तिवारी धरवारा गांव के पास ट्रैक्टर ट्राली सहित नदी में गिर गया था। 4 दिन तक लगातार एनडीआरएफ एवं पुलिस की टीम द्वारा शव को खोजा गया लेकिन चौथे दिन भी कोई सुराग नहीं लग सका। शनिवार को कोरांव विधायक राजमणि कोल घटनास्थल पर पहुंचे विधायक ने एनडीआरफ टीम एवं गोताखोरों से वार्ता की। इस दौरान उन्होंने तत्परता के साथ शव खोजने की कार्यवाही जारी रखने की बात कही। इस दौरान विधायक ने मामले में जिलाधिकारी एवं बाणसागर परियोजना के अधिकारियों से भी बात की। साथ ही पीड़ित परिजनों को धैर्य दिया। इस दौरान प्रमुख रुप से उप जिलाधिकारी मेजा विनोद कुमार पांडे पूर्व जिला अध्यक्ष शिवदत्त पटेल बबुआन द्विवेदी रामकृष्ण केसरी गोविंद मिश्रा शेरा कोल रामाश्रय शुक्ला के अलावा मृतक के परिजनों के साथ तमाम लोग मौजूद रहे। 4 दिन बीत जाने के बाद भी शव न मिलने पर मृतक के परिजन काफी आक्रोश जता रहे हैं। घटना को लेकर परिजनों में कोहराम मचा हुआ है। उल्लेखनीय है कि 4 दिन पूर्व कोरांव के चांदी गांव निवासी रूपेंद्र तिवारी अपने ट्रैक्टर ट्राली पर धान लादकर नैनी किसी मिलर के यहां पहुचाने जा रहा था। पुल के पास ट्राली में लदी धान की बोरिया ट्राली के नीचे गिर गयी थी जिससे ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पुल की रेलिंग तोड़ते हुए नदी में समा गया था।

महिला के आंख में मिर्ची पाउडर डाल कर दुराचार का प्रयास, मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। शौच के लिए गयी महिला के आंख में मिर्ची पाउडर डाल दिया गया और दुराचार की कोशिश की गई। महिला के पति ने युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी एक व्यक्ति का आरोप है कि उसकी पत्नी शौच के लिए गयी थी। जहां पहले से छिपे युवक ने अचानक आ कर आंख में मिर्ची पाउडर डाल दिया। और दुराचार की कोशिश करने लगा। महिला ने शोर मचाते हुए जब घर की ओर भागी तो युवक उसे मारा पीटा। महिला किसी तरह आबरू बचाते हुए घर आ कर सारी बात बताई। पति महिला को लेकर थाने पहुंचा जहां पुलिस ने मनोज कुमार पासी उर्फ टेडू पुत्र कुल्लू पासी के खिलाफ दुराचार का आसफल प्रयास का मुकदमा दर्ज कर आरोपी की तलाश में जुट गई है।

सप्ताह भर बाद खिली धूप, बाजारों में बढ़ी रौनक

शनिवार को खिली धूप के बाद बाजार में उमड़ी लोगों की भीड़

लालगोपालगंज। सप्ताहभर धूप खिलने तो बाजारों में रौनक लौट आई। शनिवार को दिनभर मौसम शुष्क और साफ बना रहा। धूप खिलने के बाद लोगों को कड़ाके की ठंड से काफी राहत मिली। दिन का तापमान 18.2 डिग्री व न्यूनतम 7 डिग्री तक दर्ज किया गया। शुक्रवार के मुकाबले शनिवार को रात्रि सुबह से ही तापमान तेजी से बढ़ता रहा। खिलखिलाती धूप के चलते ग्रामीण क्षेत्र के लोग घरों से बाहर निकले, इससे बाजारों में खासी भीड़ रही। शनिवार सुबह से ही मौसम साफ बना रहा। अल-सुबह पछिमी ठंड हवा चली और बाद में धूप खिलने पर हवा का प्रकोप खत्म हो गया। इससे पूर्व विगत कई दिनों से कड़ाके की सर्दी, गलन और कोहरे के कारण ठंड का प्रकोप बना रहा। काश्तकारों के अनुसार तेज धूप के चलते फसल व अन्य प्रकार की श्रेणियों के पौधों को फायदा पहुंचा है। धूप निकलने के बाद कई दिनों से घरों में दुबके लोग बाहर निकलकर धूप सेंकते नजर आए। वहीं विगत दिनों से सुस्त पड़े बाजारों में भी रौनक लौटी। लालगोपालगंज कस्बा में सप्ताहिक बाजार होने के कारण ग्राहकों की खासी भीड़ देखने को मिली। खासकर फुटपाथ पर दुकान सजाए व्यापारियों के यहां ग्राहकों की भीड़ लगी रही। हालांकि शाम होते ही ठंड ने अपना रूप धारण कर लिया था। अंधेरा होने से पहले बाजार में सन्नाटा छा गया। कृषि वैज्ञानिक डॉ हिमांशु द्विवेदी ने बताया कि गलन कोहरा के बाद धूप खिलना व हवा चलने से पौधों की वृद्धि एवं विकास निरंतर होती रहेगी।

सेंटपिटर्स स्कूल के छात्र का नवोदय विद्यालय में चयन, प्रिंसिपल ने दी बधाई

शौर्य प्रताप सिंह

मेजा। क्षेत्र के छतवा सिरसा स्थित सेंट पीटर्स में पढ़ने वाले छात्र शौर्य प्रताप सिंह का नवोदय विद्यालय में कक्षा 6 के लिए चयन हो गया । नवोदय विद्यालय में चयन से छात्र के परिवार व सेंट पीटर्स स्कूल में खुशी का माहौल है। गौरतलब हो कि शौर्य प्रताप सिंह पुत्र विनय प्रताप सिंह निवासी ग्राम ओनौर, मेजा क्षेत्र के सिरसा स्थित सेंटपिटर्स स्कूल में पढ़ता था। वह अप्रैल 2022 में नवोदय विद्यालय में कक्षा 6 में नामांकन के लिए परीक्षा दिया था। दिसम्बर में उसका रिजल्ट घोषित हुआ जिसमें उसका चयन हो गया। चयन पर शिवानी खेरा शोनी प्रिंसिपल और ऋषभ शोनी ने छात्र शौर्य प्रताप सिंह के परिवार को बधाई दिया है।

गांव की समस्या का गांव में ही होगा समाधान : बीडीओ

चौपाल में उपस्थित लोग

रतेवरा। कोरांव तहसील क्षेत्र अंतर्गत ग्राम सभा भोगन में ग्राम चौपाल का आयोजन किया गया इसमें मुख्य रूप से वीडियो मुकेश कुमार व ग्राम विकास अधिकारी आनंद मोहन सिंह व ब्लॉक के कर्मचारी राजीव कुमार तथा अन्य संभ्रांत व गांव के लोग मौजूद रहे पंचायत भवन में मुख्य विकास अधिकारी मुकेश कुमार ने बताया कि शासन द्वारा जनसमस्याओं के निराकरण एवं पारदर्शिता को और प्रभावी बनाने के लिए प्रत्येक विकास खण्ड के ग्राम पंचायतों में प्रत्येक शुक्रवार को ग्राम चौपाल (गाँव की समस्या, गाँव में समाधान) का आयोजन किये जाने के निर्देश दिये गये है। मुख्य विकास अधिकारी ने बताया कि आगामी दिनों तक ग्राम चौपाल का आयोजन पूर्वान्ह 11 बजे से चौपाल की समाप्ति तक होगा। सम्बन्धित खण्ड विकास अधिकारियों को ग्राम चौपाल का व्यापक प्रचार-प्रसार कराने के निर्देश दिये गये है तथा ग्राम चौपाल के 05 दिन पूर्व से ही उस ग्राम पंचायत में स्वच्छता साफ सफाई अभियान जन सहयोग से चलाया जायेगा एवं जनप्रतिनिधियो को भी आमन्त्रित किया जायेगा। मुख्य विकास अधिकारी ने बताया कि ग्राम चौपाल की शुरुआत ग्राम पंचायत में कराये गये कार्यों के निरीक्षण से होगी एवं विभिन्न योजनाओं का सत्यापन भी किया जाएगा तथा आयुष्मान कार्ड, किसान सम्मान निधि, प्राकृतिक एवं आर्गेनिक खेती, हर-घर- नल व सुशासन जैसे महत्वपूर्ण विषयो पर चर्चा की जायेगी। ग्राम चौपाल के आयोजन के एक माह बाद चौपाल में प्रतिभाग करने वाले अधिकारी उसी ग्राम पंचायत में जाकर समस्या के निराकरण पर फीडबैक प्राप्त करेंगे। सम्बन्धित लेखपाल एवं राजस्व निरीक्षक भी चौपाल में उपस्थित रहकर चकमार्ग व सार्वजनिक भूमि आदि की समस्याओं का निराकरण करेंगे।

कार्यक्रम में मंचासीन अतिथिगण

सफाई कर्मचारियों को सम्मानित कर मनाया गया महानगर अध्यक्ष का जन्मदिन

नैनी। नैनी मण्डल अनु. मोर्चा भाजपा प्रयागराज के तत्वाधान में इंदलपुर गंगोत्री नगर डांडी वार्ड नम्बर 1 महेवा में नैनी जोन 5 के सफाई कर्मचारियों को सम्मानित कर के महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। साथ ही सफाई कर्मचारियों को कम्बल व अन्य उपहार वितरित किये गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गणेश केसरवानी महानगर अध्यक्ष, विशिष्ट अतिथि रजेश सोनकर महानगर अध्यक्ष अनु. मोर्चा भाजपा ने दीप प्रज्वलित कर के कार्यक्रम की शुरूआत की। ततपश्चात मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि का डा. ओम प्रकाश आर्य वार्ड 1 (संभावित प्रत्याशी) ने स्वागत किया। इस अवसर पर महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी ने भाजपा की उपलब्धियों को बताया साथ ही ट्रिपल इंजन की सरकार बनाने में आम जनमानस से अपील की। कार्यक्रम का संचालन रणविजय सिंह डब्बू एडवोकेट ने किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से नरसिंह पूर्व महानगर अध्यक्ष युवा मोर्चा, अजय हेला, राज कुमार भारतीय, दिनेश कौनजिया, मनीष भारतीय, विक्रम, दिलीप केसरवानी नैनी मंडल अध्यक्ष, सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

अधिवक्ता की दुर्घटना के बाद इलाज के दौरान मौत

माण्डा। मांडा थाना क्षेत्र के चकडीहा निवासी बालकृष्ण पांडेय (46) इलाहाबाद हाईकोर्ट में अधिवक्ता थे। वह परिवार के साथ शहर स्थित निजी मकान में रहते थे। बीते शनिवार 31 दिसंबर 2022 की दोपहर घर से बाइक से शहर लौट रहे थे। इस दौरान क्षेत्र के आंधी गांव स्थित प्रयागराज-मीरजापुर राजमार्ग पर तेज रफ्तार डंपर ने टक्कर मारते हुए भाग निकली। दुर्घटना में वह बुरी तरह घायल हो गए और बाइक भी क्षतिग्रस्त हो गई। स्थानीय लोगों की मदद से उन्हें नजदीकी अस्पताल में इलाज हेतु दाखिल कराया गया। सूचना पर पहुँचें परिवार जन उन्हें शहर के निजी अस्पताल भर्ती कराया इलाज के दौरान 5 जनवरी 2023 बृहस्पतिवार की रात अधिवक्ता की मौत हो गई। इससे परिजनों में कोहराम मच गया है। उक्त घटना को लेकर मृतक की पत्नी ममता, बेटे अमन व रमन और बेटी शिवानी का रो रो कर बुरा हाल हो गया है। उक्त प्रकरण में दिघिया चौकी प्रभारी आशीष सिंह ने बताया कि मृतक के परिजनों द्वारा अभी तक तहरीर नहीं मिली है। तहरीर मिलने पर आवश्यक कार्यवाही की जाएगी ।

जंघई जंक्शन : नवीनीकरण सौंदर्यीकरण कार्यों में हो रहा जमकर घटिया कार्य

जंघई। सरकारी धन का दुरुपयोग अगर आपको देखना है तो जंघई जंक्शन पर बन रहे भवन, स्टैंड, आरक्षण केंद्र, मुख्य गेट, प्लेटफार्म आदि को देख सकते हैं जहां पर मानक के विपरित कार्य हो रहा है सीमेंट, बालू, ईंट, गिट्टी, सरिया आदि सभी सामान थर्ड क्वालिटी का लगाया जा रहा है जिससे आम नागरिकों में आक्रोश व्याप्त है।इस संदर्भ में डीआरएम लखनऊ से वार्ता की गई तो उन्होंने अनभिज्ञता जताते हुए जांच करवाने की बात कही। जंघई जंक्शन का कायाकल्प करने हेतु लगभग 90 करोड़ रुपए धन केंद्र सरकार द्वारा आवंटित किया गया है। जंघई जंक्शन प्रयागराज, भदोही की सीमा पर जौनपुर जनपद में स्थित है यहां से प्रतिदिन हजारों यात्री जीवकोपार्जन हेतु मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता, गुजरात एवं देश प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में आवागमन करते हैं। जंघई जंक्शन की मासिक आय लगभग 3 करोड़ है इसके बावजूद स्टेशन पर सौंदर्यीकरण नवीनीकरण कार्य में धन का दुरुपयोग किया जा रहा है जिससे आम जनमानस में घोर निराशा है कि बहुप्रतिक्षित नवीनीकरण कार्य में पारदर्शिता नहीं है और निर्माण कार्य मानक के विपरित हो रहा है।

मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म : विधायक गुरु प्रसाद मौर्य

लालगोपालगंज। शहीद बाबूलाल पटेल मेमोरियल समिति मलाक बलाऊ के तत्वावधान में शहीद बाबूलाल पटेल की 10वीं पुंयतिथि पर गरीब, असहाय, दिव्यांग, जरूरतमंद, विधवा महिलाओं को कंबल वितरित किया गया। अध्यक्षता समिति अध्यक्ष राजेंद्र सिंह पटेल और संचालन इंजीनियर आशीष पटेल ने किया।

मुख्य अतिथि फाफामऊ विधायक गुरु प्रसाद मौर्य ने संबोधित करते हुए कहा कि बाबूलाल पटेल जो कि छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में नक्सलियों से लोहा लेते हुए शहीद हो गए थे। उन्हीं की याद में प्रत्येक वर्ष उनकी पुंयतिथि पर गरीबों दिव्यांगों विधवाओं को कंबल वितरित किया जाता है। अपना दल (एस) के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सदस्य पिछड़ा आयोग जवाहर लाल पटेल ने कहा ऐसे ही लोगों की सहायता करने वाले लोग ही अच्छे कर्मों के भागीदार होते हैं। कार्यक्रम को अतिविशिष्ट अतिथि भाजपा नेता जगदीश पटेल, एडवोकेट आशीष पटेल आदि लोगों ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर सुभाष पटेल, सुनील पटेल, प्रधान परवेज पटेल, प्रधान कृष्णा पाल शिवपार, धनराज पटेल, जंगीलाल मौर्य, रामू, कुलदीप सिंह, डा. सुरेन्द्र पटेल, कृष्ण बाबू, उमा शिव, शिवपती, गुज्जर देवी, शांती देवी, अर्चना पटेल, राजकली आदि लोग उपस्थित रहे।

शहीद बाबूलाल पटेल की 10वीं पुंयतिथि पर असहायों को कंबल वितरित करते हुए

शहर कोतवाल अमर सिंह रघुवंशी के निधन पर जताया शोक

प्रयागराज। राष्ट्रीय उद्योग व्यापार मंडल राष्ट्रीय युवा व्यापार मंडल राष्ट्रीय महिला व्यापार मंडल ने शहर कोतवाली में तैनात पुलिस इस्पेक्टर अमर सिंह रघुवंशी जी का सड़क दुर्घटना में निधन पर गहरा शोक प्रकट किया है शोक प्रकट करते हुए राष्ट्रीय उद्योग व्यापार मंडल के अध्यक्ष रमेश केसरवानी ने व्यापारियों को बताया कि इस्पेक्टर कोतवाली अमर सिंह रघुवंशी जी का व्यापारियों के ऊपर पूर्ण सहयोग रहता था उन्होंने हमेशा व्यापारियों के हित में कार्य किया है ऐसे इस्पेक्टर को कभी व्यापारी भुला नहीं पाएंगे शोक प्रकट करने वालों में सैफ अहमद, संजय कपूर गप्पू भैया, फिरोज अहमद, रिजवान अहमद, मोहम्मद आसिफ, नितिन टंडन, नितिन अग्रहरी, दीपू सेठ, इरशाद अहमद, हरेंद्र सिंह लाली सरदार, बृजेश चौरसिया, आनंद गुप्ता, अभिषेक गुप्ता, रुपाली अवस्थी, लक्ष्मी बहुगुणा, तनु केसरवानी, माया द्विवेदी, मुनमुन अधिकारी, रंजना साहू, ज्योति साहू, सविता साहू, संजू गुप्ता, के अलावा तमाम पदाधिकारी ने गहरा शोक प्रकट किया।

निबैया में नौ दिवसीय भागवत कथा का शुभारंभ

कलश यात्रा में शामिल नीलम करवरिया साथ मे ओपी शुक्ला

मेजा। क्षेत्र के निबैया गाँव में नौ दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानामृत ज्ञानयज्ञ का शुभारंभ शनिवार को कलश यात्रा व विधिवत हवन पूजन के साथ हुआ। शुभारंभ अवसर पर कलश यात्रा में पूर्व विधायक नीलम करवरिया शामिल हुई। भगवत कथा के आयोजक ओपी शुक्ल व विकास चंद्र शुक्ल ने बताया कि कथा में व्यास के रूप में आचार्य शंभुशरण महाराज उपस्थित रहेंगे। ओपी शुक्ल ने बताया कि कथा प्रति दिन दोपहर 1 बजे से शाम 5 बजे तक चलेगी। कथा के मुख्य यजमान पंडित लालजी शुक्ल व सावित्री शुक्ल और श्यामजी शुक्ल व माला शुक्ल रहेंगी। शुक्ल परिवार ने क्षेत्र के लोगों से अपील किया कि वह प्रति दिन आकर राम कथा का आनंद लें और अपने जीवन को धन्य बनाएं। पूर्व विधायक के साथ मुख्य रूप से राहुल द्विवेदी, धीरू शुक्ला, मुंदरी मिश्रा पूर्व प्रधान, मनीष पांडेय, अवनीश दुबे, राजकुमार शुक्ल, अशोक कुमार शुक्ला, विरेन्द्र शुक्ला, अनील शुक्ला, भी दुबे, पिंटू तिवारी, विक्की शुक्ल, सुरज शुक्ला, बब्लू परसिया, पुष्कर तिवारी, राजीव मणिनाथ तिवारी मंडल महामंत्री भाजपा व श्लोक शुक्ल रहे।

इंस्पेक्टर के मौत की खबर घर पहुंचते ही बेहोश हुईं उनकी पत्नी व गमजदा परिजन

प्रयागराज

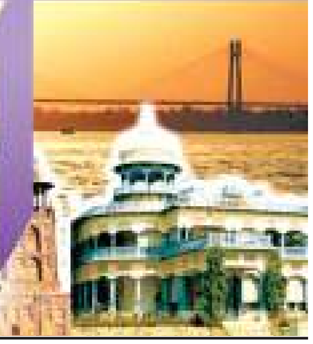

मौसम

अधिकतम :	19.00
न्यूनतम :	5.00
सूर्योदय :	06.50
सूर्यास्त :	05.27

निःशुल्क कंबल व स्वास्थ्य शिविर का आयोजन संपन्न

थरवई। विकासखंड सहसों के तिवारीपुर गांव में निशुल्क कंबल वितरण एवं स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आयोजक मनोज तिवारी एवं क्षेत्र पंचायत सदस्य मनीष तिवारी एडवोकेट विपिन पाण्डेय एडवोकेट ने मुख्य अतिथि सहित सभी अतिथियों का प्रतीक चिन्ह एवं अंगवस्त्रम तथा माल्यार्पण कर स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने संबोधित करते हुए कहा समाज में समरसता लाने के लिए गुड़ तथा तिल का उदाहरण देते हुए कहा कि सभी को एक साथ चलना होगा तभी परिणाम अच्छा मिलेगा।

ट्रक की टक्कर से इंस्पेक्टर अमर सिंह रघुवंशी की मौत

हादसा

प्रयागराज से राय बरेली गैंगस्टर कोर्ट में देने जा रहे थे गवाही, प्रतापगढ़ चिलबिला के पास हुआ हादसा

प्रयागराज। कमिश्नरेट थाना कोतवाली में तैनात इंस्पेक्टर अमर सिंह रघुवंशी का शनिवार की सुबह 8:30 बजे प्रतापगढ़ के चिलबिला मुसाफिरखाना के पास सड़क हादसे में मौत हो गई । वह अपनी कार से रायबरेली गैंगस्टर कोर्ट में गवाही देने जा रहे थे। तभी प्रतापगढ़ की ओर से आ रही तेज रफ्तार ट्रक से उनकी कार की जबरदस्त टक्कर हो गई जिसमें कार के परखच्चे उड़ गए। जबकि ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गई। इस सड़क हादसे में प्रयागराज कमिश्नर रेट में तैनात इंस्पेक्टर अमर सिंह रघुवंशी की मौके पर ही मौत हो गई। हादसा अंतू कोतवाली इलाके के कल्याणपुर हाईवे पर हुआ है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार तेज रफ्तार ट्रक और कार में इतनी जोरदार टक्कर

हादसे के बाद क्षतिग्रस्त हुई कार में फंसा इंस्पेक्टर का शव

हुई कि कार के परखच्चे उड़ गए। गैस कटर से दरवाजे को काटा गया वहीं ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गई। इस दौरान मौका पाकर ट्रक ड्राइवर फरार हो गया। वहीं कार में सवार इंस्पेक्टर की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। आसपास के लोगों ने उनके शव को निकालने का पूरा प्रयास किया लेकिन वह सफल नहीं हुए। जिसके बाद सूचना पुलिस को आला अफसरों को मिली। मौके पर पहुंचे पुलिस के अधिकारियों ने गैस कटर के माध्यम से कार के दरवाजे को काटा। पुलिस ने ट्रक को कब्जे में लिया शव को किसी तरीके से बाहर निकाला गया। वह किसी कार्य से रायबरेली जा रहे थे।

मामले में अंतु एसओ प्रदीप ने बताया, शव को अपने कब्जे में ले लिया है। इसकी सूचना मृतक के परिजनों को दे दी गई है। वहीं ड्राइवर की तलाश की जा रही है। जबकि ट्रक को भी पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया है। घंटों बाद हो पाई उनकी पहचान,इंस्पेक्टर अमर सिंह रघुवंशी अपनी कार से रायबरेली गैंगस्टर कोर्ट

इंस्पेक्टर अमर सिंह रघुवंशी (फाइल फोटो)

में एक मुकदमे के साक्ष्य गवाही के लिए जा रहे थे। प्रतापगढ़ के चिलबिला-मुसाफिरखाना हाईवे पर पारा मोड़ के पास शनिवार सुबह करीब 8:30 बजे उनकी कार को एक तेज रफ्तार ट्रक वाले ने जोरदार टक्कर मार दी। कार में ही फंसे कोतवाल अमर सिंह को निकालने के लिए गैस कटर का प्रयोग किया गया। कार का गेट काटकर उनकी बॉडी को निकाला गया। घंटों बाद उनकी पहचान हो पाई। परिजन को सूचना मिली तो परिवार में छाया मातम माहौल इंस्पेक्टर मूल रूप से अमेठी के रहने वाले थे। अमर सिंह रघुवंशी, पत्नी और उनके 2 बच्चे लखनऊ में रहते हैं। अमर सिंह रघुवंशी फतेहपुर से ट्रांसफर होकर प्रयागराज आए थे। वो वर्तमान में प्रयागराज नगर कोतवाली के प्रभारी थे। काफी तेज तर्रार और ईमानदार अफसरों में गिने जाने वाले अमर सिंह का आम जन से जुड़ाव बेहद गहरा था। मामले में एसीपी नगर कोतवाली सत्येंद्र कुमार तिवारी ने बताया, कोतवाल का शव प्रतापगढ़ पोस्टमार्टम हाउस आ गया है। परिवार वालों को सूचना दे दी गई है। वो लोग आ रहे हैं उनके आने के बाद पोस्टमार्टम कराया जाएगा। एक कर्मनिष्ठ इंस्पेक्टर की हादसे में मौत से पुलिस महकमे में शोक है। उनकी मौत से परिवार में मातम छा गया है। अमर सिंह रघुवंशी 3 महीने से प्रयागराज में तैनात हैं। इसके पहले फतेहपुर, रायबरेली और लखीमपुर खीरी जनपदों में भी तैनात रहे हैं। इनकी प्रयागराज में तैनाती करीब 6 महीने पहले हुई थी। प्रयागराज से प्रतापगढ़ होकर अमेठी के रास्ते रायबरेली जा रहे थे। 1990 में पुलिस विभाग में इनकी तैनाती एसआई पद पर हुई थी। पिता की जगह पाए थे पुलिस विभाग में नौकरी इनके पिता स्वर्गीय हौसला बहादुर रघुवंशी प्रयागराज के हंडिया थाने में कोतवाल के पद पर तैनात थे।

अमर सिंह रघुवंशी के आकस्मिक निधन पर व्यापार मंडल ने जताया शोक

शोक व्यक्त करते व्यापारीगण

प्रयागराज। कोतवाली इंस्पेक्टर अमर सिंह रघुवंशी के आकस्मिक निधन पर उपरांत एक शोक सभा का आयोजन व्यापार मंडल ने शोक सभा आयोजित की। व्यापारियों के साथ साथ पुलिस प्रशासन के अधिकारी और जवान भी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के दौरान जिलाध्यक्ष सुशांत केसरवानी उपस्थित व्यापारियों और अधिकारियों को बताया कि स्वर्गीय अमर सिंह रघुवंशी जी का इस तरह आकस्मिक हमारे बीच से जाना बहुत ही दुखद समाचार है आज इससे व्यापारी समाज बहुत ज्यादा दुखी है आज उनके व्यक्तित्व का ही नतीजा है कि उनके ना रहने के बावजूद उनको श्रद्धांजलि देने के लिए इतनी बड़ी संख्या में व्यापारी समुदाय ना सिर्फ नगर से बल्कि गंगा पार जमुना पार से भी यहां पर आया हुआ है। चौक अध्यक्ष मुसाब खान ने कहा कि हमको कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि वह इंस्पेक्टर हैं वह हमेशा एक भाई की तरह हम लोगों का सहयोग देते रहे हैं आज उनका जाना एक अपूरणीय क्षति है। महानगर अध्यक्ष महिला सुनीता चोपड़ा उनके व्यक्तित्व के बारे में बोलते बोलते इतनी भाव विभोर हो गई कि उनकी आंख से आंसू गिरने लगे और वह अपना व्यक्तत्तव ही पुरा न कर सकी। चौक महामंत्री संजीव मेहरोत्रा, महानगर कार्यकारिणी सदस्य लाली सरदार, बृजेश चौरसिया, अनु केसरवानी, शुभम शर्मा, हर्षित कपूर, बबलू जारी, रतन केसरवानी, कौशल ने कोतवाल साहब के चित्र पर माल्यार्पण करके अपनी श्रद्धांजलि अर्पित किया कार्यक्रम के अंत में सभी व्यापारियों और अधिकारियों ने 2 मिनट के मौन रख कर श्री हरि विष्णु से प्रार्थना किया कि मृत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे और उनके परिवार के साथ साथ व्यापारियों और अधिकारियों को इस दुख को सहने की शक्ति प्रदान करें आज शोक सभा में प्रमुख रूप से कार्यवाहक इंस्पेक्टर मुदित राय घंटाघर चौकी इंचार्ज, सुमित श्रीवास्तव सूरजकुंड चौकी इंचार्ज, कृष्णा मौर्या बादशाही मंडी चौकी इंचार्ज, आशीष बोस, जिला प्रभारी राजकुमार केसरवानी, महिला जिला अध्यक्ष रोशनी अग्रवाल, जिला महामंत्री सुशील शुक्ला, सौरभ केसरवानी, शरद केसरवानी, नरेंद्र वर्मा, पंडित रोशन उपाध्याय चाणक्य गुरु) आदि रहे।

संक्षेप

सावित्रीबाई फुले जयंती पर युवा विचार मंच ने ठंड में वितरित किया कम्बल

माण्डा। युवा विचार मंच सामाजिक संगठन के नेतृत्व में गुरुवार को मांडा खास में भारत की प्रथम महिला शिक्षिका राष्ट्रमाता नारी सशक्तिकरण की मजबूत मिसाल सावित्रीबाई फुले जी का जन्म उत्सव समारोह बड़े ही धूमधाम मनाया गया। इस कार्यक्रम में आर्थिक रूप से कमजोर विधवा बुजुर्ग बेसहारा गरीब महिलाओं को बड़े पैमाने पर कंबल का वितरण किया गया।इस कार्यक्रम में सहयोग देने वाले सभी युवा विचार मंच की टीम द्वारा मांडा खास के बुजुर्गों व बेसहारा महिलाओं को कंबल का वितरण किया गया। इस अवसर पर युवा विचार मंच के अध्यक्ष सिद्धार्थ कुशवाहा, गोपाल दास गुप्ता, रामसुख कुशवाहा, अमरनाथ गुप्ता, जय प्रकाश मौर्या ओमप्रकाश मौर्य, हरि कृष्ण कुशवाहा, रामबाबू बीज भंडार, दया मौर्य, गेदा देवी तथा अन्य गांव के संभ्रांत लोग मौजूद रहें ।

रूपेश का पता न चलना परिवार के लिए पीड़ादायक स्थिति : योगेश शुक्ल

मेजा। तीन दिन पूर्व कोहडार घाट पुल से धान लदे ट्रैक्टर ट्राली के नदी में गिरने और चालक रूपेंद्र तिवारी का अभी तक कोई पता न लगने पर भाजपा के वरिष्ठ नेता योगेश शुक्ल ने गहरा दुख व्यक्त किया है, योगेश शुक्ल दुर्घटना की जानकारी मिलने पर घटना स्थल पर विगत दिनों तत्काल पहुंचे थे और शोक में डूबे परिवार के सदस्यो को सांत्वना दिया था । योगेश शुक्ल ने बताया कि क्षेत्रीय जनता, स्थानीय प्रशासन, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ,और गोताखोर के अथक प्रयास के बावजूद दुर्भाग्य से अभी तक रूपेंद्र तिवारी का कोई पता नही लगाया जा सका। उन्होंने कहा कि यह स्थिति पीड़ित परिवार तथा सुभचिंतको के लिए अत्यंत पीड़ा दायक है। योगेश शुक्ल ने कहा कि जिले के उच्च अधिकारियों से आग्रह किया है कि आधुनिक उपकरणों की सहायता से एनडीआरएफ के सर्च ऑपरेशन को और गति दिया जाय तथा खोज का दायरा बढ़ाया जाए। गौरतलब हो बुधबार को कोरांव के चांदी गाँव निवासी रूपेश तिवारी बुधबार को ट्रैक्टर से धान लादकर नैनी जा रहा था कोहड़ार में करछना रोड पर बने पुल पर बाइक सवार को बचाने के प्रयास में ट्रैक्टर ट्राली सहित रूपेश नदी में गिर गया था जिसका आज तक पता नहीं चल पाया है । उसी दिन घटना की जानकारी पर भाजपा नेता तत्काल घटना स्थल पर पहुंचे थे ।

किसानों की आय बढ़ाने में मिलकर कार्य करेंगे शुआट्स और आईआईएम इंदौर

नैनी। सैम हिग्गिनबॉटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स) और आईआईएम इंदौर ने एग्री बिजनेस क्षेत्र में जवाइंट सर्टिफिकेशन कोर्स शुरू करने और किसानों की आय बढ़ाने के सरकार के सपने को साकार करने के लिए एक ऐतिहासिक समझौते (MOU) पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता किसानों की आय बढ़ाने के सरकार के सपने को साकार करने में मददगार होने के साथ-साथ एग्री-बिज्नेस क्षेत्र में शोध कर रहे छात्रों, वैज्ञानिकों के लिए भी फायदेमंद होगा और इस इसके परिणामों से कृषक समुदाय को दूरगामी लाभ होंगे। शुआट्स के प्रति कुलपति (शैक्षिक) प्रो जोनाथन ए लाल और निदेशक आईआईएम प्रोफेसर हिमांशु राय ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। प्रो जोनाथन ए लाल ने बताया कि टडव के अंतर्गत दोनो संस्थाए साथ मिलकर एग्री-बिज्नेस के क्षेत्र में जवाइंट सर्टिफि केट कोर्स करेंगी। इसके अंतर्गत उद्यमिता, रीसर्च और कन्सल्टेंसी प्रोजेक्ट पर एक साथ काम करेंगे और शुआट्स के छात्रों को आईआईएम इंदौर में इंटर्नशिप करने का भी अवसर मिलेगा। किसी भी कृषि विश्वविद्यालय के साथ आईआईएम इंदौर का यह पहला एमओयू है। प्रो जोनाथन ने इस बात पर भी जोर दिया कि समझौता ज्ञापन विश्वविद्यालय के आदर्श वाक्य ह्लभूमि की सेवा करो और भूखे को भोजनह्व के अनुरूप है। इस समझौते (MOU) पर हस्ताक्षर के दौरान प्रोफेसर स्टीफन दास, प्रोफेसर भवानी शंकर, डॉ वैदुर्य प्रताप साही और नवीन कृष्ण राय भी उपस्थित थे।

समाजसेवी ने जरूरतमंदों को किया कंबल वितरण

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के बरेठी स्थित गुंजन सर्विस सेंटर पर समाजसेवी नागेंद्र उर्फ चिंचू द्वारा कड़ाके की ठंड से बचने के लिए सैकड़ो जरूरतमंदों को कंबल का वितरण किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा के भदोही सांसद रमेश चंद्र बिंद रहे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में फूलपुर विधायक प्रवीण पटेल व थानाध्यक्ष उतराव श्रवण कुमार रहे। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि ठंड से कोई भी जनहानि नहीं होनी चाहिए। राहत पहुंचाने के उद्देश्य समाजसेवी द्वारा कंबल का वितरण करना सराहनीय कार्य है। कार्यक्रम में आए कवि कार धनंजय शाश्वत, लाल जी देहाती, अजय प्रेमी, आमीन नाजा व अमित आभास आदि ने अपने कविता के माध्यम से लोगों को लोटपोट कर दिया। उक्त अवसर पर विश्व गौरव, ध्यान सिंह, कृष्ण राज सिंह, आशीष सिंह, प्रवीण पांडेय,राजन, प्रवीण मास्टर, सोहित, अतुल, हितेश सिंह, पंकज सिंह, गणेश आदि लोग मौजूद रहे।

सभी विभाग जागरूकता कार्यक्रम चलायेंगे : पुलिस कमिश्नर

निर्देश

सड़क सुरक्षा कार्यक्रम को स्वीप कार्यक्रम के तहत चलाया जायेगा : जिलाधिकारी

हॉट स्पॉट क्षेत्रों को चिन्हित कर उस पर कमेटी के द्वारा एक सप्ताह में रिपोर्ट देने के दिए निर्देश

स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम एवं स्कूली बसों की फिटनेस चेक किये जाने के दिए निर्देश

बैठक की अध्यक्षता करते पुलिस आयुक्त व जिलाधिकारी

प्रयागराज। पुलिस आयुक्त रमित शर्मा एवं जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में शनिवार को संगम सभागार में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में पुलिस आयुक्त रमित शर्मा ने कहा कि सभी विभाग जागरूकता कार्यक्रम चलायेंगे, जिससे कि आमजनमानस को सड़क सुरक्षा के नियमों के बारे में जानकारी हो और वाहन चलाते समय नियमों का पालन करते हुए सावधानी बरते। उन्होंने सड़क सुरक्षा के निमयों के बारे में लोगो को जानकारी दिए जाने हेतु होर्डिंग लगाये जाने सहित अन्य जागरूक अभियान चलाये जाने के लिए कहा है। अवैध बस अण्डो के संचालन पर रोक कड़ी निगरानी रखी जाये तथा ऐसे लोगो के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जाये। कोई भी वाहन चालक गाड़ी चलाते समय मोबाइल का इस्तेमाल न करें तथा ओवर लोडिंग पर भी अंकुश लगाये जाने के निर्देश दिये है। उन्होंने निर्धारित मानक की सीमा से अधिक तेज रफ्तार से गाड़ी चलाने वालो के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई करने के लिए कहा है। उन्होंने कहा है कि जो भी हॉट-स्पाट क्षेत्र है, उसके आस-पास एम्बुलेंस की तैनाती सुनिश्चित किए जाने के साथ-साथ नजदीक के अस्पतालों के बारे में जानकारी हेतु साइनेज लगाये जाने के लिए कहा है, जिससे कि एक्सीडेंट के समय आसानी से समुचित इलाज हो सके।

जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री ने जनपद में विगत साल घटित दुर्घटनाओं की समीक्षा करते हुए कहा है कि पुलिस विभाग, परिवहन विभाग सहित सभी अन्य विभागों को जो दायित्व दिया गया है, उसका ठीक ढंग से निर्वहन सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि जहां पर भी ज्यादा एक्सीडेंट हुए है, उन स्थलों को चिन्हित कर उस पर ध्यान दिया जाये कि क्या कारण है कि ज्यादा एक्सीडेंट हो रहे हैं तथा इसको रोकने के लिए बेहतर से बेहतर क्या उपाय किये जा सकते है, उस पर कार्य किया जाये। हण्डिया रोड़ पर एक्सीडेंट की समीक्षा में पीडब्लूडी के अधिशाषी अभियंता सी0डी0-3 अजय गोयल तथा सहायक अभियंता विजय कुमार के बैठक में बिना कारण अनुपस्थित पाये जाने पर जिलाधिकारी ने उनका वेतन रोकने के निर्देश दिए है। उन्होंने टी-प्वाइण्ट, साइनेज सहित अन्य सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के निर्देश दिये है तथा सड़क सुरक्षा समिति कार्यक्रम को योजनाबद्ध तरीके से स्वीप कार्यक्रम के तहत चलाये जाने के निर्देश दिये है। इसके अन्तर्गत रैली, पोस्टर सहित अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने जिला विद्यालय निरीक्षक एवं बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया है कि प्रत्येक स्कूलों में सड़क सुरक्षा नियमों के बारे में जागरूकता अभियान चलाया जाये। स्कूलों की बसों में फिटनेस सहित सभी मूलभूत आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाये। जिलाधिकारी ने कहा कि हॉट स्पॉट क्षेत्रों के तीन-चार स्थानों को चिन्हित कर एक कमेटी के द्वारा एक सप्ताह में रिपोर्ट तैयार किए जाने के भी निर्देश दिये है। उन्होंने रास्ते में पड़ने वाले पेढ़ो. के टहनियों की भी छटाई कराये जाने के लिए डीएफओ को कहा है तथा नगर निगम द्वारा जो भी स्ट्रीट लाइटे है, उसको चेक करके खराब स्ट्रीट लाइटों को ठीक कराये जाने के निर्देश दिये है। जिलाधिकारी ने कहा कि जिस भी विभाग की जो सड़के है, वे ये सुनिश्चित करें कि जहां पर भी कट है, उसकी वास्तव में आवश्यकता है कि नहीं, तो उसे बंद कर दें। उन्होंने कहा कि जिन विभाग की जितनी सड़के है, वे स्वयं आंकलन करके रिपोर्ट एक सप्ताह में देंगे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक क्षेत्रों में राजकीय हॉस्पिटल और निजी हॉस्पिटल की सूची बनाकर उस पर कार्यशाला कराया जाये। जिलाधिकारी ने जाम वाले स्थानों को चिन्हित कर उसपर कमेटी द्वारा 10 दिनों में रिपोर्ट तैयार किये जाने को कहा है। इस अवसर पर डीएफओ महावीर कौंजलगी, सचिव विकास प्राधिकरण अजित सिंह, एडीएम सिटी मदन कुमार, एस0पी0 ट्रैफिक एआरटीओ सहित सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

संत महात्माओं के चरण स्पर्श करने से लोग होते हैं दीर्घायु : स्वामी परमहंस प्रभाकर जी महाराज

प्रयागराज। गायत्री चैरिटेबल संस्थान की ओर से अन्नपूर्णा मार्ग स्थित शिविर में शनिवार को स्वामी प्रभाकर जी महाराज शिष्यों को बताते हुए कहा कि संत महात्माओं के चरण स्पर्श से लोगों की उम्र लंबी होती है। इस संदर्भ में स्वामी प्रभाकर जी महाराज ने एक कथा भी सुनाई जिसमें एक बालक की उम्र मात्र 7 वर्ष थी उसके घर वाले बच्चे की उम्र को लेकर काफी चिंतित थे । तभी किसी सिद्ध पुरुष ने बताया कि इस रास्ते से जितने भी संत महात्मा गुजर रहे हो सभी का चरण स्पर्श करो। उस लड़के की मौत के दिन भी करीब आ रही थी ।7 वर्ष पूरा होने में कुछ ही दिन बचे

थे। हर रोज जो भी उधर से गुजरता बालक चरण छूता तभी किसी संत पुरुष की नजर पड़ी उन्होंने दीघार्यु होने का आशीर्वाद प्रदान किया ।तभी उसके मौजूद वहां मां-बाप ने कहा महाराज अब तीन-चार दिन ही इस बच्चे की उम्र है इस पर संत आंखें बंद कर कुछ देर तक मौन रहे फिर कहा कि यह बालक 100 वर्ष तक जीवन जिएगा । यह बात सुनकर उसके मां-बाप का खुशियों का ठिकाना नहीं रहा । परमहंस स्वामी प्रभाकर जी महाराज ने कहा कि संत महात्माओं का आशीर्वाद कभी व्यर्थ नहीं जाता वहीं दूसरी तरफ महाभारत काल की कहानी भी बताएं जब पितामह भीष्म पांडवों में से किसी एक का वध करने का प्रतिज्ञा कर ली थी यह बात कृष्ण के पास पहुंची कृष्ण ने द्रौपदी को आगे कर करके पितामह भीष्म का चरण स्पर्श करने को कहा नई नवेली दुल्हन के रूप में द्रोपदी पितामह भीष्म के पास पहुंची दोनों चरण स्पर्श किया पितामह भीष्म ने अखंड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद प्रदान किया। द्रोपदी घुंघट उठाते हुए बोली पितामह आप तो प्रतिज्ञा कर लिए है मैं पांडवों में से किसी एक का वध करूंगा तो मैं कैसे अखंड सौभाग्यवती रहूंगी इस पर पितामह भीष्म ने अपनी प्रतिज्ञा वापस ले ली थी स्वामी प्रभाकर जी महाराज का कहने का अर्थ यह रहा कि जितने भी सिद्ध पुरुष हैं संत पुरुष हैं मानव समाज को कुछ ना कुछ देख कर के ही जाते हैं। संत महात्माओं अपने से बड़े बुजुर्गों की बातों को ध्यान से सुननी चाहिए।

रेवती रमण सिंह के भतीजे पूर्व प्रधान बरांव विजय रमण सिंह की ठंड लगने से मौत

घर में अकेले थे, 20 घंटे बाद दरवाजा तोड़ कर शव निकाला गया

करछना। क्षेत्र के बराव गांव के पूर्व प्रधान विजय रमण सिंह उर्फ राजू सिंह की मौत ठंड लगने से शुक्रवार शाम 6 बजे उनके आवास बरांव कोठी पर हों गयी थी,उस समय वह घर पर अकेले थे उनकी पत्नी उषा सिंह प्रयागराज में थी और बेटा आशुतोष रमण सिंह अपनी पत्नी को लेकर शिमला में थे, जानकारी के मुताबिक शुक्रवार शाम 6 बजे पास स्थित बाजार में किसी काम से विजय रमन सिंह उर्फ राजू सिंह पूर्व प्रधान बराव गए थे और बरांव कोठी में अपना निवास बनाए थे बाजार से शाम 6:00 बजे लौटे तो कमरा बंद करके अंदर चले गए और एक पैर का जूता उतारे थे तभी उनको ठंड से हार्ट अटैक आ गया और उनकी मौत हो गई घर में अकेले रहने के कारण किसी को जानकारी नहीं हुई शनिवार दोपहर तक दरवाजा न खुलने पर आसपास के लोगों को शंका हुई तो दरवाजा अंदर से बंद पाया दरवाजा तोड़कर अंदर घुसे लोगों को मृत पड़े हुए थे बताया जाता है कि विजय रमन सिंह बरांव गांव के तीन पंचवर्षीय योजना में प्रधानी कर चुके हैं और एक पंचवर्षीय क्षेत्र पंचायत सदस्य भी रह चुके हैं तथा दो पंचवर्षीय उनकी पत्नी उषा सिंह प्रधान रही हैं, घटना की सूचना पाकर बेटा और बहू शिमला से रवाना हो गए, और राजू सिंह का शव परिजनों ने शनिवार शाम शरर में बने आवास पर ले गए जहां रविवार को दारागंज घाट पर अंतिम संस्कार किया जाएगा।

बैठक में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते पूर्व सांसद नागेन्द्र प्रताप सिंह पटेल

अपना दल एस की मासिक बैठक हुई संपन्न

फाफामऊ। अपना दल एस की मासिक बैठक प्रयागराज गंगापार के जिला अध्यक्ष भानुप्रताप पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में पहुंचे बतौर मुख्य अतिथि अपना दल एस के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व सांसद नागेंद्र प्रताप सिंह पटेल ने पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह वर्धन करते हुए बताया कि बीते 2 दिसंबर को पार्टी की प्रदेश स्तरीय बैठक में मा० राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केन्द्रीय मंत्री बहन अनुप्रिया पटेल कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए 2023 में पार्टी को प्रदेश की नं० 1 की पार्टी बनाने का लक्ष्य दिया है। मा० बहन जी ने कहा है कि हमें तीसरे पर संतोष नहीं है, इसलिए सभी कार्यकर्ता पार्टी को नंबर वन की पार्टी बनाने के लिए जोर शोर से कार्य करना शुरू कर दें। आने वाला समय अपना दल एस का होगा, साथ ही साथ सभी कार्यकर्ता पुनः पार्टी के प्रचार-प्रसार में लग जाएं। कार्यक्रम का कुशल संचालन जिला महासचिव बीरेंद्र पटेल जी ने किया। तथा कार्यक्रम में राष्ट्रीय सचिव किसान मंच बी डी गौड़, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्यामराज पटेल, राष्ट्रीय सचिव युवा मंच सावंत सिंह पटेल,भारत सिंह पटेल, संजय पटेल दामोदर, रविनंदन यादव, दिनेश पासी, अशोक कुमार पटेल, के साथ-साथ जिला महासचिव आशीष पटेल, जिला महासचिव बृजेश पटेल, जिला महासचिव विकास पासी, जिला उपाध्यक्ष बृजभान पटेल, जिला अध्यक्ष विधि मंच रामसिंह पटेल, जिला अध्यक्ष युवा मंच राजकुमार पटेल, जिला अध्यक्ष किसान मंच बसंत लाल पटेल आदि रहे।

सांवरी सूरत पे मोहन दिल दिवाना हो गया, में बही भक्ति की बयार

कार्यक्रम

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र में स्वर्ग रंगमंडल के लोक कलाकारों ने 'गाथा' कार्यक्रम की मनभावन प्रस्तुति से दर्शकों का मोहा मन

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते कलाकार

प्रयागराज। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनसीजेडसीसी) के सभागार में शनिवार की शाम लोककलाकारों ने नृत्य, कला और संगीत की ऐसी महफिल सजाई कि दर्शक दीर्घा में बैठे लोग मंत्रमुग्ध हो गए। लोक धुनों से सजे लोकगीत मनभावन तो होते ही हैं, साथ ही उद्देश्य परक भी होते है। अपनी बात, दर्द और पीड़ा को अल्फाज देने का सबसे बेहतरीन माध्यम लोकगीत होते हैं। इसकी खूबसूरत बानगी शनिवार शाम उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र में उस समय देखने को मिली जब स्वर्ग रंगमंडल के लोक कलाकारों ने 'गाथा' कार्यक्रम की मनभावन प्रस्तुति से दर्शकों का मन मोह लिया।

गाथा में गीतों का चयन इस खूबसूरती से किया गया कि बगैर किसी लाग लपेट के दर्शकों की निरंतर तालियां कार्यक्रम की सफलता का बयान करती रहीं। लोकगीतों की कर्णप्रिय ध्वनियों और समापन में होली गीत- साँवरी सूरत पर मोहन दिल दिवाना हो गया... पर लोकनृत्य की सप्तरंगी छटा दर्शकों को लुभाती रही।स्वर्ग रंगमंडल द्वारा 'गाथा' के तहत प्रस्तुत लोकगीतों की सुमधुर प्रस्तुति ने प्रेक्षागृह में आए कला रसिकों एवं सुधिजनों के ह्रदय के तारों को झंकृत किया, साथ ही लोकगीतों की धुनों पर भावों से सराबोर कर देने वाले लोकनृत्यों ने भी कार्यक्रम में समा बांध दिया।

प्रस्तुति की शुरूआत देवी गीत के साथ करते हुए कलाकारों ने विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले पारंपरिक लोकगीतों में गंगा गीत, पराती गीत, चैती, कजरी, बसंत गीत होली गीतों के साथ कृष्ण के संग हंसी ठिठोली के साथ ही उनके मोहक रंग-रूप के रूपक प्रेम गीत की रसधार से सभी को मोहित किया।

कार्यक्रम का संचालन कृष्ण कुमार मौर्य ने बड़े ही सहज और सधे अंदाज में किया। कार्यक्रम संयोजन शिव प्रकाश सरस्वती का रहा। 'गाथा' कार्यक्रम की रूपरेखा एवं निर्देशन लोक नाट्य विद अतुल यदुवंशी ने किया। प्रस्तुति में प्रिया मिश्रा, शिल्पी यदुवंशी, श्रद्धा देशपांडे, शिवानी कश्यप, अनन्या मोहिले, शांता सिंह सहित नीरज अग्रवाल, धीरज अग्रवाल, सचिन केसरवानी, मनोज कुमार, संदीप शुक्ला, आर्यन मोहिले एवं शुभम श्रीवास्तव ने स्वर प्रदान किया। लोकनृत्य का निर्देशन प्रिया मिश्रा ने किया, जिसमें जूही दुबे, सरगम लता, तुन सोनकर आदि ने मंच पर प्रस्तुति दी।

संक्षेप

आज नारा में लगेगा स्वास्थ्य शिविर

कौशाम्बी। सिराथू तहसील के नारा गांव में रविवार को एक संस्था की ओर से निरूशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सक लोगों की जांच करेंगे। इसके बाद उनका इलाज किया जाएगा। शिविर में आए मरीजों को मुफ्त में दवाएं भी दी जाएंगी।

सौर ऊर्जा की बैट्री खोल ले गए चोर

कौशाम्बी। पइंसा कोतवाली के अफजलपुरवारी निवासी मोहम्मद अरशद ने बताया कि मस्जिद व पड़ोसी मेवालाल के घर के समीप शौर्य ऊर्जा लगाया गया था जिससे मोहल्ले के साथ मस्जिद में पर्याप्त रोशनी रहती थी।
बेखौफ चोर शौर्य ऊर्जा की बैट्री खोल ले गए। घटना की जानकारी मोहल्ले के लोगों को सुबह हुई। चोर की तलाश करने के बाद अरशद ने थाने पहुंच मामले की शिकायत पुलिस से किया। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर चोर की तलाश शुरू कर दी है।

संसदीय कार्यालय में सांसद ने की जनसुनवाई

कौशाम्बी। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय मंत्री व कौशाम्बी सांसद विनोद सोनकर ने शनिवार को मुख्यालय स्थित अपने संसदीय कार्यालय सरसहाल विकास भवन में जनसुनवाई की। इस दौरान लगभग 65 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें लगभग 17 प्रार्थना पत्रों का निस्तारण सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को दूरभाष के जारिये व मौके पर बुलाकर किया गया तथा शेष प्रार्थना पत्रों को सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को पत्र के माध्यम से अबिलम्ब कार्यवाही कर अवगत कराने को निर्देशित किया गया। जनसुनवाई के दौरान विकास खण्ड मंझनपुर के ग्राम भरसवां के पितम्बर पुत्र रामदुलारे ने प्रार्थना पत्र देकर बताया कि गॉव के ही रामबली पुत्र रामपियारे व जवहिर पुत्र सूरजदीन ने प्रार्थी के खेत की मेड़ जबरजस्ती तोड़कर अपने खेत मे मिला लिया है। प्रार्थी ने इसकी सूचना चौकी प्रभारी से की लेकिन कोई कार्यवाही नही हुई। उक्त मामले को गम्भीरता पूर्वक लेते हुये सांसद कौशाम्बी ने उपजिलाधिकारी मंझनपुर को फोन कर मामले की निष्पक्ष जॉच कराकर कार्यवाही करने को निर्देशित किये। विकास खण्ड सरसवां के ग्राम पभोषा के पुष्पराज सिंह पुत्र श्री दिलीप सिंह ने प्रार्थना पत्र के माध्यम से बताया कि प्रार्थी के पूर्वजो की खाली पड़ी जमीन पर गाव के ही अमित सिंह व विक्रम सिंह व उग्रसेन सिंह आदि लोग जबरन कब्जा करने के फिराक में है। जिसकी सिकायत प्रार्थी की पत्नी रीता देवी ने कई बार थाना प्रभारी प्रश्चिम शरीरा से की लेकिन कोई ठोस कार्यवाही नही किया गया। इस पर सांसद कौशाम्बी ने उपजिलाधिकारी मंझनपुर को पत्र भेजकर आवश्यक कार्यवाही करने को कहे। अढ़ौली के अभिमन्यु सिंह पुत्र श्री लालसिंह ने प्रार्थना पत्र देकर गॉव में नाली बनवाने की मांग किया। बनीखास चम्पहा बाजार के गुड्डु पुत्र हरीओमए विकास खण्ड सिराथू की श्रीमती सावित्री देवी पत्नी श्यामलाल, विकास खण्ड मंझनपुर ग्राम कोतारी पश्चिम की संगीता देवी, हाजीपुर पतौना के महेश चन्द्र सोनकर, विकास खण्ड मूरतगंज के ग्राम भीखमपुर की चन्द्र रेखा पत्नी नोखेलाल आदि दर्जनों लोगो ने प्रार्थना पत्र देकर प्रधानमंत्री आवास की मांग किये। इस पर सांसद विनोद सोनकर ने मुख्य विकास अधिकारी कौशाम्बी फोन से वार्ता कर प्रार्थना पत्रों का अवलोकन कर पात्रता की जॉच कराकर प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास दिलाये जाने हेतु अतिशीघ्र आवश्यक कार्यवाही कर अवगत कराने को निर्देशित किये।

जनसुनवाई के दौरान डा. गुलाब कुशवाहा, भूपेन्द्र सिंह, महेश लोधी, रानू विश्वकर्मा, जज कुमार सोनकर, दिनेश सोनकर, मीडिया प्रभारी राजेन्द्र पाण्डेय आदि सैकड़ों लोग उपस्थित रहें।

संसदीय कार्यालय में जन सुनवाई करते सांसद विनोद सोनकर

एक दिवसीय रोजगार मेला 10 को

कौशाम्बी। जिला सेवायोजन अधिकारी ने अवगत कराया है कि जिला सेवा योजन कार्यालयए कौशल विकास मिशन एवं राजकीय आईटीआई के संयुक्त प्रयास से 10 जनवरी को कौशाम्बी ब्लाक के अन्तर्गत ए.आर.के कालेज चौपुरवा के परिसर में एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया जायेंगा। रोजगार मेले में निजी क्षेत्र की विभिन्न कंपनियों द्वारा विभिन्न पदों पर चयन की कार्यवाही की जायेंगी।

सड़क किनारे बोरे में भरी मिली महिला की जली लाश, हड़कम्प

कौशाम्बी। एक बार फिर महिला के साथ हैवानियत का मामला सामने आया है। यहां एक महिला को जलाकर मारने के बाद प्लास्टिक के बोरे में लाश भरकर सड़क किनारे फेंक दी गई है। संदीपन घाट थाना क्षेत्र में फेंकी गई लाश पर ग्रामीणों की नजर शनिवार की सुबह पड़ी। इसके बाद फोरेंसिक टीम को बुलाकर जांच पड़ताल की गई। महिला के बुरी तरह जलने के कारण शिनाख्त में भी पुलिस को परेशानी हो रही है।

पुलिस के अनुसार शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। अपर पुलिस अधीक्षक समर बहादुर सिंह के मुताबिक ग्रामीणों से मिली सूचना पर संदीपन घाट थाना पुलिस शनिवार सुबह नरवर पट्टी और बदनपुर गांव के बीच पहुंचीए जहां सड़क किनारे रखे प्लास्टिक के एक बोरे से महिला की जली हुई लाश बरामद की। श्री सिंह ने बताया कि मृतका की शिनाख्त नहीं हो सकी है और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंचकर साक्ष्य जुटा रही है। उन्होंने कहा कि पड़ोसी जिला प्रतापगढ़ की पुलिस से संपर्क कर पता लगाया जा रहा है कि वहां किसी महिला की गुमशुदगी का मामला तो नहीं दर्ज कराया गया है। हालांकि शव पूरी तरह से जला होने के कारण मृतका की सही उम्र का पता नहीं चल पा रहा है। उन्होंने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और मामले की जांच की जा रही है। पुलिस ने बदनपुर घाट पहुंचने वाले रास्तों में मिलने वाले दुकानों व्यापारिक प्रतिष्ठान एवं अन्य स्थानों के सीसीटीवी फुटेज को खंगाल रही है।

पत्नी के प्रेमी ने युवक को दी जान से मारने की धमकी

कौशाम्बी। पिपरी थाना इलाके के एक गांव के युवक ने पत्नी के प्रेमी पर जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। युवक ने बताया कि दस साल पहले उसकी शादी प्रयागराज जनपद के बारा थाना इलाका निवासी एक युवती के साथ हुई थी। शादी के बाद से ही पत्नी का चाल चलन ठीक नहीं था। वह पराए मर्द से घंटों मोबाइल पर बातें किया करती थी। मना करने के बाद भी वह अपने प्रेमी से बात करना नहीं छोड़ी। युवक के अनुसार उसकी पत्नी गांव के ही अपने प्रेमी के साथ रहना चाहती है। उसका प्रेमी अब युवक को भी गाली गलौच कर जान से मारने की धमकी दे रहा है। पीड़ित ने शनिवार को पिपरी थाने जाकर घटना की तहरीर दी। तहरीर मिलने के बाद पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

युवक पर प्राण घातक हमला, शिकायत

चायल, कौशाम्बी। सराय अकिल कोतवाली अंतर्गत चुन्नी का पूरा मजरा निवासी एक युवक ने पुलिस को दिए गए तहरीर में आरोप लगाया है कि दस दिसबंर को वह खेत की ओर गया था। तकरीबन शाम पांच बजे कुछ लोग एक राय होकर लाठी, डंडा से फरासा से हमला कर दिया। घटना में उसे चोट भी आई।

शिकायतकर्ता राजेश कुमार पुत्र शारदा प्रसाद सररोज ने बताया कि दस दिसबंर समय लगभग 5 बजे शाम अपने खेत की तरफ घूमने गया था, तभी ग्राम झड़िया का पूरा मजरा बेरौचा निवासी रामजी पुत्र मोती लाल जो चौकीदार है। जिसके हाथ मे एक नाली बन्दूक तथा सुशील कुमार पुत्र मोती लाल के हाथ में दो नाली बन्दूक तथा राजेश कुमार पुत्र मोती लाल जिसके हाथ में अवैध असलहा व फरसा तथा संदीप कुमार व कुलदीप कुमार पुत्रगण रामजी के हाथ में बल्लम व डण्डा लिये थे, जैसे ही अपने खेत में पहुंचा तो रामजी ने ललकारा तभी संदीप ने फरसा से वार कर दिया। बचाव के लिए उसका भाई आया। हालांकि किसी तरह हमलावरों से जान बचाकर भागे। थाना पुलिस को तहरीर दिया लेकिन दबाव में आकर मामूली धाराओं में केस दर्ज कर खानापूर्ति कर दिया है। पीड़ित ने दबंगों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की मांग किया है।

आधा किलो गांजा के साथ पकड़ा गया युवक

कौशाम्बी। सैनी कोतवाली पुलिस ने शुक्रवार की रात गश्त के दौरान केशरिया मोड़ के समीप संदिग्ध दशा में खड़े एक युवक को धर दबोचा। पुलिस ने तलाशी लेते हुए युवक के कब्जे से आधा किलो गांजा बरामद किया। पकड़ा गया गांजा तस्कर फतेहपुर जिले के रजपालपुर गांव का बलराम पटेल बताया गया है। पुलिस ने बताया कि आरोपित युवक अर्से से इलाके में गांजे की तस्करी करता था।

डीएम, एसपी ने चायल में सुनी जन शिकायत

निर्देश
शिकायतों के निस्तारण में गुणवत्ता अवश्य सुनिश्चित करने के निर्देश

कौशाम्बी। तहसील चायल में शनिवार को जिलाधिकारी सुजीत कुमार व एसपी बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने आमजन की शिकायतों को सुना एवं सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दियें। जिलाधिकारी ने राजस्व से सम्बन्धित शिकायतों पर राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर शिकायत को निस्तारित करने के निर्देश दिये।

जिलाधिकारी ने अधिकारियों से कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा सम्पूर्ण समाधान दिवस एवं आईजीआरएस के तहत प्राप्त शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण एवं समयान्तर्गत निस्तारण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि आईजीआरएस पोर्टल की प्रतिदिन जॉच कर शिकायतों का निस्तारण समयान्तर्गत अवश्य सुनिश्चित किया जाय तथा विशेष ध्यान दिया जाय कि कोई भी शिकायत डिफाल्टर न होने पाये। उन्होंने सभी अधिकारियों को आईजीआरएस पोर्टल पर अधिकारियों का नाम व मोबाइल नम्बर अपडेट करने के निर्देश दियें। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 49 शिकायतें प्राप्त हुईए जिसमें से 03 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। समाधान दिवस में शिकायतकर्ता श्री राम कीर्तनए निवासी ग्राम.इब्राहिमपुर दूलापुर द्वारा प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया गया कि उनकी भूमिधरी पर गांव के ही दबंग व्यक्तियों द्वारा जबरन कब्जा कर लिया गया हैए जिस पर जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी, चायल को जॉच कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दियें। इसी प्रकार शिकायतकर्ता अजय कुमार, निवासी ग्राम.बरेठी कमालपुर द्वारा आवासीय पट्टा की मॉग के सम्बन्ध में प्रार्थना पत्र दिया गयाए जिस पर जिलाधिकारी ने तहसीलदार को जॉच कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दियें तथा शिकायतकर्ता राजेश कुमार, निवासी ग्राम.मादपुर द्वारा प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया गया कि बिजली बिल अधिक आ रहा है, जिस पर जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता, विद्युत को जे0ई0 को मौके पर भेजकर जॉच कराने के निर्देश दियें।

तहसील चायल में जन शिकायत सुनते डीएम, एसपी

तहसील सिराथू में कुल 22 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 03 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया तथा तहसील मंझनपुर में कुल 15 शिकायतें प्राप्त हुईए जिसमें से 02 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ. रवि किशोर त्रिवेदी, अपर पुलिस अधीक्षक समर बहादुर, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. सुष्पेन्द्र कुमार एवं उप जिलाधिकारी राजेश कुमार श्रीवास्तव सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

दबंगों ने मजदूर की भूमिधरी जमीन पर किया कब्जा

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के मखऊपुर निवासी बीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्र कुमार पुत्रगण स्व. गंगाराम व रामकली पत्नी स्व. गंगाराम अनपढ गरीब मजदूर व्यक्ति हैं। आरोप है कि गांव के राजेश पाल पुत्र सोहन लाल, शत्रुधन पाल पुत्र गज्जू व रणधीर पाल पुत्र गजाधर, तन्नू प्रधान पुत्र समीम अहमद आदि ने कुछ दिन पहले जालसाज करके मेरी संक्रमणीय भूमिधर अ. सं. 193 रक्बा 0.2150 हे. में बना पक्का मकान जबरन कब्जा कर- के मेरी माँ को डरा धमकाकर 2021 को बैनामा करवा लिया था। उपरोक्त लोग अब मेरी संक्रमणीय भूमिधर आराजी संख्या 194 रक्बा 0.14900 में बना पक्का आर.बी. मकान 25ग 20 में तीन कमरा व एक गलिहारा शेष जमीन पर एक फिट बनी नींव को 2022 को मैं ईट बालू गिराकर शेष भूमि पर निर्माण करा रही थी, तो उपरोक्त विपक्षी आकर मुझे व मेरे बेटे को गाली गलौज करते हुए मारपीट करने लगे तथा जबरन मेरा मकान व जमीन को कब्जा करके मेरे घर के अन्दर रखा समान बाहर फेंक दिये। इतना ही नहीं विरोध करने पर तमाम तरह की धमकियां दे रहे हैं। शिकायत थाना पुलिस से किया गया है लेकिन कोई कार्यवाही न होने से विपक्षियों के हौसले बुलंद हैं।

जल-जीवन मिशन अन्तर्गत कार्यों का डीएम ने किया भौतिक निरीक्षण

निर्देश
सभी कार्यों को निर्धारित समयावधि के अन्दर एवं मानक के अनुसार पूर्ण कराने के निर्देश

कौशाम्बी। जल-जीवन मिशन ;हर घर नल योजना के अन्तर्गत ग्राम-फतेहपुर सहाबपुर एवं महगॉव में कराये जा रहें कार्यों का शनिवार को डीएम सुजीत कुमार ने भौतिक निरीक्षण किया।

जिलाधिकारी ने जल-जीवन मिशन के तहत बनाये जा रहें पानी की टंकी एवं बिछायी जा रहीं पाइप लाइन के निरीक्षण के दौरान कितने घर एवं कितनी आबादी आच्छादित होंगी की जानकारी अधिशासी अभियंताए जल निगम से प्राप्त करते हुए कहा कि यह सुनिश्चित किया जाय कि सम्बन्धित एजेन्सी द्वारा पाइप लाइन जमीन के एक मीटर अन्दर बिछायी जाय तथा सभी कार्य मानक के अनुसार सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने पानी की टंकी के निरीक्षण के दौरान गुणवत्तापूर्ण पानी की टंकी बनाये जाने के निर्देश देते हुए कहा कि बाउण्ड्रीवाल भी बनाया जाय। उन्होंने जल.जीवन मिशन के तहत कराये जा रहें सभी कार्यों को निर्धारित समयावधि के अन्दर पूर्ण करने के निर्देश दियें। निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी डॉ. रवि किशोर त्रिवेदी, उप जिलाधिकारी चायल राजेश कुमार श्रीवास्तव एवं खण्ड विकास अधिकारी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

जल जीवन मिशन अंतर्गत योजना का निरीक्षण करते डीएम

किसान के घर सवा लाख की चोरी

कौशाम्बी। सैनी कोतवाली के चकिया गनपा गांव में शुक्रवार रात बेखौफ चोर किसान का घर खंगाल ले गए। सेंध लगाकर घर के भीतर घुसे चोरों ने नकदी समेत सवा लाख के गहने पार कर दिया। घटना की जानकारी पीड़ित परिवार के लोगों को शनिवार सुबह हुई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौका.मुआयना किया। मामले में मुकदमा दर्ज कर चोरों की तलाश शुरू कर दी है। चकिया निवासी रामनाथ ने बताया कि गुरुवार की रात वह परिवार के साथ सो रहा था। आधी रात घर के पीछे से नकब लगाकर घुसे चोरों ने आलमारी का ताला तोड़कर पांच हजार नकदी के साथ करीब सवा लाख के गहने पार कर दिया। घटना की जानकारी पीड़ित परिवार के लोगों को सुबह हुई। पड़ोसी के घर चोरी की जानकारी होते ही मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। रामनाथ का आरोप है कि गांव के पड़ोसी शिवम ने साथियों के साथ मिल उसके घर में चोरी किया है। शुक्रवार को पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ चोरी का मुकदमा दर्ज कर मामले की तहकीकात शुरू कर दी है।

चायल बार एसोसिएशन के चुनाव के लिए एल्डर कमेटी का हुआ गठन

कौशाम्बी। प्रयागराज बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश के चेयरमैन मधुसूदन त्रिपाठी ने चायल बार एसोसिएशन के चुनाव आयोजन के लिए नई एल्डर कमेटी का गठन किया है। चेयरमैन के एक जनवरी को जारी आदेश के अनुसार वरिष्ठ अधिवक्ता उमाकांत मिश्रा अध्यक्षए अमरनाथ सिंहए कमल नारायण पांडेयए रिजवान अहमद और मनोज कुमार साहू को सदस्य नियुक्त किया गया है। अध्यक्ष रमाकांत मिश्र ने बताया कि उन्होंने सभी नवनियुक्त सदस्यों को उनकी नियुक्ति की सूचना दे दी है और बार के निवर्तमान महामंत्री सगीर अहमद को चुनाव सामग्री व चेयरमैन बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश द्वारा जारी आदेश के निदेशों का अनुपालन करते हुए सर्व शुद्ध मतदाता सूची 11 जनवरी तक उपलब्ध कराने की सूचना दे दी है।

बेसिक शिक्षा मंत्री से सम्मानित हुई कौशांबी की शिक्षिका

दारानगर, कौशाम्बी। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की जयंती पर उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह ने अपने आवास पर आयोजित कार्यक्रम पर कोरोना महामारी समस्याएं एवं समाधान पुस्तक का लोकार्पण कर उसमें प्रकाशित चयनित लेखों के लेखककारों को मेडल, प्रशस्तिपत्र एवं पुस्तक देकर सम्मानित किया। सम्मानित होने वालों में कौशांबी जनपद के नेवादा ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय भगवानपुर की प्रधानाध्यापिका सुमन कुशवाहा भी रही। इन्होंने बताया की उक्त पुस्तक में मेरे द्वारा लिखा गया लेख भारतीय अर्थव्यवस्था और वैश्विक महामारी पर था जिसे चयनित कर पुस्तक में प्रकाशित किया गया है। जिसमें कोरोना से उत्पन्न विभिन्न परिस्थितियों पर समस्याओं के समाधान पर जानकारी देने का प्रयास किया है। उन्होंने बताया की इस लेख में मेरे साथ दो अन्य सहयोगी शिक्षिकाएं अर्चना शिरोमणि गौतम बुध नगर एवं महिमा शर्मा प्रयागराज भी शामिल है जो इस मौके पर सम्मानित हुई है।

सम्मानित हुई शिक्षिका के साथ मौजूद अन्य लोग

भाई के हत्यारोपियों से अमिताभ को जान का खतरा

कौशाम्बी। सरायअकिल थाने के कोटिया निवासी अमिताभ को उसके भाई के हत्यारोपियों से जान का खतरा बना हुआ है। जमानत पर छूटे हत्यारोपी अमिताभ के घर के आसपास मंडराते रहते हैं। पीड़ित ने शनिवार को मामले की शिकायत सम्पूर्ण समाधान दिवस में डीएम से करते हुए न्याय की गुहार लगाई। कोटिया गांव निवासी अमिताभ ने बताया कि 25 जनवरी 2015 को उसके भाई श्रीप्रकाश की खेत में शौच क्रिया के समय गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। हत्या के आरोप में पुलिस ने तीन लोगें को जेल भेजा था। न्यायालय से दो लोगों की जमानत हो गई है। जमानत पर रिहा होने के बाद दोनों हत्यारोपी अक्सर अमिताभ के घर के आसपास मंडराते रहते हैं। इससे भाई की हत्या के मामले में पेरवी कर रहे अमिताभ को जान का खतरा बना हुआ है। शनिवार को पीड़ित ने मामले की शिकायत सम्पूर्ण समाधान दिवस में डीएम से करते हुए पुलिस गश्त बढ़ाने और जमानत पर छूटे हत्यारोपियों पर नजर रखने की गुहार लगाई। डीएम सुजीत कुमार ने इंस्पेक्टर सरायअकिल को मामले की जांच कर कार्रवाई करने का निर्देश दिया है।

कड़ाधाम मंदिर प्रबंध समिति ने जगह-जगह जलवाए अलाव

कौशाम्बी। ठंड व सर्द हवा से राहत दिलाने के लिए कड़ाधाम मंदिर प्रबंध समिति के लोगो अलाव की व्यवस्था कराई। शुक्रवार को शक्ति पीठ कड़ाधाम के अध्यक्ष उदय पाण्डेय ने शीतला धाम मंदिर प्रांगण, व कड़ाधाम क्षेत्र में अलाव की व्यवस्था कराई गई। बता दें कि गलन व ठिठुरन भरी सर्दी से जनजीवन अस्तव्यस्त हो रहा। शनिवार सुबह से ही ठंड का अहसास रहा। तापमान में भी लगातार गिरावट आ रही है। इससें कड़कड़ाती ठंड पड़ रही है। शुक्रवार को सुबह से ही ठंड से बचाव के लिए दर्शन करने आए यात्रियों के लिए जगह. जगह मंदिर प्रबंध समिति की तरफ से अलाव की व्यवस्था किया गया। वही गलन ज्यादा पड़ने के कारण व सर्द हवा से मंदिर प्रांगण क्षेत्र में भी दर्शन करने वालों श्रद्धालुओं को ठण्ड न हों इसके लिए मंदिर के पास भी अलाव की व्यवस्था किया गया है। वही कड़ाधाम मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष उदय पांडेय ने बताया कि कड़ाधाम, मंदिर के पीछे, कालेश्वर घाट मार्ग बाई पास रोड़, व कड़ाधाम मे कई जगह अलाव की व्यवस्था कराई गयी है।

भीषण ठण्ड में अलाव तापते लोग

संक्षेप

नहर मे पानी न आने से सूख रही फसलें, किसान चिन्तित

लालगंज। गेहूं तथा सरसों व मटर की फसल सिंचाई के अभाव मे सूखने को लेकर किसान चिंतित देखे जा रहे हैं। क्षेत्र के अठेहा रजबहा मे भी तक पानी न आने से किसानो मे गुस्सा भी पनप रहा है। अठेहा उदयपुर, रांकी रजबहा आदि के किसानो का कहना है कि नहर मे पानी न छोडे जाने से उनकी फसल सूख रही है। किसानो का यह भी आरोप है कि सिंचाई विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों से समस्या बताये जाने के बावजूद फसल सुरक्षा को लेकर सिंचाई का प्रबन्ध विभाग नही कर रहा है। ऐसे मे किसानो का कहना है कि उनकी आलू तथा मटर व सरसों तथा गेहूं की फसल लगातार सूख रही है। उमापुर के दयाराम वर्मा, मनीपुर के जमुना प्रसाद तिवारी, मंगापुर के पवन शुक्ल, पूरे गुरूबक्श के छेदी शुक्ला, आदि का कहना है कि नहर मे पानी न आने से किसान तो परेशान है किंतु अफसरो पर जरा सा भी जूं नही रेंग रही है। इस बाबत तहसीलदार धीरेन्द्र प्रताप सिंह से भी शनिवार को किसानो ने अपनी पीड़ा बतायी। तहसीलदार ने विभागीय अफसरो से बात कर प्रबन्ध कराए जाने का भरोसा दिलाया।

डीएम की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस 271 में 08 मामले मौके पर निस्तारित

प्रतापगढ़। सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल की अध्यक्षता में शनिवार को पट्टी तहसील में आयोजित किया गया। समाधान दिवस में कुल 271 फरियादी अपनी समस्याओं के निस्तारण के लिए आए। जिनमें से 08 शिकायतों का मौके पर निस्तारण कर दिया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल प्राप्त 271 शिकायतों में से 122 शिकायतें राजस्व विभाग से, पुलिस विभाग से 70, विकास विभाग से 28, समाज कल्याण विभाग से 06, शिक्षा विभाग से 03 , स्वास्थ्य विभाग से 02 एवं 40 अन्य विभागों से सम्बन्धित शिकायतें प्राप्त हुई। डीएम ने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि सम्पूर्ण समाधान दिवस में आये हुये प्रकरणों का यथाशीघ्र गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कराया जाये। उन्होने कहा कि फरियादियों की समस्याओं को गम्भीरता से सुना जाये और शीघ्र ही उनका निस्तारण भी किया जाये ताकि

समाधान दिवस में उमड़ी फरियादियों की भीड़

फरियादियों को इधर-उधर अपनी समस्याओं को लेकर भटकना न पड़े। डीएम ने मौजूद अधिकारियों से कहा कि वह अपने अधीनस्थों पर निर्भर न रहें बल्कि स्वयं निस्तारण की गुणवत्ता को देखें। शिकायतों के निस्तारण में किसी भी स्तर पर शिथिलता या लापरवाही को बहुत ही गम्भीरता के साथ लिया जायेगा। सभी अधिकारी शासन की मंशा के अनुरूप सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण एवं त्वरित गति से कराएं। डीएम ने अधिकारियों को उनके दायित्वों का भी पाठ पढ़ाया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने समस्त थानाध्यक्षों से कहा कि पुलिस विभाग से सम्बन्धित प्राप्त शिकायतों का निस्तारण समय-सीमा के अन्दर किया जाना सुनिश्चित करें। महिलाओं की शिकायतों को गम्भीरता से सुने तथा उनका गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण भी सुनिश्चित करें। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी पट्टी देश दीपक सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 जी0एम0 शुक्ला सहित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। संपूर्ण समाधान दिवस के उपरांत जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने कोतवाली पट्टी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने कोतवाली पट्टी के नए भवन बनवाए जाने हेतु स्थल का निरीक्षण किया एवं कोतवाल को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

समाधान दिवस में लंबित शिकायतों को देख बिफरे एडीएम

लालगंज। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल एक सौ ग्यारह शिकायतें आयी। इनमें से अफसर महज सात शिकायतों का निस्तारण कर सके। संपूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता एडीएम त्रिभुवन विश्वकर्मा ने किया। एडीएम ने शिकायतों की सुनवाई करते हुए मातहतो से मौके पर जाकर निस्तारण कराए जाने के तल्ख निर्देश दिये। ज्यादातर शिकायतें जमीनी विवाद से जुडी दिखी। समाधान दिवस में धनगर समाज को प्रमाण पत्र जारी न होने को लेकर भी एडीएम से शिकायत दर्ज करायी गयी। इस पर एडीएम ने शासनादेश के आधार पर कार्रवाई का भरोसा दिलाया। वहीं समाधान दिवस में चकमार्गो पर अतिक्रमण तथा तालाबी जमीन पर भी अतिक्रमण आदि के मामले भी देखे गये। एडीएम ने समाधान दिवस मे पिछले समाधान दिवस मे आयी शिकायतो के भी निस्तारण की समीक्षा की। इस बाबत उन्होनें लंबित शिकायतो के अभी तक समाधान न कराए जाने पर नाराजगी जतायी। पुलिस से जुडी शिकायतों की सुनवाई सीओ रामसूरत सोनकर ने की। समाधान दिवस का संचालन एसडीएम सौम्य मिश्र ने किया। इस मौके पर तहसीलदार धीरेन्द्र प्रताप सिंह, बीडीओ सांगीपुर अपर्णा सैनी, अधीक्षक डा. अरविंद गुप्ता, पूर्ति निरीक्षक राज सिंह यादव आदि रहे।

जगह-जगह हुए गड्ढे, आवागमन में मुश्किल

कौशांबी। सिराथू-भरवारी मार्ग से पतेरिया गांव को जाने वाली सड़क पर जगह-जगह गड्ढे हो गए हैं। आए दिन इस मार्ग पर बाइक व साइकिल सवार गिरकर चोटिल हो रहे हैं। आसपास के लोगों का आरोप है कि शिकायत के बाद भी सड़क की मरम्मत नहीं कराई जा रही है। जिसे लेकर स्थानीय लोगों में रोष व्याप्त है।

जर्जर पोल दुर्घटना में लापरवाही को लेकर जेई पर गिरी निलंबन की गाज

प्रतापगढ़। विद्युत विभाग की लापरवाही से तहसील एवं दीवानी मुख्यालय की बाजार लालगंज में जर्जर पोल व तार गिरने में अब विभागीय जांच के चलते अवर अभियंता पर निलंबन की गाज गिरी है। वहीं घातक दुर्घटना होने की संभावना को नजरअंदाज करने पर विभाग के निविदा श्रमिक सुनील कुमार को भी निविदा कार्य से बर्खास्त किये जाने की कार्रवाई की गयी है। जांच में जेई पर स्थानीय लोगों के द्वारा जर्जर तार के खराब होने की शिकायत के बावजूद कार्रवाई न करने के आरोप पर शासन ने तल्खी की है। पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम के फरमान पर लालगंज मे तैनात अवर अभियंता मो. अनवर खान को निलंबित कर दिया गया है। गुरूवार की शाम निलंबन का फरमान यहां पहुंचा तो विभाग मे हडकंप मच गया। निविदा श्रमिक सुनील की बर्खास्तगी को लेकर सेवा से सम्बद्ध कंपनी को भी निदेशक तकनीकी के पत्र से कर्मचारियों मे भी अफरातफरी का माहौल देखा गया। अधिशाषी अभियंता विद्युत लालगंज लक्ष्मीशंकर ने निलंबन की पुष्टि करते हुए बताया कि निलंबित अवर अभियंता को अधिशाषी अभियंता कार्यालय से सम्बद्ध किया गया है। बतादें पिछले वर्ष नवंबर माह में नेशनल हाइवे की बाजार लालगंज में जर्जर पोल अचानक गिर गये थे। दुर्घटना मे चार राहगीर गंभीर रूप से चुटहिल हो गये थे। घटना को लेकर बाजार तथा आसपास के लोगों मे काफी आक्रोश भी देखा गया था। इसे लेकर क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना ने ऊर्जा मंत्री को पत्र लिखकर घटना की उच्चस्तरीय जांच कराए जाने तथा दोषियो के खिलाफ कार्रवाई की मांग उठाई थी। विधायक के पत्र पर शासन ने मुख्यालय से अफसरो की जांच कमेटी गठित भी कर रखी है। हालांकि इतनी बडी दुर्घटना के बाद भी विभाग ने अभी तक बाजार के जर्जर पोल बदलने की जहमत नही उठाई है। विभागीय अफसरो का कहना है कि बजट की मांग शासन से की गयी है। विभाग ने सिर्फ गिरे पोलों की जगह ही नये पोल लगाकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली। जर्जर पोल व पुराने तारों को लेकर बाजार के अलावा नगर पंचायत के मनीपुर, अझारा वार्डो मे भी जर्जर पोल व पुराने तारो को लेकर दुर्घटना की आशंका अभी भी बनी हुई है। लोगों के बार बार शिकवा शिकायत के बावजूद विभाग न जाने क्यूं खामोशी ओढे हुए है।

अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम लागू न होने पर निकलेगी ललकार यात्रा

प्रतापगढ़। आल इण्डिया रूरल बार एसोशिएसन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने केंद्र सरकार से मांग किया कि कोलेजियम प्रणाली में संशोधन के तहत ग्रामीण अदालतों में जिले एवं वाह्य न्यायालयों के अधिवक्ताओं को भी वरिष्ठता एवं अनुभव के आधार पर पचास प्रतिशत न्यायिक क्षेत्र में तैनाती दी जानी चाहिए। उन्होने कहा कि सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के पैटर्न पर जिला अदालतों के साथ आउट लाइन कोर्टो में भी प्रभावी बनाया जय। अधिवक्ताओं को वरिष्ठता एवं अनुभव के लाभ का अवसर दिया जाना आवश्यक है। शनिवार को कुण्डा में अधिवक्ताओं से मुलाकात के दौरान उन्होनें अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम की अनदेखी पर आक्रोश जताया। श्री शुक्ल ने कहा कि इस अधिनियम को लागू कराए जाने के लिए अब प्रदेश भर में अधिवक्ता ललकार यात्रा निकाली जाएगी। उन्होंने सभी सरकारी चिकित्सा संस्थानों में अधिवक्ताओं व उनके परिवार के सदस्यों के निशुल्क इलाज के शासनादेश की मांग की। सडक परिवहन मंत्रालय से अधिवक्ताओं को विधि अधिकारी के रूप में विशेष श्रेणी मे घोषित कर टोल फ्री करने की मांग उठायी। इस मौके पर अरविंद त्रिपाठी पंकज, वैभव पाण्डेय, रामखेलावन सरोज, विपिन शुक्ल आदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

एसडीएम पट्टी को कारण बताओ नोटिस

समीक्षा

परिवहन, स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन तथा वाणिज्य विभाग के अधिकारियों को फटकार

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल की अध्यक्षता में शुक्रवार को देर सायंकाल कलेक्ट्रेट सभागार में राजस्व वसूली के संबंध में अधिकारियों संग समीक्षा बैठक की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने विद्युत देय, खनन, आबकारी, परिवहन विभाग, स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन, बाट-माप, वन, मण्डी, वाणिज्य कर सहित अन्य विभागों के राजस्व वसूली की समीक्षा की। परिवहन विभाग, स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन तथा वाणिज्य विभाग की समीक्षा में लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व की वसूली में फिसड्डी पाए गए। डीएम ने एआरटीओ दिलीप कुमार गुप्ता, एआईजी स्टाम्प शैलेन्द्र कुमार सिंह तथा वाणिज्य कर अधिकारी राम भवन को जमकर फटकारा। अधिकारियों को वसूली में तेजी लाने के निर्देश दिए। इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही एवं शिथिलता न बरतने की चेतावनी दी। राजस्व समीक्षा के दौरान पाया गया कि तहसील पट्टी में आईजीआरएस में प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही बरती जा रही है। शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण नही किया जा रहा है। जिस पर जिलाधिकारी काफी नाराज हो गए। एसडीएम पट्टी देश दीपक सिंह को कारण बताओ नोटिस जारी करने का आदेश दिया। इसी प्रकार जिलाधिकारी ने अन्य उपजिलाधिकारियों को सचेत किया कि आईजीआरएस पर प्राप्त होने वाली शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण करें। फर्जी निस्तारण कदापि न करतें। उन्होने कहा कि सीएम का स्पष्ट निर्देश है कि जन शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से किया जाये। इसलिये सभी अधिकारी इस पर विशेष ध्यान दें। डीएम ने अन्त में सभी सम्बन्धित अधिकारियों को

बैठक की अध्यक्षता करते जिलाधिकारी व उपस्थित अधिकारीगण

सलाह दिया कि शासन द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की शत प्रतिशत पूर्ति सुनिश्चित की जाये। उन्होने कहा कि राजस्व वसूली में शिथिलता बरतने पर सम्बन्धित विभाग के अधिकारी के विरूद्ध कार्यवाही की जायेगी। इसलिये सम्बन्धित अधिकारी अपने-अपने दायित्वों का सही ने निर्वहन करें। बैठक में अपर जिलाधिकारी वित्त त्रिभुवन विश्वकर्मा, मुख्य राजस्व अधिकारी राकेश पटेल सहित समस्त सम्बन्धित जिला स्तरीय अधिकारी, समस्त उपजिलाधिकारी, तहसीलदार उपस्थित रहे।

सीडीओ के आदेश पर पीएम आवास का सत्यापन करने पहुंचे अफसर

प्रतापगढ़। ग्राम प्रधान से विवाद होने के बाद सेक्रेटरी ने प्रधानमंत्री आवास का सत्यापन करने से पल्ला झाड़ लिया। ऐसे में सीडीओ के निर्देश पर शनिवार को जिलास्तरीय अफसर फोर्स के साथ गांव पहुंचे और आवास के लिए चिन्हित किए गए लाभार्थियों का सत्यापन किया। अफसरों के फोर्स लेकर गांव पहुंचने को लेकर ग्रामीण तरह-तरह की चर्चा करते रहे। विकास खंड बाबागंज की ग्राम पंचायत झींगुर के सेक्रेटरी की ओर से गांव के 68 प्रधानमंत्री आवास के लाभार्थियों की सूची जिला प्रशासन को दी गई है। इसका सत्यापन शुरू होने से पहले ही ग्रामप्रधान व सेक्रेटरी के बीच लाभार्थियों के चयन को लेकर विवाद हो गया। अब प्रशासन की ओर से आवास के लाभार्थियों का सत्यापन कराया जा रहा है। यह जिम्मेदारी झींगुर गांव के सेक्रेटरी को दी गई तो उन्होंने विवाद का हवाला देते हुए सत्यापन से हाथ खड़ा कर दिया। ऐसे में सीडीओ ईशा प्रिया ने जिला युवा

पीएम आवास का सत्यापन करते अफसर

कल्याण अधिकारी को सत्यापन की जिम्मेदारी सौंप दी। शनिवार को जिला युवा कल्याण अधिकारी धीरेन्द्र शुक्ल व बीडीओ बबागंज देवराज कर्मचारियों व फोर्स के साथ शनिवार को झींगुर गांव पहुंच गए। पूरे दिल अफसर लाभार्थियों का सत्यापन करने में जुटे रहे। ऐसे में पुलिसवाले भी गांव में पहरा देते रहे।

रात में बिजली कटौती के दौरान ट्रांसफार्मर का तेल चोरी

विश्वनाथगंज। रात में पुलिस गस्त को लेकर जहां एक तरफ देल्हूपुर कोतवाली चैसकी बरत रही है वही दूसरी तरफ चोर उन्हें चुनौती दे रहे है। मामला विश्वनाथगंज बाजार का है। शनिवार की रात बिजली कटौती के दौरान चोरों ने कुछ ऐसा ही कारनामा कर दिखाया जिससे पुलिस भी हैरानी में पड़ गई। बता दें कि देर रात हुई बिजली कटौती के दौरान चोरों ने ट्रांसफार्मर से तेल ही चुरा लिया। मामला उस समय का है जब शनिदेव चैकी गश्त को चैकसी का दावा करती है। ऐसी दशा में चोरों ने ट्रांसफार्मर से तेल चोरी कर लिया और पुलिस वालों की इसकी भनक तक नहीं लगी। तौकलपुर के जेई विनय जायसवाल ने बताया कि चोरी के दौरान तेल निकाला गया है। सप्लाई चालू हुई तो ट्रांसफार्मर में तेल नही होने के कारण वह खराब हो गया। इसकी लिखित तहरीर देल्हुपुर थाना प्रभारी को दिया गया है एफआईआर दर्ज होते ही ट्रांसफार्मर में हुई समस्या को दूर किया जाएगा।

अधिकारियों को ब्राह्मण परिषद ने किया सम्मान

अधिकारियों को सम्मानित करते ब्राह्मण परिषद

पट्टी। अखिल भारतीय ब्राह्मण एकता परिषद के जिलाध्यक्ष बिंदेश्वरी प्रसाद पाठक उर्फ बिंदु पाठक की अगुवाई में पट्टी तहसील में पहुंचे जिलाधिकारी नितिन बंसल पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल पट्टी एसडीएम ,क्षेत्राधिकारी पट्टी सहित कई अधिकारियों को भगवान परशुराम का चित्र पुष्पगुच्छ तथा स्मृति चिन्ह देकर उन्हें सम्मानित किया। इस दौरान परिषद के जिला संयोजक शिव सेवक पांडे जिला उपाध्यक्ष एडवोकेट दुर्गेश उपाध्याय एडवोकेट राजेश पांडे एडवोकेट अजीत ओझा चैतन्य शुक्ला शिवम पांडे अमरीश तिवारी राजेश तिवारी पिंकल पांडे सहित कई लोग मौजूद रहे।

खाद्य पदार्थो में मिलावट करने वालों पर लगाया तीन लाख से अधिक का अर्थदण्ड

प्रतापगढ़। खाद्य पदार्थों में मिलाटव कर लोगों की शेहद से खिलवाड़ कर रहे मिलावटखोरों पर एसडीएम की कोर्ट ने तीन लाख तीस हजार का अर्थदण्ड लगाया है। खाद्य पदार्थों में मिलावट कर गोरखधंधा करने वाले दुकानदारों, दूध व्यापारियों आदि पर खाद्य विभाग ने पिछले महीने अभियान चलाकर सख्त कार्यवाही की। मिलावट की शिकायत पर खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन के सहायक कमिश्नर धीरेन्द्र प्रताप सिंह ने टीम गठितकर पूरे जिले में मिलावटी खाद्य पदार्थों की बिक्री करने वालों के खिलाफ चेकिंग अभियान चलाया। विभाग की टीम ने दुकानों आदि के अलावा दूध बिक्रेतओं से सैम्पल कलेक्ट कर जॉच के लिए भेजा। दिसम्बर माह में भेजे गये जॉच रिपोर्ट में दर्जनों दुकानदारों द्वारा खाद्य पदार्थो में मिलावट कर सामान बेंचने की रिपोर्ट पाजिटिव आई। कमिश्नर डीपी सिंह के निर्देश पर मिलावटखोरों पर मामला दर्ज किया गया। मामले की सुनवाई करते हुए एसडीएम की कोर्ट ने 12 वादों में खाद्य पदार्थों में मिलावट कर लोगों को जहर बेंचने वाले आरोपियों पर तीन लाख तीस हजार का अर्थदण्ड लगाया है। कोर्ट ने मिलावटखोरों को जुमार्ने की राशि एक माह में जमा करने का आदेश दिया है। यदि आरोपियों द्वारा एक माह में जुमार्ने की राशि नहीं भरी जायेगी तो सभी भू-राजस्व की भांति वसूली करने का आदेश दिया है। विभाग व प्रशासनिक शिकंजा कसने से खाद्य पदार्थों में मिलावट कर लोगों को जहर बेंचने वालों में हड़कंप मचा हुआ है।

एसडीएम के तबादले की मांग को लेकर वकीलों ने दिया धरना

ज्ञापन

समाधान दिवस मे पहुंचे एडीएम की मान मनौवल पर वकीलों ने डीएम को संबोधित सौपा ज्ञापन

लालगंज। एसडीएम लालगंज के तबादले की मांग को लेकर वकीलो ने शनिवार को भी तहसील परिसर मे जमकर बवाल काटा। वकीलों के हंगामा तथा नारेबाजी के चलते संपूर्ण समाधान दिवस मे भी घंटो अफरातफरी का माहौल दिखा। वकीलों ने समाधान दिवस का बहिष्कार किया और एडीएम को डीएम को संबोधित ज्ञापन सौपा। हालांकि वकीलो के समाधान दिवस के बहिष्कार के ऐलान को देखते हुए शनिवार को लालगंज पुलिस छावनी मे भी तब्दील दिखा। सुबह से ही एहतियातन पुलिस तहसील से लेकर चैक तक अलर्ट दिखी। बवाल की आशंका को देखते हुए प्रशासन ने पीएसी भी मुस्तैद कर रखा था। वकीलों के नारेबाजी के बीच तहसील पार्क मे धरने की जानकारी पाकर वहां एडीएम पहुंचे और अधिवक्ताओं का ज्ञापन लेकर डीएम को अवगत कराने की बात कही। एडीएम के मान मनौवल पर अधिवक्ताओं का धरना स्थगित हुआ दिखा। समाधान दिवस के बाद एडीएम ने सीओ कार्यालय मे संयुक्त अधिवक्ता संघ के पदाधिकारियो से वार्ता कर समस्याओं की जानकारी ली।

एसडीएम सौम्य मिश्र पर अधिवक्ताओं के साथ अनुचित व्यवहार तथा वादकारियों के भी कामकाज को प्रभावित करने का आरोप लगाते हुए तीन दिनो से लालगंज के अधिवक्ता आंदोलनरत हैं। शुक्रवार को अधिवक्ताओं ने बैठक के जरिए शनिवार के संपूर्ण समाधान दिवस के बहिष्कार का ऐलान किया था। शनिवार की सुबह तहसील पहुंचे अधिवक्ता एसडीएम के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। वकीलों ने कैम्पस मे विरोध मार्च के बाद पार्क मे धरना

एडीएम को ज्ञापन सौपते लालगंज के अधिवक्ता

शुरू कर दिया। संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश व महामंत्री शेष तिवारी की अगुवाई मे वकील धरने मे एसडीएम के खिलाफ भाषणबाजी करने लगे। इसकी जानकारी पाकर जिले के एडीएम त्रिभुवन विश्वकर्मा धरना स्थल पर सीओ रामसूरत सोनकर के साथ धरनास्थल पर पहुंचे। यहां वार्ता के दौरान अधिवक्ता उनसे एसडीएम के तबादले को लेकर दो टूक बात के तेवर मे दिखे। एडीएम ने डीएम के नाम पारित प्रस्ताव की प्रति लेते हुए वकीलो को समझाया बुझाया। तहसील समाधान दिवस के बाद एडीएम ने संयुक्त अधिवक्ता संघ के पदाधिकारियों से बातचीत भी की। इस दौरान उपाध्यक्ष बीके तिवारी, दिनेश मिश्र, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, शिवाकांत उपाध्याय, संदीप सिंह, टीपी यादव, संतोष पाण्डेय, सुरेन्द्र सिंह, विपिन शुक्ल, शैलेन्द्र सिंह, अनूप पाण्डेय, विनय शुक्ल, सिंटू मिश्र, संजय सिंह, प्रमोद सिंह, घनश्याम मिश्र, मनीष तिवारी, मनोज शुक्ल, शिवेन्द्र तिवारी, अखिलेश द्विवेदी, आदि अधिवक्ता रहे। इधर वकीलों के समाधान दिवस मे बवाल की आशंका को लेकर पुलिस भी अलर्ट दिखी। सुबह ही तहसील गेट पर फोर्स का भारी जमावडा हो उठा। इंदिरा चैक पर भी पुलिस तैनात दिखी। वहीं पीएसी को भी कोतवाली परिसर मे अलर्ट देखा गया। संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश का कहना है कि एसडीएम के तबादले न होने की स्थिति मे सोमवार को भी आंदोलन जारी रहेगा।

जनसंपादकीय

असहाय प्रार्थनाओं के दौर का दस्तावेज है 'वाया नई सदी'

कविता केवल ज्ञान का मार्ग ही नहीं है, बल्कि यह उससे कहीं अधिक जीवन का मार्ग है। उसकी संपूर्णता में ही जीवन की पूर्णता निहित है। मनुष्य के अन्दर आस्था की स्वप्न दृष्टि को जगाने व सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के प्रति वफादार बने रहने के साथ ही सम्पूर्ण मानवता के प्रति संवेदनशील एवं जीवन के प्रति आशावान बने रहने की प्रेरणा भरना कवि धर्म है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तो कविता क्या है निबंध में लिखा है 'कविता वह साधन है जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।' कवि श्रीप्रकाश शुक्ल भी इन समस्त परिस्थितियों से तारतम्य स्थापित करते और उसके इर्द गिर्द रहते हुए एक नए रचना संसार का निर्माण करने वाले नब्बे के दशक के महत्त्वपूर्ण कवि हैं।

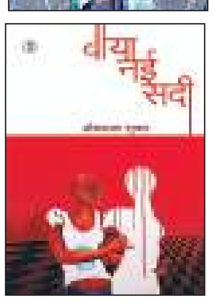

हिन्दी कविता के परिक्षेत्र में कवि श्रीप्रकाश शुक्ल का आगमन तब हुआ, जब राजनीति व संस्कृति और सामाजिक सभ्यता में एक बड़ा बदलाव हो रहा था। जिसके चलते मानवीय संवेदना के क्षरण में एक व्यापक तीव्रता दिखाई दे रही थी। उस वक्त सोवियत संघ का विघटन और शीत युद्ध की समाप्ति के साथ ही विश्व में नव-अधिनायकवाद की स्थापना का एक अलग ही वर्चस्व था। देश के आर्थिक ढांचे की सुधार के चलते उदारीकरण और निजीकरण के नए मॉडल को अपनाने की विवशता के साथ ही पूंजी और संस्कृतियों के वैश्वीकरण तथा संचार क्रांति, तकनीकी और विश्व-बाजार एवं अर्थव्यवस्था के एकीकरण की विवशताओं ने आम आदमी को एक नए युग में धकेल दिया था। इस चुनौतीपूर्ण समय में उन्होंने घबराये बिना उसका डट कर सामना किया और हुए उस पर तीखा प्रहार भी किया। अपने परिवेश से बहुत कुछ सीखते हुए उसकी नब्ज को टटोलना और उस परिवेश की संलग्नता को अपनी रचनात्मकता का हिस्सा बनाना कवि श्रीप्रकाश शुक्ल की विशेषता है। जो न केवल उन्हें संवेदनशील बनाती है बल्कि उन्हें लोक से भी जोड़े हुए महत्त्वपूर्ण कवि होने का दर्जा भी देती है।

नयी सदी की चुनौतियों एवं खतरों के बीच कवि सम्पूर्ण मानवता के प्रति संवेदनशील बना रहता है। वह प्रकृति के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए निरन्तर सृजनशील भी रहता है। कवि की यह जिम्मेदारी है कि वह समाज में हो रहे अन्याय व अनीति की मुखालिफत करे। श्रीप्रकाश शुक्ल इन सभी चुनौतियों को स्वीकारते हुए अपने आसपास व बाह्य एवं आन्तरिक परिवेश के इर्द-गिर्द की हलचलों के प्रति चौकन्नी दृष्टि रखने वाले साहसिक कवि हैं।

'वाया नई सदी' राधाकृष्ण प्रकाशन से हाल ही प्रकाशित उनका सातवां काव्य संग्रह है। जो अपने अनूठे कहन शैली और कोरोजीविता के लिए जाना जाता है। श्रीप्रकाश शुक्ल को कोरोजीवी कविता का सिद्धांतकार भी माना जाता है। सेतु प्रकाशन से प्रकाशित 'महामारी और कविता' में उन्होंने इस सैद्धान्तिकी पर विस्तार से बात की है। क गद्य संकलन है। नये संग्रह में तमाम कोरोजीवी कविताएं हैं। इसमें उत्तर-कोरोना, असहाय प्रार्थनाओं के इस दौर में, बाढ़ और उसके बाद, इंतजार, गुरु के नाम, लौटना, कोरोना में किचन, यह धूप सेंकने का समय नहीं, गुलमोहर, कोईलिया जल्दी कूको ना, बच्चा, रोटी, आदमी जहां टैग है, हरा पपीता, बहुत मृत्यु बहुत जीवन की शुरूआत है और कचकचिया जैसी कविताएं संकलित हैं, जिनमें कोरोजीवी पक्षों को आसानी से देखा और महसूस किया जा सकता है। ऐसा लगता है कि कवि को कोरोनाकाल का पूवार्भास मिल चुका था। एक वर्ष पहले प्रकाशित कविता संग्रह 'क्षीर सागर में नींद' में एक कविता है... बादल बरस रहे हैं/ मेरे भीतर धूल उड़ रही है/ धरती पर चारों ओर हरियाली है/ मेरे भीतर मणिकर्णिका दहक रही है/ सबकुछ विकासमय है/ और मैं स्मार्ट होते शहरों में जंगल की हत्या देख रहा हूं!

वे कोरोनाकाल के ठीक बाद प्रकाशित इस संग्रह में लिखते हैं...

आक्सीजन में घुसी हुई उंगलियों ने अब गिनती बन्द कर दी है/ दिन रात वे अपनी ही धडकनों को मापने में व्यस्त हैं/ हवा में हाहाकार है/ पानी में खदबदाहट है/ जंगल जल रहे हैं/ आकाश में बहुत गहरा धुआं है! इन दोनों कविताओं में कोरोजीवी तत्व के साथ पर्यावरणीय चिन्ता भी विद्यमान है। इससे साफ जाहिर होता है कि कवि सम्पूर्ण मानवता के साथ-साथ अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग एवं संवेदनशील है। इस संग्रह में कोरोनाकाल के अलावा रिश्तों, चुप्पी व उसके पीछे छिपे राज एवम्-जीवन जगत के साथ ही समय समाज की तमाम परिस्थितियों पर लिखी गई कविताएं भी हैं।

संग्रह की 'गाय' शीर्षक कविता बरबस ही ध्यान खींच लेती है। यह कविता महा करुणा का एक आख्यान रचती नजर आती है।

आज जिस तरह से हमारे समाज मे हिंसा व धार्मिक उन्माद बढ़ रहा है, यह वाकई चिन्ता का विषय है। जिस गाय को लेकर समाज के बीच दो पक्षों में इतना बड़ा बखेड़ा खड़ा होता है, गाय उससे बिल्कुल अन्जान बनी हुई है । वह वैसी तो बिलकुल नहीं है, जैसी 'गाय' की छवि होती है। कवि के ही शब्दों में... एक सीधी- सादी गाय अपने सीधे होने के मुहावरे के विपरीत/किस तरह से हिंसक पशु में बदल जाती है/और नाना प्रकार की पशुता को छूट देती हुई/ अपने ही मुहावरे की हत्या कर बैठती है...। कवि गाय के प्रचलित मुहावरे को बदल देता है। इस संग्रह में सत्ता के खिलाफ प्रतिरोधी तेवर भी आपको देखने को मिलेगा। जहां चुप्पा आदमी भी बहुत कुछ कहता नजर आएगा...लेकिन बोलता आदमी जब चुप हो जाए/ तो समझिए कि इस व्यवस्था में/ एक तानाशाह का आगमन हो चुका है/ तानाशाह सीधे सादे वेश में नहीं आता/ वह हमारे मुंह से प्रवेश करता है और जीभ को चीरता हुआ/अंतड़ियों में उतर आता है! श्रीप्रकाश शुक्ल सत्ता के राजनीतिक नारों, वादों और नीतियों के सच की परतों को खोल कर रख देते हैं, उसकी चालाकियों एवं पाखण्डों का भंडाफोड़ कर देते हैं। महामारी के बाद के जीवन को भी कवि का द्रष्टा देखने की कोशिश करता है, बादल होंगे लेकिन नमी नहीं होगी/ आग रहेगी लेकिन ताप नहीं होगा/...रक्षक होंगे लेकिन रक्षार्थ कुछ नहीं होगा/... और तब वे अपने वर्तमान से मुक्त होकर/एक शानदार विरासत का जश्न मनाएंगे/ मानव-मुक्त विकास का जश्न!

संग्रह में तमाम ऐसी कविताएं हैं जो नयी सदी के परिवर्तनों पर सजग निगाह रखती हैं। ढेला, झींगुर, नवता, मित्रता, गुलर, माहताब, समुद्र, चाहत, नियम, जन्मदिन, तुम न बदले, यादें, तो क्या करूं, बादल वंदन मणिकर्णिका, नागनथैया, देव दीपावली व सुबह-ए - बनारस जैसी कविताओं को पढ़ते वक्त लोक में गहरे उसके धंसे होने का भान होता है। कवि अपनी जड़ों की ओर लौटने के लिए भी प्रेरित करता है। 79 कविताओं के इस संग्रह का आवरण पृष्ठ लहूलुहान होते मानवीय अंतसंबंधों की सच्चाई को उजागर करता प्रतीत होता है। इस संग्रह की कविताएं आपको तमाम वर्जनाओं, यातनाओं के विरुद्ध सहती आवाज को बुलंद रखने का साहस प्रदान करेंगी।

मनकामना शुक्ल पथिक
(लेखक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शोधार्थी है)

स्त्री-अंतर्मन की सूक्ष्म कोमलता बाह्य संसार

आकलन

योगेश प्रताप शेखर

रजा फाउंडेशन, नई दिल्ली की 'रजा पुस्तकमाला' के अंतर्गत नए रचनाकारों की पहली किताब भी प्रकाशित होती है । इस में कई कविता-संग्रह, आलोचना की पुस्तकें, उपन्यास आदि प्रकाशित हो चुके हैं । इसी श्रृंखला में समकालीन कवयित्री पूनम अरोड़ा का कविता-संग्रह 'कामनाहीन पत्ता' छपा है । इस कविता-संग्रह में स्त्री-जीवन के विविध आयाम अत्यंत सूक्ष्म रूप से दर्ज किए गए हैं । बचपन, प्रेम, देह, स्मृति, अस्तित्व और संघर्ष से जुड़ी तमाम अनुभूतियाँ बिना किसी आवरण के यहाँ महसूस की जा सकती हैं ।

'कामनाहीन पत्ता' किताब हाथ में लेते ही जिस बात पर ध्यान जाता है वह यह है कि इस में बिना शीर्षक के 139 कविताएँ संकलित हैं । इस दृष्टि से शायद यह पहला कविता-संग्रह है जिस में किसी भी कविता का कोई शीर्षक नहीं है । पहली नजर में यह बात हमें चौंकाती है । फिर यह सवाल मन में आता है कि ऐसी कौन-सी रचनात्मक विवशता है जिस ने इन सभी कविताओं को शीर्षकहीन ही रहने दिया ? क्या कवयित्री के मन में कहीं यह था कि शीर्षक कविता को सीमित करता है ? क्या शीर्षक किसी भी रचना के पूरे वितान को अपनी सीमा में बाँध देता है ? दूसरी बात यह भी मन में आती है कि यदि इन कविताओं के शीर्षक नहीं हैं तो इस से इन की ग्रहणशीलता में कोई परेशानी होती है ? पूरी कविताओं को पढ़ने से ऐसा तो नहीं लगता । इस दृष्टि से इस कविता-संग्रह का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि यह रचना और उस के शीर्षक के संबंध पर दुबारा सोचने को हमें प्रेरित करता है । एक समय था जब रचना के साथ शीर्षक को अनिवार्यतः जुड़ा माना जाता था बल्कि ज्यादातर आज भी माना जाता है लेकिन इस संग्रह ने इस अनिवार्यता को शिथिल किया है ।

पूनम अरोड़ा की कविताओं में स्त्री-जीवन की उपस्थिति सहज ही और बार-बार लक्ष्य की जा सकती है । इन कविताओं में उल्लिखित स्त्री जीवन के बहुविध अनुभवों को सहेजती हुई प्रतीत होती है । ऐसा लगता है कि बाहर की दुनिया का हर अनुभव चाहे वह एक स्त्री के रूप में उसे हुआ हो या सामान्य मनुष्य की तरह उसे भीतरी यात्रा पर ले कर निकल जाता है । भीतर की यह यात्रा अत्यंत गहरी जैसे किसी सुरंग में चलती हुई लगती है । ऐसा कई बार लगता है कि बाहर की दुनिया उसे बार-बार एक 'स्त्री' के रूप में सीमित करना चाहती है और वह भीतर की यात्रा में अपने मनुष्य मात्र के रूप को बचाए रखना चाहती है । 10 वीं कविता की अंतिम दो पंक्तियों में इसी सीमित किए जाने का अंकन है :

काश ! कि अपने जीवन के हर फैसले से पहले
मैं याद नहीं करती अपनी गुँथी हुई दो चोटियाँ

ये 'दो चोटियाँ' श्रृंगार-साधन नहीं हैं बल्कि एक स्त्री या लड़की को सीमित किए जाने का उपक्रम है । जीवन के हर निर्णय में यह एहसास होना कि वह लड़की है अत्यंत यंत्रणादायक है । इसीलिए 111 वीं कविता में स्पष्ट घोषणा हमारे सामने आती है :

अब मेरे पास बहुत विकल्प हैं
केवल एक विकल्प त्याग दिया है मैंने
स्त्री होना

वैसे तो किसी भी मनुष्य को समझने में यह सहायक होता है कि उस का बचपन किस प्रकार बीता है लेकिन लड़कियों के मामले में यह अलग से विचारणीय है । ऐसा इसलिए कि बचपन ही वह समय है जब पितृसत्ता की बारीक लकीरें लड़की के मन पर खिंचने लगती हैं और यह पितृसत्ता उसे एक भिन्न रूप में गढ़ने लगती है । 'कामनाहीन पत्ता' की कविताओं में बचपन के अनेक प्रसंग तथा बिंब हैं । इन में से अधिकांश यंत्रणा भुगतती लड़की के बयान हैं । क्रूर पितृसत्ता की उपस्थिति किसी भी लड़की को किस प्रकार चूर-चूर कर देती है उस का विवरण इस संग्रह की कई कविताओं में चित्रित है । उदाहरण के लिए संग्रह की दूसरी कविता की पंक्तियाँ है :

मुझे घर के सब रंग पता थे
फिर भी
मैं उन्हें किसी और रंग में रँगना चाहती थी
किसी ऐसे रंग में जिसमें पिता के दुश्चरित्र होने की जंगली खुम्ब-सी गंध न हो
न हो उसमें माँ की वहशी नफरत पिता के लिए

इसी प्रकार सातवीं कविता में बचपन, इतिहास और स्मृति के रिश्ते को जीती हुई एक लड़की कहती है :

मेरा बचपन गले तक भरा है
रक्तिम विभाजन के जख़्मों से
मैंने इतनी कहानियाँ सुनी हैं नानी से सात बरस की उम्र से
कि अब वो गदराये मृत लोग चुपचाप बैठे रहते हैं मेरी पीठ से पीठ टिकाकर
सूरज रोज एक तंज करता है
कि मैंने कितनी कहानियाँ और अपने पुरखों की पीली आँखें भुला दी
मैं सोचती हूँ
क्या सच में ऐसा हुआ है

ऊपर की कविता की अंतिम पंक्ति में जो सवाल है उस का जवाब इस संग्रह की कविताएँ देती हैं और हम यह कह सकते हैं कि ऐसा बिलकुल नहीं हुआ है कि एक लड़की ने अपने पुरखों की पीली आँखें भुला दीं ।

'कामनाहीन पत्ता' की कविताओं में प्रेम की उपस्थिति बहुतायत है । इस प्रेम में एक वयस्क लड़की की पूरी दुनिया पैवस्त है । उद्दाम लालसा, समर्पण, देह के साथ एवं देह के परे रचा गया साझा सुख और इन सब के बावजूद एक रिक्तता का एहसास इन कविताओं में हमें महसूस होता है । जिस प्रेम के बारे में यह माना जाता है कि वह व्यक्ति को पूर्णता की अनुभूति कराता है उसी प्रेम के बारे में ये कविताएँ हमें ध्यान दिलाती हैं कि प्रेम में शत-प्रतिशत भागीदारी के बाद भी एक रिक्तता और अपूर्णता का एहसास होता है जो अत्यंत विदीर्ण करने वाला है । यह रिक्तता और अपूर्णता क्यों है ? इस सवाल की बेचैनी पाठक को भी झकझोरती रहती है । आखिर क्या वजह है कि :

मेरे स्त्री होने की सतह पर
तुम्हारी कई खण्डित आकृतियाँ स्वप्नों की तरह बिखरी हुई हैं
मेरी बेचैनी उन्हें मानवीय होने नहीं देती
और तीक्ष्ण अनुभूतियाँ उन पर परिहास करती हैं

या फिर :

मैं मारी जाने से पहले भी
केवल प्रेमिका थी
और मारी जाने के बाद भी

इस से यह स्पष्ट है कि प्रेम स्त्री के जीवन का महत्त्वपूर्ण अनुभव है लेकिन इतना महत्त्वपूर्ण नहीं कि उस का अपना अस्तित्व ही उस में समाप्त हो जाए ।

स्त्री के लिए उस की देह एक अलग अनुभव है । इस का एक कारण तो प्राकृतिक है क्योंकि स्त्री-देह की संरचना बिलकुल ही अलग और विशिष्ट है । पर इस के साथ यह बात भी है कि पूरा पुरुष-प्रधान समाज एक स्त्री को प्रथमतः और अंततः एक देह में ही सीमित कर देना चाहता है । आखिरकार जब एक लड़की एक सड़क पर निकलती है तो उस की देह को न जाने कितनी और कैसी नजरों से देखा ही नहीं बल्कि जाँचा-परखा जाता है । इसलिए देह स्त्री के अनुभव संसार का सघन बिंदु है । इस अनुभव को अभिव्यक्त करने के लिए एक निर्भीकता और आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है । इस कविता-संग्रह में देह को ले कर न तो किसी प्रकार की कुंठा है और न ही लज्जायुक्त गोपन भाव । यह एक साहस है जो इन कविताओं की एक विशेषता है । ऐसा इसलिए भी कि देह से जुड़े अनुभवों को अभिव्यक्त करने के लिए अत्यंत सावधानी जरूरी है । थोड़ा-सा सन्तुलन बिगड़ा कि सब भरभराकर गिर जाता है । प्रेम की स्मृति से ओत-प्रोत 11 वीं कविता में देह और प्रेम एक साथ सधे रूप में प्रकट होते हैं :मेरी भाषा के

घुमावदार अवयवों में
वो सब आरोपित रातें हैं
जिसकी पहेली को सुलझाने की
तुम्हारी तमाम कोशिशें
लगातार बुखार बन कर मेरी देह पर
केसरी धागे छोड़ जाती थीं

प्रेम से जुड़ी इन कविताओं की एक विशेषता और है कि इन के संदर्भ में बुद्ध का जिक्र बार-बार आता है । इस पूरे संग्रह में बुद्ध की आवृत्ति अनेक बार हुई है । यहाँ तक कि इस कविता-संग्रह का शीर्षक 'कामनाहीन पत्ता' पदबंध भी एक कविता में बुद्ध के संदर्भ में ही आया है । 19 वीं कविता की शुरू की दो पंक्तियाँ हैं :

तुम इतने बोधगम्य हो
जैसे समाधिस्थ बुद्ध के पास पड़ा एक कामनाहीन पत्ता

इस का कारण क्या यह समझा जा सकता है कि समाज द्वारा या जीवन द्वारा मिले हर दुख तथा दर्द के बाद विद्रोह के स्थान पर करुणा इन कविताओं का स्थायी भाव है ? ऐसा नहीं है कि इन कविताओं में सत्ता का रूप अभिव्यक्त नहीं है लेकिन उस के प्रति विद्रोह की जगह एक व्यापक करुणा इन कविताओं में अनुस्यूत दिखाई देती है ।

इस संग्रह की एक और अनूठी विशेषता है कि इस में सूक्तियों की तरह अनेक पंक्तियाँ हैं । उन में कई बार बेध देने वाली तुलना होती है या रूपक होता है तो कई बार मन को छू लेने वाले बिंब । अलग-अलग कविताओं से कुछ ऐसी ही पंक्तियाँ नीचे दी जा रही हैं । पहले तुलना और रूपक :

मेरी उम्र की ईर्ष्या से मैं हार जाती थी (कविता संख्या 2)
या तुम्हारी सर्प-सी कविताएँ (कविता संख्या 8)
निर्वाण और नींद
इनकी पंखुड़ियों को मैंने कब का नोच डाला है (कविता संख्या 9)
उँगलियों की बत्तखी भाषा सीखी (कविता संख्या 14)
उसे कविताओं के ईश्वर से घृणा है
मुझे यथार्थ के ईश्वर में दिलचस्पी नहीं (कविता संख्या 41)

और अब कुछ बिंब-विधान से जुड़ी पंक्तियाँ :

सत्ता एक सांस्कृतिक पोस्टमार्टम है (कविता संख्या 47)
जिसके पास फन वाला एक साँप हो
जो मुँह अँधेरे
नहाती हो नग्न तालाब पर जाकर
लपेटती हो साँप को अपनी कमर के इर्द-गिर्द (कविता संख्या 48)
देह के कमल रहस्यों में खुद को खोजते
जैसे कोई अधूरी कविता को दुहराता है बार-बार (कविता संख्या 51)
मेरी सड़कें बहुत लम्बी नहीं
गहरी हैं बहुत
कब्र जितनी (कविता संख्या 77)

'कामनाहीन पत्ता' की कविताओं में हमारी भेंट एक ऐसी स्त्री से होती है जिस के भीतर संवेदना का बहुत अधिक हाहाकार है । बाहर की यंत्रणा उसे भीतर की यात्रा पर ले जाती है जो अनेक तरह की दुर्गम खाइयों तथा घाटियों की तरह है । मानवीय अनुभूति का शायद वह ऐसा लोक है जहाँ तक भाषा की पहुँच संभव नहीं हो पाई है या हुई भी है तो अत्यंत थोड़ी ! इस यात्रा और उस लोक को अभिव्यक्त करने के लिए एक अत्यंत सशक्त भाषा की जरूरत होगी जिस की तलाश शिद्दत से कवयित्री को करती रहनी होगी । ऐसा नहीं होने से अमूर्त का प्रकटन अमूर्त भाषा में ही रह जाने की संभावना है जिस के कुछ संकेत इस कविता-संग्रह में भी हमें मिलते हैं । इस से इस कविता-संग्रह के महत्त्व पर कोई नकारात्मक असर नहीं पड़ता । 'कामनाहीन पत्ता' स्त्री कविता के प्रति उम्मीद और आश्वस्ति की कामना जगाता है ।

(सहायक प्राध्यापक (हिंदी), दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय)

आदिवासियों को मृत्यु का शोक भी ज्यादा परेशान नहीं करता

'बस्तर-बस्तर' उपन्यास के लेखक लोकबाबू जी से नीरज की बातचीत

साक्षात्कार

आदिवासी समाज की संस्कृति के प्रति हमारे सुसंस्कृत समाज का व्यवहार कैसा है? इस सम्बंध में आपके अनुभव क्या हैं?

हरेक समाज की अपनी अलग संस्कृति होती है, आदिवासी समाज की भी अपनी अलग संस्कृति है। सभी को अपनी संस्कृति भली और बेहतर लगती है, मगर आदिवासी अपनी संस्कृति की उच्चता का डिंडोरा नहीं पीटते। शहरी सुसंस्कृत समाज दम्भ से भरा समाज है जो आदिवासी समाज को निचली श्रेणी के मनुष्य का समाज मानता है। उसका व्यवहार आदिवासी के प्रति तरस खाती हेय दृष्टि से भरा होता है। उन पर अपने कर्मकाण्ड लादने, अपना धर्म अपनाने और जोर जबरदस्ती से उसे 'सुधरने' के लिए बाध्य करने की कोशिश करता है। असफल होने पर कहता है- तुम्हारा भगवान ही भला नहीं कर सका तो कोई और क्या कर लेगा?

आदिवासी समाज में उत्सवधर्मिता का कितना महत्व है?

आदिवासियों में समय की कमी का रोग अभी फैला नहीं है, क्योंकि उनके मन में न सम्पत्ति संग्रह का लालच है न कोई भारी महत्वाकांक्षा ही बसती है। जो थोड़ा मिल गया उसी में संतुष्ट हो जाने के कारण उनके पास समय काफी निकल आता है। उनके पास दीगर मनोरंजन के साधनों भी नहीं हैं। जीवन में आई हर घटना को वे प्रकृति प्रदत्त मानते हैं और सहज स्वीकार लेते हैं। बस्तर में 'गोटुल' के रहते तक हर शाम से उनका नाच गाना आरंभ हो जाता था, लेकिन अब 'गोटुल' के न रहने पर भी समाज में उपस्थित किसी भी अवसर को वे उत्सव की तरह मनाते हैं। मंद पीते हैं और नाच उठते हैं। गाने लगते हैं। मृत्यु का शोक भी उन्हें अधिक दिनों तक शोकसंतप्त नहीं रख सकता।

आदिवासी जीवन और साहित्य में विद्रोही आन्दोलनों या अभियानों की क्या भूमिका रही है ?

एक आदिवासी का सम्पूर्ण जीवन ही जीवनयापन के लिए संघर्ष करता बीतता है। प्रकृति का प्रकोप, जंगली जीवों का डर और अब शहरी आबादी के बढ़ते दबाव से वह अपने जीवन को बचाता फिरता रहता है। उसका घर (झोपड़ी ही सही) है, मगर स्थायी नहीं है। जीवनयापन के लिए वह वनोपज पर ही निर्भर है।

सदियों से वह जंगल को अपना समझता रहा है, मगर जब अंग्रेजों के शासनकाल (1910) में अतिक्रमण हुआ तो वह अपने राजा के खिलाफ भी उठ खड़ा हुआ था। समय समय पर अनेक ऐसे मौके आये, उसने देखा, सहा। उसकी कल्पना में ये संघर्ष उसकी रचती-बनती-संशोधित होती कल्पनाओं में, मिथकों की शक्ल में उसके जेहन में बस गई, जो उसकी बोली में, साहित्य में, कथाओं/गीतों के रुप में प्रकट होती रहती है।

बस्तर समस्या की ओर आपका ध्यान कैसे गया और इस पर उपन्यास लिखने के बारे में कब और क्यों सोचा? साथ ही थोड़ा इसकी रचना प्रक्रिया के बारे में बतलाइये।

बस्तर मेरे अपने गृहजिले राजनांदगांव से लगा हुआ जिला रहा। बस्तर के समाचार मुझे मिलते रहे। बस्तर के संबंध में लिखी कुछ किताबे भी मैंने पढ़ी, जिनमें वहां की समस्याएँ तो थीं, प्रशासन और नक्सलियों के विचार भी दिखते थे, मगर वहां के आदिवासी लोगों के विचार और जीवन नदारत था। शायद इसकी आवश्यकता भी नहीं समझी गई।

मैंने इस पर शुरू में एक कहानी लिखने की कोशिश की, फिर लगा कि बस्तर की जो भारी समस्या है, आदिवासी जीवन का जो संघर्ष है उसे एक कहानी में समेट पाना मुश्किल है। वह शुरूआती कहानी ही थी जो बढ़ते-बढ़ते उपन्यास की शक्ल पा गयी। इस हेतु मैंने दसकों बार वहां की यात्रा की। आदिवासियों से मिला, उन्हें सुना। वर्जित जगहों पर भी गया। पुराने अखबारों की खबरें पलटीं। फिर एक एक अध्याय को कई बार लिखा, सुधारा तब ही कुछ बनने जैसा आभास हुआ। अब यह उपन्यास कितना अपील करता है यह पाठक ही बता पायेंगे।

बस्तर समस्या पर आपके उपन्यास से पहले भी अनेक उपन्यास आये हैं, उनकी चर्चा प्रशंसा भी खूब हुई। ऐसे में 'बस्तर बस्तर' उपन्यास किस तरह से अन्य उपन्यासों से अलग है?

दुर्भाग्य से मैंने दो-तीन को छोड़कर ज्यादा कुछ नहीं पढ़ा। मुझे उपलब्ध भी नहीं थे और मैंने भी ज्यादा प्राप्ति की कोशिश नहीं की। असल में मैं ज्यादा कुछ लिखना चाहता भी नहीं था। वह तो एक कहानी ही थी, जो अपनी एक रौ में बहते-बहते उपन्यास में तब्दील हो गई। फिर जो पढ़ा भी तो उनमें बस्तर की समकालीन मूल समस्या, आदिवासियों का पक्ष, उनकी संस्कृति, लोकजीवन की कमी मुझे नजर आयी। मैं इस कमी को दूर करना चाहता था। संभव है अब भी कुछ कमी रह गई हो!

इस उपन्यास की नायिका 'इरमा' न चाहते हुए भी तात्कालिक परिस्थितियों के कारण 'गुफा पल्टन' का हिस्सा बनने के लिए मजबूर हो जाती है, जबकि बस्तर में 'गुफा पल्टन' से जा मिलने का सीधा मतलब होता है सरकार/प्रशासन की नजरों में दुश्मन बन जाना। ऐसे में एक महिला की दृष्टि से इस तरह फैसला लेना कितना चुनौतीपूर्ण होता होगा?

बस्तर में महिलायें यूं भी उतनी कमजोर नहीं हैं जितनी शहरी संस्कृति की महिलाएं। इरमा की माँ हिड़मा भी सारे निर्णय खुद लेती है और बाद में कुछ हद तक इरमा भी वैसा ही करती है। बस्तर का आदिवासी अपने जीवन में न प्रशासन का दखल पसंद करता है न नक्सलवादियों का। मगर जब एक को चुनने की मजबूरी हो और अपना, परिवार का, समाज का जीवन दांव पर लगा हो और फिर हर हाल में मृत्यु को वरण करना ही हो तो वह निर्णय लेना ही पड़ता है। प्रशासन की गतिविधियों ने तो उसे लगभग मार ही डाला था। उसे नक्सलियों ने नया जीवन दिया था। इसलिए वह अपना बाकी जीवन भी नक्सलियों को समर्पित कर देती है।

बस्तरिया जीवन और आपके उपन्यास दोनों में ही 'सलवा जुडुम' का विशेष महत्व है। इसके बारे में थोड़ा बतलाइये।

'सलवा जुडुम' कहने को एक 'शान्ति अभियान' था, मगर असल में वह एक युद्ध का शंखनाद ही था। आदिवासियों को नक्सलियों का भय दिखाकर उनके गांव-घरों से, जंगल से निकालकर सड़कों के किनारे कैम्पों में छोड़ देना और फिर नक्सलियों को असहाय समझ उनका उन्मूलनकर उपयोगी जंगलों को, खनिजों से भरे पहाड़ों को बड़े पूंजीपतियों के हवाले कर देना। ऐसा अभियान दुनिया के और देशों में भी चला। कहीं शासन को सफलता मिली और कहीं नहीं भी।

आरंभ में प्रचारित यही किया गया था कि यह आदिवासियों का स्वस्फूर्त आन्दोलन है, मगर वह झूठ था। दिग्भ्रमित आदिवासी किशोरों को एसपीओ (रढड) बनाकर उनके हाथों में प्रशासन द्वारा बंदूकें थमा दी गई थीं। आदिवासी आदिवासी का नरसंहार करने लगा था। कोर्ट के दखल के बाद ही इस 'सलवा जुडुम' को रोका गया। मगर आज भी अनेक जगहों पर वे कैम्प हैं और आदिवासी वहां से पूरी तरह अपने गांव नहीं लौट पाये हैं। नक्सलियों ने उन्हें अपना गांव छोड़कर न जाने की हिदायत दी थी, मगर वे चले गये थे, अब डर है कि लौटने पर नक्सली उन्हें नहीं छोड़ने वाले!

उपन्यास में तेंदूपत्ता के ठेकेदारों का उल्लेख अनेक जगह आया है। आपकी दृष्टि में आदिवासी लोगों की बदहाली के लिए ये ठेकेदार(सेठ) किस हद तक जिम्मेदार हैं?

बस्तर में तेंदूपत्ता संग्रहण का कार्य (सीमित दिनों के लिए ही सही) बड़े पैमाने पर होता रहा है। आदिवासी नकद राशि पाने की आशा में बड़ी संख्या में उसमें जुड़ते रहे। मगर उन्हें आसपास के राज्यों की बनिस्बत बहुत कम मजदूरी मिलती रही। उन्हें अन्य राज्यों के बराबर मजदूरी का लाभ मिले, इस हक की लड़ाई में नक्सलियों ने उन्हें आन्दोलित किया। बाद में मजदूरी बढ़ा भी दी गई। शुरूआत में नक्सलियों के प्रति आदिवासियों के मन में जो संदेह की भावना थी, तब दूर हो गई थी। इस आन्दोलन से नक्सलियों को दण्डकारण्य के विशाल भूभाग में पांव पसारने का अवसर भी मिल गया था।

मगर सिर्फ तेंदूपत्ता संग्रहण में ही नहीं, उनके द्वारा संग्रहित अन्य वनोपज में भी अन्य ठेकेदारों/व्यापारियों/शहरी दलालों द्वारा शोषण होता रहा था। नक्सलियों की सह पाकर आदिवासी अब थोड़े सतर्क हुए। आदिवासियों की बदहाली के लिए सिर्फ तेंदूपत्ता ठेकेदार ही जिम्मेदार नहीं थे। वनोपज की दूसरी चीजों के ठेकेदारों के अलावा सरकारी कर्मचारी, अधिकारी और स्वयं सरकार की लम्बे समय तक अनदेखी भी इसकी जिम्मेदार रही है।

इस उपन्यास को पढ़कर लगता है लिखने से पहले लेखक ने पर्याप्त तैयारी की है। लेकिन मेरा सवाल है कि आपके इस उपन्यास में कितना हिस्सा यथार्थ और कितना कल्पना से निर्मित है?

बिना तैयारी के यह लिखा जाना संभव भी नहीं था। तैयारी के साथ ही साथ इसे लिखने में मुझे साढ़े चार साल भी देने पड़े। अनेक संशोधन भी करने पड़े। कुछ छोड़ता तो कुछ जोड़ता रहा सालों। मैं चाहने लगा था कि इस उपन्यास में 'बस्तर' को व्यापक फलक में प्रस्तुत किया जाये, जिसमें नक्सली, प्रशासन, मुख्यधारा के वामपंथी, सामान्य नागरिक और आदिवासियों की दृष्टि का भी समावेश हो।

यह बताना तो मुश्किल है कि इसमें कितना हिस्सा यथार्थ है और कितना कल्पना का है। मोटे तौर पर इतना कहा जा सकता है कि यथार्थ की जमीन पर मैंने कुछ कल्पना के बीज रोंपे हैं। बस्तर को जानने समझने की कोशिश में वहां विचरण के अवसर पर जो भाव फिजा में तैरते रहे, उन्हें लपक कर मैंने उपन्यास की शक्ल में सामने रख दिया।

(लोकबाबू , 'बस्तर-बस्तर' उपन्यास के लेखक का सम्पर्क नम्बर 9977030637, साक्षात्कार कर्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के शोधछात्र हैं, संपर्क 9716632367)

अनामिका सिंह के गीत

1. रूढ़ियों की बेड़ियाँ

दूर तक छाया नहीं है , धूप है,
पाँव नंगे राह में कीले गड़े ।
लोक-हित, चिंतन बना,
साधन हमें
खोदना है रेत में,
गहरा कुआँ ।
सप्तरंगी स्वप्न देखे
आँख हर,
दूर तक फैला
कलुषता का धुआँ ।
कर रहे पाखण्ड
प्रतिनिधि बैर के ।
हैं ढहाने दुर्ग
सदियों के गढ़े,
रूढ़ियों की बेड़ियाँ
मजबूत हैं ।
भेड़ बनकर
अनुकरण करते रहे,
स्वर उठे कब हैं
कड़े प्रतिरोध के ।
जो उठे असमय वही
मरते रहे ।
सोच पीढ़ी की
हुयी है भोथरी,
तर्क चिंतन में
हुए पीछे खड़े
हो सतह समतल
सभी के ही लिए
भेद न हो , वर्ग में
अब न बँटें
खोज लें समरस
सभी निष्पत्तियाँ
शाख रूखों से नहीं
ऐसे छँटें
काट दें नाखून
घातक सोच के ,
चुभ रहे सद्भाव के
बेढब बढ़े ।

2. गंगी खड़ी उदास

बीती सदियाँ कुएँ जगत पर,
गंगी खड़ी उदास,
मिटी न जोखू प्यास ।
छल से बल से सामंतों के,
रहा सदा आधीन ।
मंद हुई कब गति शोषण की ,
हुआ दीन अति दीन ।
हर विमर्श के नाम
दमन का,
बढ़ता रहा परास ।
पैरहन बदले
नित सत्ता ने,
बढ़ते गये विकार ।
रहे समानांतर
दूरी पर,
शोषित के अधिकार ।
ऊँच -नीच की
पटी न खाईं,
हुए नहीं आयास ।
सद्भावों के
दृश्य लुप्त हैं,
बन्ध्या हर उम्मीद ।
समरसता की,
भेदभाव ने
की तस्वीर पलीद ।
ऐसे दोजख से
की जाती है
क्या कोई आस ?

3. न बहुरे लोक के दिन

मूँद कर आँखें
भरोसा था किया,
न बहुरे लोक के दिन ।
खेत चलकर आ गये
चकरोड पर ।
और फसलों ने रखा
व्रत निर्जला,
रेंगती मुंसिफ के जूँ
न कान पर ।
दाँव बदले चाँद,
ज्यों षोडश कला ।
न्याय पैंताने डुलाता
है चँवर,
न टरते शोक के दिन ।
आवरण में नित
ककहरे झूठ के,
हैं परोसे तंत्र ने
जन के लिए ।
चेतना के पाँव
कीले हैं गये ।
सत्य का हर
स्वर
विलोपन के
लिए ।
रोकनी हैं मिल
दमन की पारियाँ,
न हैं अब धोक के दिन ।
हर कलम का जो,
असल दायित्व है ।
धार पर चल
चेतना का स्वर भरे ।
क्यों कहेगी बात
न ईमान की,
डर बिगाड़े का कलम
कब मन धरे ।
जो जबर बन छल रहे
लो ,आ गये
उन्हीं की टोक के दिन ।

4. जीवन के अनुभव झुर्री में

जीवन के अनुभव झुर्री में
कर्मठता की खान ।
खेत सिवाने उम्र कटी है ,
संतति की खातिर ।
धूप ओढ़कर छाँव उगाई ,
जिसने नंगे सिर ।
विषम हाल में चढ़े जतन से,
जीवन के सोपान ।
कामगार , मजदूर , लिपिक हैं ,
इनके अनगिन रूप ।
संतानों ने फटक दिये
ज्यों फटके थोथा सूप ।
वृद्धाश्रम में गाड़ दिये जा
होकर मुक्त मचान ।
कल तक ये छतनार वृक्ष थे
जब भारी थी जेब ।
सेवा निवृत्त हुये आँख के तारे
करें फरेब ।
ये शुभता के बोधिवृक्ष हैं
वक्त रहे पहचान ।

5. मौन रहना हम सभी का अब भयानक है !

न्याय की पलटी तराजू
सत्य की हँस डाँड़ मारे ,
वंचितों का स्वर बने जो
दण्ड के खोले किवारे ।
न्याय के अन्याय से कब
सच गया छक है !
बाँटते संकेत पर भय
तान बन्दूकें दरोगे ,
और रख झूठी दलीलें
फैसले दें श्याम चोगे ।
कोई भी उम्मीद
इनसे झूठ
नाहक है ।
डंक जहरीले चुभातीं
नव पनपती आस्थाएँ ,
और पुजती जा रहीं हैं
मुँह सिले फिर भी शिलाएँ ।
आग है,
धर्मांधता के हाथ
चकमक है !

कवयित्री विज्ञान एवं समाज-शास्त्र की परास्नातक हैं। संपर्क 9639700081

हमलाकर हत्या का प्रयास करने वाले पांच गिरफ्तार

कामयाबी

पुलिस ने कानूनी कार्यवाई कर आरोपियों को भेजा जेल

जनसंदेश न्यूज

मिजार्पुर। विन्ध्याचल थाना पुलिस ने हत्या करने की नियत से गैपुरा में विजय मिश्र के साथ मारपीट करने वाले 5 अभियुक्त को आज गिरफ्तार किया। जिसका खुलासा एसपी सिटी श्री कांत प्रजापति ने पुलिस लाइन में पत्रकार वार्ता के दौरान किया। पकड़े गए आरोपी अकोढ़ी गाँव के निवासी हैं। पुलिस ने नामजद बऊ सिंह उर्फ नागेन्द्र प्रताप सिंह पुत्र स्व0अमर बहादुर सिंह, अतुल सिंह उर्फ मृगेन्द्र प्रताप सिंह पुत्र सुरेन्द्र प्रताप सिंह, नीतीश सिंह उर्फ गोलू सिंह पुत्र कोमल सिंह, नीरज सिंह

जानकारी देते एसपी सीटी

पुत्र राजेन्द्र सिंह एवं मिन्टू सिंह उर्फ आशीष पुत्र विरेन्द्र प्रताप सिंह को गिरफ्तार किया गया। थाना विन्ध्याचल में 22 दिसम्बर को क्षेत्र के अकोढ़ी ग्राम निवासी विजय मिश्र ने नामजद अभियुक्तों के खिलाफ एक राय होकर जान से मारने की नियत से मारपीट कर गंभीर रूप से घायल करने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी थी। तहरीर के आधार पर विन्ध्याचल थाना में हत्या के प्रयास समेत विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था। गैपुरा चौकी इंचार्ज उप निरीक्षक रविकान्त मिश्रा ने घटना से सम्बन्धित 5 अभियुक्तोंबऊ सिंह उर्फ नागेन्द्र प्रताप सिंह .अतुल सिंह उर्फ मृगेन्द्र प्रताप सिंह, नीतीश सिंह उर्फ गोलू सिंह, नीरज सिंह तथा मिन्टू सिंह उर्फ आशीष को गिरफ्तार किया। सभी आरोपी अकोढ़ी गाँव के रहने वाले हैं। सभी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। आरोपी बऊ सिंह पर दो मामले पहले से दर्ज हैं। जबकि मिन्टू सिंह पर भी मामला दर्ज हैं। अकोढ़ी ग्राम निवासी विजय मिश्र ने पूर्व प्रधान के कराए गए विकास कार्यों की जांच के लिए जिलाधिकारी को शिकायती पत्र सौंपा था। जिस पर खार खाए लोगों ने गैपुरा बाजार से लौटते समय विजय मिश्रा की पिटाई कर दी थी। कोर्ट से अंतरिम राहत मिलने पर पुलिस की पकड़ से दूर थे। अंततः कोर्ट से राहत न मिलने पर पुलिस ने आरोपियों को धर दबोचा ।

रेलवे कॉरिडोर में चोरी करने वाले 2 गिरफ्तार, कब्जे से मिला सामान

जनसंदेश न्यूज

मीरजापुर। पडरी पुलिस ने चोरी करने वाले गैंग का पदार्फाश किया हैं । जिसका खुलासा पुलिस लाइन में एसपी सिटी श्री कांत प्रजापति ने किया। निमार्णाधीन रेलवे कारिडोर स्थल से चोरी की 13 सटरिंग प्लेट, सरिया

कटिंग मशीन व ट्रैक्टर के साथ 2 लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया।

पड़री थाना पर 6 जनवरी को कार्यदायी संस्था कर्मी प्रयागराज निवासी अंकित मिश्र ने लिखित तहरीर दी थी। कहा था कि धनही गाँव के पास रेलवे लाइन का निर्माण कार्य चल रहा है। वहा रखे 13 सटरिंग प्लेट तथा सरिया कटिंग मशीन चोरी कर लिया गया हैं। जिस पर पैड़ापुर पुलिस चौकी प्रभारी उप निरीक्षक अनिल कुमार व आशुतोष सिंह ने पुलिस बल के साथ पड़री क्षेत्र से गिरजा शंकर पुत्र बिहारी राम तथा राजनाथ गुप्ता पुत्र गिरधारी गुप्ता को गिरफ्तार किया।अभियुक्तों की निशानदेही पर चोरी की 13 सटरिंग प्लेट तथा एक सरिया कटिंग मशीन जिसकी कीमत करीब 2.10 लाख हैं। चोरी की वारदात को अंजाम देने के लिए प्रयोग किए गए ट्रैक्टर-ट्राली को भी बरामद किया गया । कानूनी कार्यवाही करते हुए दोनों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया । एसपी सिटी श्रीकांत प्रजापति ने ने कहा कि रेलवे कारिडोर निर्माण स्थल से सामानों के चोरी की शिकायत मिल रही थी। जिस पर पड़री पुलिस सक्रिय हुई। गायब हुए सामानों को जप्त कर दो लोग गिरफ्तार किया गया। कानूनी कार्रवाई करते हुए आरोपियों को जेल भेजा गया ।

संक्षेप

50 ट्रकों पर लगाया गया रेट्रोरिफ्लेक्टर टेप

लालगंज। पुलिस उपाधीक्षक दीक्षांत राज एवं थाना प्रभारी ज्ञानू प्रिया के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा 2023 अभियान के क्रम में ट्रक व अन्य वाहनों पर रेट्रोरिफ्लेक्टर टेप लगाकर 50 ट्रकों पर लगाया गया। और ट्रक ड्राइवर को जागरूक किया गया। जागरूक करते हुए थाना प्रभारी ने ट्रक ड्राइवर को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। थाना क्षेत्र के एफसीआई केंद्र पगार गोदाम पर 50 ट्रकों पर रेट्रोरिफ्लेक्टर टेप लगाकर यातायात संबंधी नियमों का पालन करने तथा शीत ऋतु में पडने वाले कोहरे से होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु वाहनों में रेट्रोरिफ्लेक्टर टेप लगाने तथा अन्य लोगों को भी इसका पालन करने हेतु प्रोत्साहित करते हुए अपील की गई की इसका प्रचार प्रसार ज्यादा से ज्यादा लोगों तक किया जाए। इस अभियान के दौरान उपाधीक्षक दीक्षांत राज के साथ थाना प्रभारी ज्ञानू प्रिया एवं वरिष्ठ उप निरीक्षक इरफान अली मय पुलिस स्टाफ के साथ उपस्थित रहे।

बीएचयू के छात्रों ने सौंपा पत्रक

मीरजापुर। राजीव गांधी दक्षिण परिषद के छात्रों ने ग्रंथालय के समय को बढ़ाने को सहित 6 सूत्रीय मांग को लेकर प्रदर्शन किया, जहां पर प्राचार्य को पत्र सौंपा। राजीव गांधी दक्षिणी परिसर के छात्र लगातार लाइब्रेरी के समय बढ़ाए जाने की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे हैं। ऐसे में शुक्रवार को छात्रों ने ग्रंथालय के सामने प्रदर्शन किया था, जहां पर शनिवार को प्रचार्य को पत्र सौंपा। इस दौरान छात्रों ने मांग किया कि परिसर में ग्रंथालय का समय सुबह 8:00 से रात के 8:00 बजे तक किया जाए, जो कि पहले से लागू है। पहले यह नियम ही लागू था। ग्रंथालय में वाई-फाई की सुविधा कराया जाए, जहां पर किताबों की प्रतिपूर्ति कराया जाए। सभी संकाय के छात्र व छात्राओं को पुस्तकालय कार्ड बनाया जाए। छात्रों ने कहा कि अगर उनकी मांग पूरी नहीं होती है तो आगे वह धरने पर बैठेंगे। इस मौके पर हिमांशु पाल, दीपक झा, आदित्य महतो आदि मौजूद रहे।

नवयुवक अधिवक्ताओं को दिलायी गयी शपथ

चुनार। तहसील प्रांगण में नवयुवक अधिवक्ता समिति में चुने गए अध्यक्ष राजेश मिश्र, उपाध्यक्ष राज्य पाल यादव व महामंत्री राहुल सिंह को मुख्य अतिथि आशीष पटेल कैबिनेट मंत्री उत्तर प्रदेश विधान परिषद तकनीकी शिक्षण व उपभोक्ता बाट माप मंत्री ने चुने गए सदस्यों को शपथ दिलाई। पदाधिकारियों में मनोज कुमार यादव कोषाध्यक्ष को शपथ दिलाई व एसडीएम चुनार नीरज पटेल ने सदस्यों को शपथ दिलाई बार एसोसिएशन के तरफ से मुख्य अतिथि को अंग वस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने कहा कि वाराणसी के करीब चुनार होने से चुनार क्षेत्र को नए ग्रेडेड वाराणसी के रूप में विकसित करने का प्रयास करूंगा और जिले में जितने भी तहसील हैं। सभी अधिवक्ताओं को कोशिश करूंगा। उनके हक के लिए प्रयास करूंगा। इस दौरान मेघनाथ सिंह, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रामकृष्ण द्विवेदी पूर्व अध्यक्ष प्रशांत, सुरेंद्रनाथ द्विवेदी, अभय सिंह, गुरदास सिंह, ज्योति प्रकाश सिंह, समर्थ सिंह, अखिलेश सिंह, दिनेश सिंह, कुमार, गजेंद्र नारायण सिंह गुरदास सिंह, एसपी सिंह आदि मौजूद रहे।

सड़क सुरक्षा अभियान के तहत पुलिस ने लोगों किया जागरूक

हलिया। पुलिस ने शनिवार को हलिया लालगंज मार्ग स्थित हलिया बाजार में प्रभारी निरीक्षक संजीव कुमार सिंह के नेतृत्व में सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु स्थानीय लोगों तथा राहगीरों को यातायात नियमों का पालन करने की अपील करते हुए जागरूक किया। प्रभारी निरीक्षक संजीव कुमार सिंह ने लोगों से सड़क पर यात्रा करने के दौरान यातायात नियमों का पालन करने की अपील करते हुए कहा कि आए दिन यातायात नियमों का पालन नही करने से सड़क दुर्घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। इसका सबसे बड़ा कारण मोटरसाइकिल चालक व चार पहिया वाहन चालकों द्वारा यातायात नियमों का पालन नही किया जाना है। मोटरसाइकिल चलाने के दौरान हमेशा हेलमेट व चार पहिया वाहन चलाते समय हमेशा सीट बेल्ट का प्रयोग करना चाहिए। जिससे सड़क दुघर्टना में कमी लाई जा सकती है और लोग सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं। सड़क सुरक्षा जागरूकता रैली में चौकी प्रभारी मतवार लल्लन यादव, एसएसआई सुभाषचंद्र यादव, प्रधान संघ अध्यक्ष शिव बाबू सेठ कांस्टेबल दीपक यादव, महिला कांस्टेबल पूजा सिंह, राधा, मोनिका शुक्ला आदि मौजूद रहीं।

अवारा पशुओं के आंतक से किसान परेशान

लालगंज। भारतीय किसान यूनियन के तहसील अध्यक्ष इंजीनियर बीडी सिंह ने उप जिलाधिकारी नवनीत सेहरा को पत्र देकर अवगत कराए कि क्षेत्र में किसानों की फसल आवारा पशुओं द्वारा चर कर नष्ट कर दिया जा रहा है। पत्रक लेते हुए ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने समस्या का समाधान करने के लिए आश्वासन दिए। पत्रक लेते हुए ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने किसानों की समस्या का समाधान करने के लिए अश्वस्त किए। इस अवसर पर बृजराज, जगनारायण, राम शिरोमणि, कमला शंकर आदि पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय राजमार्ग पर की गई दो एम्बुलेंस की तैनाती

मीरजापुर। एनएचआई के अधिकारी के द्वारा बताया गया कि दो एम्बुलेंस एवं एक क्रेन 24 घण्टे के लिये उपलब्ध रहता है। किसी भी समय अल्पकालिक सूचना में वहाँ पहुँचकर अथवा टोल फ्री नम्बर 1033 डायल कर सहयोग लिया जा सकता हैं। अपर जिलाधिकारी द्वारा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी व जिला विद्यालय निरीक्षक को निर्देशित करते हुये कहा कि स्कूलों में विभिन्न माध्यमों के द्वारा विशेष प्रचार प्रसार अभियान चलाया जाय। स्कूलों खलनें पर बच्चों की रैली निकाली लाय व पम्पप्लेट का वितरण किया जाय।

स्कूली वाहनों की कराई जाए जांच

मीरजापुर। प्राइवेट अथवा सरकारी स्कूलों में संचालित वाहनों के विरूद्ध अभियान चलाकर फिटनेस एवं वाहन चालकों का स्वास्थ्य परीक्षण सुनिश्चित कराया जाय। उन्होने कहा कि सड़क सुरक्षा को लेकर जागरूकता कार्यक्रम पर विशेष बल दिया जाय। जिसमें जिला प्रशासन पुलिस विभाग, यातायात, परिवहन विभाग, शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, नगर निकाय के अलावा ट्रांसपोर्ट एसोशियन एवं टैम्पो चालक संगठन से समन्वय स्थापित करते हुये जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाय।

करंट की चपेट में आने से महिला अचेत

मीरजापुर। विद्युत करंट की चपेट में आने से महिला अचेत हो गई। परिजनों ने उपचार हेतु मंडलीय चिकित्सालय भर्ती कराया गया। बताया जाता है कि कंतित निवासी 25 वर्षीय पूजा पत्नी श्यामलाल शनिवार की दोपहर घर में पानी गरम करने के लिए वाटर हीटर का तार लगा रही थी। तभी वह करंट की चपेट में आ गई, जिससे महिला अचेता अवस्था में जमीन पर गिर पड़ी। महिला को अचेत अवस्था में परिजनों ने उपचार हेतु मंडलीय चिकित्सालय भर्ती कराया।

आज बलिया व मऊ के बीच होगा फाइनल मैच

कछवां। स्पोर्टींग क्लब के मैदान पर आयोजित सात दिवसीय राज्य स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता में शनिवार को दो सेमीफाइनल प्रतियोगिता खेला गया। जोकि प्रथम सेमीफाइनल मैच बलिया व पटना के बीच खेला गया। जिसमें बलिया 3-0 से विजय रहा। वही दूसरा सेमीफाइनल मैच मऊ व चंदौली के बीच खेला गया। जोकि दोनों टीमों के बीच बेहद ही रोमांचकारी मैच खेला गया। दोनों टीमों ने तीन तीन गोल दागकर बराबरी पर अंत तक बने रहे। जिसके पश्चात दोनों टीमों को पांच पांच मिनट का अतिरिक्त समय भी दिया गया। लेकिन दोनों टीमें बराबरी पर बनी रही। और अंत में ट्राई ब्रेकर का सहारा लेकर मऊ की टीम 4-3 से विजय हासिल कर फाइनल में जगह बना लिया। इस दौरान बेहद ही रोमांचकारी मैच देखने को दर्शकों में भारी भीड़ उमड़ा रहा जिनमें उत्साह देखने को मिला। वहीं सेमीफाइनल मैच का उद्घाटन विधायक मझवां विनोद बिंद व समाजसेवी हरेश सिंह ने किया। खेल में खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने के लिए समाजसेवी हरेश सिंह के द्वारा नगद पुरस्कार भी दिया गया। जिसके पश्चात संतोष ट्रॉफी में उत्तर प्रदेश की टीम से चयनित कछवां निवासी राधारमण यादव को भी उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाएं दिया। इस दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष कछवां मनोज पांडेय, विजय सोनी, अनवर हुसैन, जितेन्द्र कन्नौजिया, नरेश यादव व अरशद समेत आयोजकों की टीम मौजूद रही। आज राज्यस्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता में बलिया और मऊ के बीच फाइनल मुकाबला दो बजे से खेला जाएगा।

बिजली विभाग का चला चेकिंग अभियान

मचा हड़कंप

एक दिन में 149 कनेक्शन काट कर वसूले 20 लाख 32 पकड़ी गई बिजली चोरी

मीरजापुर। जिले के विभिन्न इलाको में चलाये गए बिजली चेकिंग अभियान में विभाग को बड़ी सफलता मिली। 149 लोगों का कनेक्शन काटा गया। बकायेदारों से 19.53 लाख की वसूली की गई। बिजली चोरी के 22 मामलों को पकड़ा गया। अभियान के दौरान 5 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया। बिजली विभाग का यह अभियान 23 जनवरी तक चलेगा। अधिशासी अभियंता शहर अनिल कुमार सिंह के नेतृत्व में बिजली विभाग ने पुलिस और प्रवर्तन दल के साथ अभियान चलाया। पांडेयपुर, विंध्याचल, वीरशाहपुर, सेमरी, अमोई पुरवा एवं धनावल आदि क्षेत्र में सघन बिजली चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान कई बड़े बकाएदारों के कनेक्शन काटे गए। एसडीओ प्रताप भार्गव एवं थाना विंध्याचल के सब इंस्पेक्टर विजेंद्र गिरी व चार कांस्टेबल के नेतृत्व में अभियान चलाया गया। चेकिंग के दौरान 25 उपभोक्ताओं के विद्युत कनेक्शन की जांच की गई। जिसमें चार लोगों को अवैध रूप से बिजली का प्रयोग करते पाए जाने पर उनकी केबिल को जब्त किया गया। उन्हें नष्ट कराने के साथ ही उनके विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया। अवर अभियंता रमन चतुर्वेदी ने बताया कि शासन के निर्देश पर चलाये गए अभियान के तहत बकाया, अवैध कनेक्शन और बड़े बकायेदारों के विरुद्ध अभियान चलाया जा रहा है। टीम मे शंकर, त्रिलोकी, अजय मौर्या, फारुख आदि मौजूद रहे। विद्युत वितरण खंड प्रथम में 44 कनेक्शन काटा गया । इस दौरान18 विद्युत चोरी पकड़ी गई। 138 बी में 2 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराते हुए 6.80 लाख रुपए की वसूली की गई। इसी प्रकार विद्युत वितरण खंड दो में 105 विद्युत कनेक्शन विच्छेदन कर 14 चोरी पकड़ी गई। 338 बी में 3 लोगों पर मुकदमा दर्ज कराते हुए 12.73 लाख वसूला गया। बिजली विभाग के अधिकारी रमन चतुर्वेदी ने बताया कि चेकिंग और बकाया वसूली अभियान 23 जनवरी तक जारी रहेगा।

संदिग्ध परिस्थितियों में अधेड़ की हुई मौत

जनसंदेश न्यूज

कलवारी। स्थानीय थाना क्षेत्र मड़िहान के अंतर्गत कलवारी निवासी 58 वर्षीय अधेड़ रामनरेश पुत्र मगरू की बीती रात संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। परिवार के लोगों ने बताया कि मृतक रामनरेश बीती रात को कलवारी स्थित ठेका से शराब लेकर पी रखी थी। देर रात पैदल घर जाते समय रास्ते में गिर पड़ा। रात भर ठंड में गिरे रहने से मौत हो गयी थी। सुबह टहलने के लिए निकले राहगीरों ने औंधे मुंह गिरे रामनरेश को देखा और परिजनों को सूचना दी। परिजन आनन-फानन में उपचार के लिए हॉस्पिटल ले गए, जहां डॉक्टरों ने देखते ही मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने बिना पुलिस को सूचना दिए ही मृतक का दाह संस्कार कर दिया। मृतक राम नरेश को 2 लड़के और 3 लड़कियां हैं, सभी विवाहित हैं।

लालगंज में प्राप्त हुए 55 प्रार्थना पत्र, एक का हुआ निस्तारण

लालगंज। संपूर्ण समाधान दिवस तहसील सभागार में शनिवार को अपर जिलाधिकारी के अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस दौरान 55 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिसमें एक प्रार्थना पत्र का मौके पर निस्तारण किया गया। शेष प्रार्थना पत्रों का निस्तारण करने हेतु राजस्व एवं पुलिस टीम गठित कर निस्तारण करने का आदेश दिया गया। समाधान दिवस में ज्यादातर मामले भूमि पैमाइश सरकारी भूमि अतिक्रमण एवं आवारा पशुओं से फसल बचाने के संबंध मे छाया रहा। फरियादी कटाई गांव निवासी इंद्रजीत पुत्र रामधारी ने पत्र देकर आरोप लगाया कि इंडियन बैंक लालगंज में लोन का रुपया जमा होने के बाद कर्मचारियों द्वारा नोडीज सर्टिफिकेट नहीं दिया जा रहा है। जिसमें संबंधित विभाग को निर्देश दिया गया। ऊटी निवासी हरि राम सिंह पुत्र रामकरन सिंह ने पत्र देकर आरोप लगाया कि आवारा पशुओं से हम किसान की फसल को बचाया जाए। जिसमें वीडियो एवं

फरियाद सुनते उप जिलाधिकारी

एसएचओ को निर्देशित किया गया। सेमरी कला निवासी राजेश कुमार पुत्र मदन गोपाल ने पत्र देकर आरोप लगाया कि आवास बने बिना ही पैसा निकाल लिया गया है। समाधान दिवस के बाद उप जिलाधिकारी नवनीत सेहरा ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि फरियादियों की समस्या को गंभीरता से लें, फरियादियों द्वारा प्राप्त प्रार्थना पत्रों का निस्तारण करने के लिए टीम के साथ मौके पर जाकर समस्या का समाधान करें और समय के अंदर रिपोर्ट प्रस्तुत करें किसी भी प्रकार की शिथिलता क्षम्य नहीं होगा। इस अवसर पर पुलिस उपाधीक्षक दीक्षांत राज, तहसीलदार शशांक शेखर राय, नायब तहसीलदार राम नारायण वर्मा, मधु जैन, खंड विकास अधिकारी शिव नारायण सिंह, पशु चिकित्सा अधिकारी एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी संजय सिंह आदि संबंधित विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

जिला सड़क सुरक्षा की बैठक कलेक्ट्रेट में संपन्न

दुघर्टना बाहुल्य क्षेत्रों में की जाय सुधारात्मक कार्रवाई

जनसंदेश न्यूज

मीरजापुर। शासन द्वारा चलाये जा रहे सड़क सुरक्षा माह में प्रभावी क्रियान्वयन किये जाने को लेकर जिलाधिकारी दिव्या मित्तल के निर्देश में अपर जिलाधिकारी वित्त शिव प्रताप शुक्ल के द्वारा विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये।

बैठक में लिये निर्णय की अनुपालन आख्या के सम्बन्ध में अधीक्षण अभियन्ता लोक निर्माण विभाग के द्वारा बताया गया कि जनपद में दुघर्टना बाहुल्य क्षेत्रो में चिन्हित कुल 24 ब्लैक स्पाट पर 21 में सुधारात्मक कार्यवाई यथा-संकेतक, स्पीड ब्रेकर, रिफलेक्टि टेप आदि का प्रयोग निर्माण एजेंसियों द्वारा करते हुये सुधारात्मक कार्यवाई की गयी है। तीन स्थलों पर सुधारात्मक

बैठक में मौजूद एडीएम शिव प्रताप शुक्ल

कार्यवाही किये जाना अवशेष हैं, जिन पर अविलम्ब कार्य पूर्ण करा लिया जायेगा। उन्होने बताया कि राष्ट्रीय राजमार्ग 135, 135ए, राज्य सड़क मार्ग 5, 5ए व राष्ट्रीय राजमार्ग 35 पर आवश्यकतानुसार संकेतक व रिफलेक्टि टेप लगाया गया है। मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा बताया गया कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा सड़क दुघर्टना में घायल व्यक्तियों को तत्काल चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराये जाने हेतु पर्याप्त एम्बुलेंस की व्यवस्था की गयी हैं। इस अवसर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ राजेन्द्र प्रसाद, अपर पुलिस अधीक्षक श्रीकान्त प्रजापति, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी संतोष कुमार, सहायक क्षेत्रीय प्रबन्धक हरिशंकर पाण्डेय, अधिशासी अभियन्ता लोक निर्माण विभाग प्रान्तीय एवं निर्माण खण्ड देवपाल व ए0के0 सिंह के अलावा ट्रासपोर्ट एशोसिएशन के अध्यक्ष उपस्थित रहें।

हरियाणा की टीम ने हासिल की जीत

जनसंदेश न्यूज

चुनार। डॉ सविता मेमोरियल चल रहे नेशनल बालीवाल चैंपियनशिप का फाइनल मैच शनिवार को खेला गया। बालक वर्ग में फाइनल मैच कर्नल एकेडमी हरियाणा व दुदलोद विद्यापीठ झुनझुनु राजस्थान के बीच खेला गया, जिसमें हरियाणा की टीम 3-0 से विजय हासिल कर जीत का परचम लहराया। जबकि बालिका वर्ग में मिलेनियम नेशनल स्कूल पुणे व निशान एकेडमी पंजाब के बीच खेला गया, जिसमें पुणे की टीम 3-2 से विजेता हुई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सीओ चुनार मंजरी राव रही, जहां स्कूल के अध्यक्ष डॉ तेजबली सिंह ने प्रमाण पत्र, मेडल व कप देकर सम्मानित किया। इस मौके पर रेफरी सुरेश कुमार खुराना, प्रिसिंपल वेद प्रकाश सिंह, ओमप्रकाश सिंह, आदि मौजूद रहे।

जिले में 410 स्थानों पर जलवाया गया अलाव

जनसंदेश न्यूज

मीरजापुर। जिले में इन दिनों कड़ाके की ठंड पड़ रही है। ठंड को देखते हुए नगर पालिका क्षेत्र में अलाव जलाया

अलाव तांपते लोग

गया है। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रशासन के द्वारा अलाव को लेकर व्यवस्था किया गया है। जिले में 410 स्थानों पर अलाव जलाया जा रहा है। ागातार एडीएम वित्त शिव प्रताप शुक्ला ठंड का जायजा ले रहे हैं। एडीएम शिव प्रताप शुक्ला के द्वारा लगातार रेन बसेरा वालों जगहों का निरीक्षण किया जा रहा है, जहां पर मुकम्मल इंतजाम को लेकर निर्देश भी दिए जा रहे हैं। नगर पालिका क्षेत्र में जगह-जगह पर अलाव जलाए गया है। नगर के वासलीगंज, घंटाघर, संकटमोचन, अस्पताल समेत 410 जगहों पर अलाव की व्यवस्था की गई है। वही लोगों ने कहा कि सरकार के द्वारा जो व्यवस्था किया गया है। वह बहुत ही बेहतर है। सरकार अगर ध्यान ना दे तो कोई उनकी तरफ ध्यान ही नहीं देगा। जिले में न्यूनतम तापमान जहां 8 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया है ऐसे में सूर्य देव के दर्शन न होने से लगातार गलन बना हुआ है। एडीएम वित्त शिव प्रताप शुक्ला ने बताया कि जिले में 410 स्थानों पर अलाव जलाया गया है। लगातार व्यवस्था की मॉनिटर हम खुद कर रहे हैं। इसके साथ ही जहां पर अलाव जलाने की जरूरत दिख रही है वहां पर तत्काल अलावा को लेकर व्यवस्था कराया जा रहा है।

मंडलायुक्त व उप पुलिस महानिरीक्षक ने सुनी समस्याएं

मंडलायुक्त ने लेखपालों को दी हिदायत, गांवों में अवैध जमीन कब्जा प्रकरण पर करे कार्रवाई

जनसंदेश न्यूज

मीरजापुर। शासन के मंशानुरूप जनपद के सभी तहसीलों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। तहसील सदर में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में मण्डलायुक्त डॉ मुथुकुमार स्वामी बी, उप पुलिस महानिरीक्षक आरपी सिंह ने जन सुनवाई किया। विभिन्न विभागों से सम्बन्धित प्राप्त शिकायतों को एक-एक सुनकर मौके पर उपस्थित सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों निर्देशित करते हुये कहा कि प्रेषित प्रार्थना पत्रों को समयबद्धता का ध्यान रखते हुये गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु निर्देश दिया।

अधिकारियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि जमीनों पर अवैध कब्जा, पैमाइश, तालाबों/ग्राम समाज की जमीनों पर अवैध कब्जा से सम्बन्धित मामलें तहसील दिवस में अधिक प्राप्त हो रहे हैं। उन्होने कहा कि ग्राम सभाओं में तालाबों व ग्राम समाज की

फरियाद सुनते अधिकारीगण।

जमीनों पर अवैध कब्जा की शिकायत तहसील दिवसों में प्राप्त होती है तो सम्बन्धित लेखपाल के विरूद्ध कड़ी कार्यवाई की जायेगी।

उन्होने लेखपालों व राजस्व निरीक्षको को कड़ी हिदायत देते हुये कहा के अपने क्षेत्रान्तर्गत सभी अवैध कब्जा को मुक्त करायें यदि कोई विशेष समस्या आती है तो अपने तहसीलदार व उपजिलाधिकारी को अवगत करायें।

मण्डलायुक्त यह भी कहा कि यदि अवैध कब्जा से सम्बन्धित व्यक्ति बार-बार शिकायत करता है और उसकी शिकायत जॉचोपरान्त गलत पायी जाती है तो शिकातयकर्ता के विरूद्ध भी कार्यवाही की जायेगी। बिजली के गलत बिलिंग में भी सुधार लाया जाय। उप जिलाधिकारी सदर निस्तारित प्रकरणों की रिपोर्ट को स्वंय अध्ययन करते हुये उसका फीडबैक लेना सुनिश्चित करें। इस अवसर पर

तालाब कब्जा की शिकायत पर जांच का आदेश

पवन शुक्ला पुत्र लालजी शुक्ला निवासी धौरहरा के द्वारा यह शिकायत दर्जकराया गया कि ग्राम सभा में स्थित तालाब के भीटा पर कतिपय लोगों के द्वारा कब्जा कर निर्माण करा लिया गया हैं। इस सम्बन्ध में पूर्व में भी शिकायत के उपरान्त राजस्व कर्मियों द्वारा मना करने के उपरान्त भी पुनरावृत्ति की जा रही है, जिस पर मण्डलायुक्त ने उप जिलाधिकारी सदर को निर्देशित किया कि तहसील दिवस के बाद स्वंय मौके पर जाकर प्रकरण का निस्तारण सुनिश्चित करें। मण्डलायुक्त द्वारा उपजिलाधिकारी को निर्देशित किया गया कि मौके पर पुनः जांच कर कार्यवाई करें। ग्राम प्रधान नरोईया अशोक कुमार द्वारा कूड़ा घर पर कतिपय लोगों के द्वारा अनाधिकृत रूप से उक्त जमीन पर अतिक्रमण किया जा रहा हैं। मण्डलायुक्त द्वारा उपजिलाधिकारी को मौके पर भेज कर कार्यवाई करने का निर्देश दिया गया। ग्राम राजपुर एवं धौरूपुर के कुछ ग्रामीणों के द्वारा गाँव के तालाब पर कब्जा करने की शिकायत पर मण्डलायुक्त द्वारा उप जिलाधिकारी को स्वयं मौके पर निस्तारण का निर्देश दिया गया।

मण्डलायुक्त द्वारा विगत तहसील दिवसों के लम्बित प्रार्थना की भी समीक्षा की तथा सम्बन्धित अधिकारियों को तीन दिवस के अन्दर निस्तारित कर रिपोर्ट उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। मण्डलायुक्त के समक्ष तहसील सदर में कुल 147 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुये जिनमें से दो का मौके पर निस्तारण किया गया। कुछ जरूरतमन्द महिलाओं को ठंड व शीतलहर से बचने के लिये कम्बल भी वितरण किया गया। इस अवसर पर प्रभागीय वनाधिकारी अरविन्द राज मिश्रा, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ राजेन्द्र प्रसाद, अपर पुलिस अधीक्षक श्रीकान्त प्रजापति, तहसीलदार अरूण गिरी, जिला पंचायत राज अधिकारी अरविन्द कुमार, जिला कार्यक्रम अधिकारी वाणी वर्मा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहें।

स्पोर्ट्स

अंडर-17 यूथ कप नॉकआउट राउंड हैदराबाद के डेक्कन एरिना में होंगे शुरू

कोलकाता। हीरो अंडर-17 यूथ कप के नॉक-आउट राउंड हैदराबाद के डेक्कन एरिना में 23 जनवरी से शुरू होने वाले हैं, जहां शीर्ष ट्रॉफी जीतने के लिए 16 टीमें आपस में भिड़ेंगी। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने शुक्रवार को नयी दिल्ली में एआईएफएफ कार्यालय में 16 राउंड के ड्रॉ के बाद 31 जनवरी को होने वाले फाइनल मैच की घोषणा की। हीरो अंडर-17 यूथ कप ग्रुप स्टेज में कुल 49 टीमों भाग लिया था, जहां उन्हें 10 ग्रुप में बांटा गया था, जो इस प्रकार हैं.. गढ़वाल फुटबॉल क्लब (एफसी), टेकट्रो स्वदेस यूनाइटेड एफसी, मिनर्वा पंजाब एफसी, क्लासिक फुलबॉल अकादमी, पंजाब स्टेट एफए अंडर-17 टीम, सुदेव दिल्ली एफसी और जिंक फुटबॉल अकादमी 10 ग्रुप विजेताओं के रूप में क्वालीफाई किया है। एआईएफएफ के महासचिव शाजी प्रभाकरन ने कहा,ह्ल हीरो अंडर-17 यूथ कप का नॉकआउट दौर हम पर है और हमने अब तक कुछ वास्तव में प्रतिस्पर्धी खेल का प्रदर्शन देखा है।

चेतन शर्मा फिर बने चीफ सेलेक्टर: बीसीसीआई ने नई सेलेक्शन कमेटी घोषित की, शिवसुंदर दास, सलिल अंकोला सहित चार और मेंबर्स

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने नई सीनियर सेलेक्शन कमेटी की घोषणा कर दी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने नई सीनियर सेलेक्शन कमेटी की घोषणा कर दी है। पूर्व तेज गेंदबाज चेतन शर्मा फिर से कमेटी के चेयरमैन यानी चीफ सेलेक्टर बनाए गए हैं। उनके अलावा शिवसुंदर दास, सलिल अंकोला, सुब्रतो बनर्जी और श्रीधरन शरत कमेटी के अन्य चार मेंबर्स हैं।
ऑस्ट्रेलिया में हुए पिछले टी-20 वर्ल्ड कप में खराब प्रदर्शन के बाद बोर्ड ने तत्कालीन सेलेक्शन कमेटी को बर्खास्त कर दिया था। चेतन शर्मा उस कमेटी के भी चेयरमैन थे। टीम इंडिया सेमीफाइनल में इंग्लैंड से 10 विकेट से हारकर वर्ल्ड कप से बाहर हो गई थी।

600 आवेदन आए, 11 शार्टलिस्ट हुए थे। बोर्ड ने रविवार को जारी बयान में बताया कि, 'क्रिकेट एडवाजरी कमेटी (उअउ) को करीब 600 आवेदन प्राप्त हुए। इनमें से 11 को इंटरव्यू के लिए बुलाए गया। इंटरव्यू के बाद शशिकला नायक, अशोक मल्होत्रा, जतिन परांजपे की एडवाजरी कमेटी ने 5 नाम रिकमेंड किए हैं।

शर्मा के सामने ये चैलेंज...

पहला: बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी : ऑस्ट्रेलिया-भारत के बीच खेली जाने वाली इस बाइलेटर सीरीज की मेजबानी भारत कर रहा है। कंगारू टीम अगले महीने भारतीय दौरे पर आ रही है। यह सीरीज वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के लिहाज से अहम होगी। फाइनल पहुंचने की स्थिति में उसे चैंपियन बनाने की जिम्मेदारी भी अहम होगी।
दूसरा : एशिया कप : सितंबर महीने में पाकिस्तान की मेजबानी में एशिया कप होने जा रहा है। वनडे वर्ल्ड कप से ठीक पहले होने वाले इस टूर्नामेंट को जीतना भी जरूरी होगा।
तीसरा : वनडे वर्ल्ड : एशिया कप के बाद अक्टूबर-नवंबर महीने में क्ळउ वर्ल्ड कप होगा। ऐसे में चेतन शर्मा के सामने बेहतर टीम तैयार करने की चुनौती होगी।

शर्मा ने 148 इंटरनेशनल विकेट लिए हैं

चेतन शर्मा ने अपने 11 साल के करियर में 148 इंटरनेशनल विकेट चटकाए हैं। वे 23 टेस्ट 65 वनडे मैचों में भारतीय टीम का हिस्सा रह चुके हैं।

वर्ल्ड कप में हैट्रिक लेने वाले पहले गेंदबाज हैं

चेतन शर्मा ने वर्ल्ड कप में हैट्रिक लेने वाले पहले गेंदबाज हैं। उन्होंने 1987 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड के खिलाफ हैट्रिक ली थी। 16 साल की उम्र में चेतन ने हरियाणा के लिए फर्स्ट क्लास क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया था। उन्होंने दिसंबर, 1983 में वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे में डेब्यू किया था।
2 साल पहले भी बने थे चीफ सेलेक्टर
चेतन शर्मा दूसरी बार भारतीय क्रिकेट टीम के चीफ सेलेक्टर बने हैं। 2 साल पहले वे ऑल इंडिया सेलेक्शन कमेटी के चेयरमैन बनाए गए थे।

श्रीधरन के पास इंटरनेशनल अनुभव नहीं

तमिलनाडु के पूर्व क्रिकेटर श्रीधरन शरत के पास इंटरनेशनल क्रिकेट का कोई अनुभव नहीं है। लेकिन उन्होंने 139 फर्स्ट क्लास और 116 लिस्ट ए मैच खेले हैं। इसके साथ ही वह मैच रेफरी की भी भूमिका निभा चुके हैं। शरत राष्ट्रिय जूनियर चयनसमिति के चीफ सेलेक्टर भी रह चुके हैं।
चयन समिति के सामने पहला टास्क न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज के लिए टीम चुनने का होगा। इसके बाद भारतीय टीम को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी भी खेलनी है। इस साल के अंत में वनडे वर्ल्ड कप भी है।

टी20 विश्व कप के बाद चयन समिति को किया गया था बर्खास्त

चेतन शर्मा की अगुआई वाली चयन समिति को टी20 विश्व कप के बाद बर्खास्त कर दिया गया था। उसके बाद एक जनवरी को टी20 विश्व कप में टीम के प्रदर्शन को लेकर बीसीसीआई ने चर्चा की थी।
इस दौरान चेतन शर्मा के साथ-साथ कप्तान रोहित शर्मा और कोच राहुल द्रविड़ भी मौजूद थे। बैठक में इस साल के अंत में आने वाले 50 ओवर के विश्व कप के रोडमैप पर चर्चा की गई थी।

महिला आईपीएल के लिए जल्द होगा नीलामी का आयोजन

मुंबई। महिला इंडियन प्रीमियर लीग (महिला आईपीएल) के लिये खिलाड़ियों की नीलामी का आयोजन फरवरी में किया जायेगा। क्रिकेट समाचार वेबसाइट क्रिकबज ने शनिवार को यह जानकारी दी। क्रिकबज ने बताया कि बीसीसीआई ने खिलाड़ियों को एक दस्तावेज प्रेषित किया है जिसके अनुसार उन्हें 26 जनवरी शाम पांच बजे से पहले नीलामी के लिये अपना नाम दर्ज कराना होगा। इस दस्तावेज में महिला आईपीएल को 2023 महिला टी20 लीग के नाम से संबोधित किया गया है। इस नीलामी में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने वाले खिलाड़ियों के साथ-साथ वे खिलाड़ी भी अपना नाम दर्ज करवा सकते हैं, जिन्होंने अभी तक भारत के लिये पदार्पण नहीं किया है। पदार्पण कर चुके खिलाड़ियों के लिये नीलामी की शुरूआती रकम (बेस प्राइस) 50 लाख, 40 लाख या 30 लाख रुपये निर्धारित की गयी है। घरेलू खिलाड़ियों के लिये यह रकम 20 लाख और 10 लाख रुपये है। मौजूदा आईपीएल प्रोटोकॉल के अनुसार, खिलाड़ियों के पंजीकरण के बाद पांच टीम मालिक इस 'नीलामी रजिस्टर' की छंटनी करके एक नीलामी सूची तैयार करेंगे। इस सूची को बोली के लिये प्रस्तुत किया जायेगा, जो खिलाड़ी नीलामी में नहीं चुने जायेंगे, उन्हें प्रतिस्थापन खिलाड़ी के रूप में चुने जाने का दूसरा मौका मिलेगा। गौरतलब है कि टूर्नामेंट के मीडिया अधिकारों की नीलामी पहले ही बीसीसीआई द्वारा चार दिनों के लिये स्थगित कर दी गयी है और अब इसे 16 जनवरी को आयोजित किया जायेगा।

सानिया मिर्जा ने संन्यास का ऐलान किया: अगले महीने दुबई में आखिरी टूनार्मेंट खेलेंगी

अब तक 6 ग्रैंड स्लैम जीत चुकी हैं

नई दिल्ली। 6 बार की ग्रैंड स्लैम विजेता सानिया मिर्जा ने शनिवार को टेनिस से संन्यास का ऐलान किया। 36 साल की मिर्जा ने एक इंटरव्यू में कहा है कि दुबई का डब्ल्यूटीए 1000 इवेंट उनका आखिरी टूनार्मेंट होगा। सानिया ने 3 बार विमेंस डबल्स का ग्रैंड स्लैम और तीन बार मिक्स डबल्स का खिताब जीता। वे इस महीने ऑस्ट्रेलिया ओपन के डबल्स में खेलेंगी।
सानिया ने पिछले साल भी संन्यास की घोषणा की थी। हालांकि, बाद में उन्होंने अपना फैसला वापस ले लिया। टेनिस वेबसाइट को दिए इंटरव्यू में सानिया ने संन्यास का फैसला वापस लेने पर कहा- 'मैं नहीं चाहती थी कि मैं चोट की वजह से टेनिस से दूर हूं। इसलिए

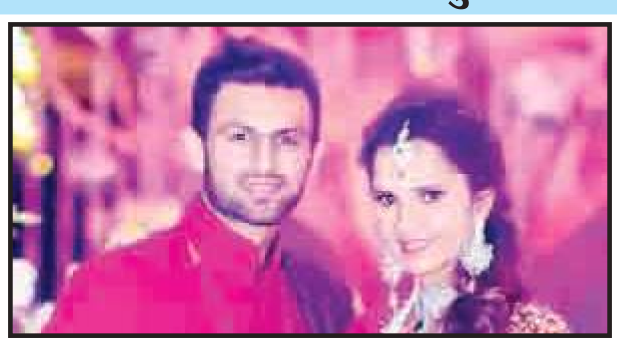

मैनें संन्यास के फैसले को आगे बढ़ा दिया और दोबारा ट्रेनिंग शुरू की।
सानिया ऑस्ट्रेलिया ओपन में खेलती नजर आएंगी। मिर्जा ने इसी महीने होने जा रहे साल के पहले ग्रैंड स्लैम की मिक्स्ड डबल्स कैटेगरी के लिए रोहन बोपन्ना के साथ पेयर बनाया है। दोनों करीब दो साल के बाद एक साल खेलेंगे।
इससे पहले मिर्जा-बोपन्ना की जोड़ी 2021 में विंबलडन में उतरी थी। इस जोड़ी को तीसरे राउंड में जेजे रोजर और आंद्रेजा क्लेपिक की 14वीं सीड जोड़ी ने 3-6, 6-3, 9-11 से हराया था। दोनों रियो ओलिंपिक 2016 में भी उतर चुके हैं। हालांकि, भारतीय जोड़ी थोड़े अंतर से ब्रॉन्ज मेडल चूक गई थी। उसे ब्रॉन्ज मैच में चेक रिपब्लिक की लूसी हरडेका और राडेक स्टेपानेक ने हराया था। सानिया की शादी पाकिस्तानी क्रिकेटर शोएब मलिक के साथ हुई है। पिछले साल नवंबर महीने में शोएब मलिक से तलाक की खबरें आई थीं। हालांकि, उन दोनों की ओर से इस पर कुछ नहीं कहा गया था। बाद में सानिया ने शोएब मलिक के साथ एक फोटो भी शेयर किया। ऐसा माना जा रहा है कि अब वे हैदराबाद और दुबई में एकेडमी चलाएंगी।

वापसी के लिए जमकर पसीना बहा रहे केएल राहुल

भारतीय सलामी बल्लेबाज केएल राहुल के लिए साल 2022 यादगार नहीं रहा। लगभग आधे साल तक वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से दूर रहे। इसके बाद एशिया कप और टी20 विश्व कप में उनका प्रदर्शन मिला-जुला रहा। उन्होंने कुछ अर्धशतक बनाए लेकिन प्रशंसकों और पूर्व क्रिकेटरों की आलोचना का शिकार बने। आक्रमकता में कमी और महत्वपूर्ण मैचों में फेल होने के कारण राहुल सबके निशाने पर रहे। उन्हें श्रीलंका के खिलाफ टी20 सीरीज में नहीं चुना गया। वह वनडे सीरीज से वापसी करेंगे। श्रीलंका के खिलाफ आगामी वनडे सीरीज से पहले राहुल ने जमकर अभ्यास किया। उन्होंने नेट्स पर काफी देर तक बल्लेबाजी की। राहुल ने इसका वीडियो इंस्टाग्राम पर शेयर किया। भारतीय टीम श्रीलंका के खिलाफ 10 जनवरी को गुवाहाटी में पहला मैच खेलेगी। 12 जनवरी को कोलकाता के ईडन गार्डन्स पर दूसरा मुकाबला खेला जाएगा। इसके बाद सीरीज का आखिरी मुकाबला 15 जनवरी को तिरुवनन्तपुरम में होगा।

ख्वाजा के साथ कप्तान कमिंस की नाइंसाफी, दोहरे शतक से पहले घोषित की पारी, याद आए सचिन और द्रविड़

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच टेस्ट सीरीज में उस्मान ख्वाजा शानदार लय में हैं। उन्होंने इस सीरीज के तीसरे मैच में भी 195 रन की नाबाद पारी खेली। हालांकि, कप्तान कमिंस के फैसले के चलते वह अपना दोहरा शतक नहीं कर पाए। उस्मान ख्वाजा ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में काफी ज्यादा उम्र में कमाल किया है, लेकिन अब वह लगातार बेहतरीन पारियां खेल रहे हैं।
इस मैच की पहली पारी में भी उन्होंने 368 गेंद में नाबाद 195 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में 19 चौके और एक छक्का लगाया। ख्वाजा अपने दोहरे शतक के बेहद करीब थे, लेकिन तभी कप्तान कमिंस ने पारी घोषित कर दी। हालांकि, यह पहला

मौका नहीं था, जब किसी कप्तान ने अपने ही खिलाड़ी का दोहरा शतक नहीं होने दिया। इससे पहले 2004 में भारत के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के साथ भी ऐसा ही हुआ था।
मार्च 2004 में सचिन मुल्तान के मैदान में पाकिस्तान के खिलाफ शानदार लय में थे। वह 194 रन बनाकर खेल रहे थे और उनका दोहरा शतक होना तय था, लेकिन तभी कप्तान राहुल द्रविड़ ने पारी घोषित कर दी और सचिन अपने दोहरे शतक से छह रन से चूक गए। इसके बाद फैंस कप्तान द्रविड़ से काफी नाखुश हुए थे। सचिन ने भी इस पर अपनी नाराजगी जाहिर की थी।

जडेजा के साथ भी ऐसा हुआ था

मार्च 2022 में भारत और श्रीलंका के बीच में रवींद्र जडेजा शानदार लय में थे। वह 175 रन बनाकर खेल रहे थे। ऐसे में उनका दोहरा शतक भी दूर नहीं था, क्योंकि जडेजा तेजी से रन बना रहे थे, लेकिन तभी कप्तन रोहित ने पारी घोषित कर दी और जडेजा 228 गेंद पर 175 रन बनाकर नाबाद रहे। इस समय राहुल द्रविड़ भारत के कोच बन चुके थे और कप्तान रोहित के साथ उनकी भी काफी आलोचना हुई थी।
ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच मैच में चार दिन का खेल हो चुका है। अगर ऑस्ट्रेलिया को यह मैच जीतना है तो आखिरी दिन कम से कम 14 विकेट लेने होंगे। ऑस्ट्रेलिया के पास अभी भी 326 रन की बढ़त है। हालांकि, अब इस मैच में कोई भी नतीजा निकलने की उम्मीद कम है।

ऋषभ पंत की लिगामेंट की सर्जरी मुंबई में सफल रही, बीसीसीआई ने दी जानकारी

नई दिल्ली। भारतीय विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत की मुंबई के एक अस्पताल में हुई घुटने की सर्जरी सफल रही। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) से जुड़े सूत्रों ने यह जानकारी दी। पंत पिछले सप्ताह भीषण कार दुर्घटना में से चमत्कारिक रूप से बच गए थे। बीसीसीआई के एक सूत्र ने पीटीआई से कहा, ऋषभ पंत की घुटने की लिगामेंट की सर्जरी शुक्रवार को की गयी। यह सर्जरी सफल रही। वह चिकित्सकों की निगरानी में रहेंगे। यह सर्जरी मुंबई के अंधेरी वेस्ट स्थित कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल में सेंटर फॉर स्पोर्ट्स मेडिसिन के प्रमुख और आर्थोस्कोपी एंड शोल्डर सर्विस के निदेशक डॉ परदीवाला की देखरेख में हुई। पंत को देहरादून से एयर एंबुलेंस द्वारा मुंबई ले जाया गया क्योंकि वह आम विमान से उड़ान भरने की स्थिति में नहीं थे। पंत 30 दिसंबर को हुई कार दुर्घटना में बाल बाल बच गए। दिल्ली से रुड़की जाते समय उनकी कार एनएच 58 पर डिवाइडर से टकरा गई थी।

विपक्षी टीम के दिलों में दहशत पैदा कर देती थी ओलंपियन सुरजीत सिंह की मौजूदगी

जालंधर। भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान और ओलंपियन सुरजीत सिंह रंधावा ने हमेशा अपनी टीम के लिए एक लोहे की दीवार की तरह काम किया। सुरजीत सिंह को दुनिया के कुछ सबसे बड़े फुलबैक के तौर पर जाना जाता था। उनकी टीम में मौजूदगी विपक्षी टीम में बेचैनी पैदा कर देती थी। ब्रिटेन के जैसे बॉब कीटल और बार्बर, वेस्ट जर्मनी के पीटर टूप और माइकल पीटर, हॉलैंड के टाइस क्रूज और पॉल लिटिजेन और पाकिस्तान के अनवर ने अपनी टीम में सबसे बेहतर फुलबैक के तौर पर जगह बनायी वैसे ही भारतीय हॉकी खिलाड़ी सुरजीत सिंह ने फुलबैक के तौर पर अपना नाम कमाया था। ओलंपियन सुरजीत को पेनल्टी कार्नर का मास्टर माना जाता था। उनका पेनल्टी कॉर्नर हिट 120 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से जाता था। ऐसा करने के लिए उन्हें पेनल्टी कॉर्नर बादशाह कहा जाता था। वर्ष 1978 के विश्व कप में भारतीय हॉकी टीम में ओलंपियन सुरजीत सिंह की अनुपस्थिति को देखते हुए, एक बार ऑस्ट्रेलियाई हॉकी टीम के कप्तान टिज क्रूज ने कहा था कि भारतीय टीम में ओलंपियन सुरजीत सिंह की मौजूदगी ही विरोधियों के दिलों में दहशत पैदा करती है। सुरजीत सिंह ने हर टीम में एक स्तंभ के रूप में काम किया। सुरजीत सिंह ऐसे फुलबैक थे जिसके खेल पर हर कोई कभी भी भरोसा कर सकता था। ओलंपियन सुरजीत सिंह को पेनल्टी कार्नर का मास्टर माना जाता था। उनके शरीर और उनके जोड़ों में बिजली चमक रही थी। उनका पेनल्टी कॉर्नर हिट 120 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल रहा था। ऐसा करने के लिए, उन्हें दंड कोनों का राजा कहा जाता था। ओलंपियन सुरजीत सिंह की आज से ठीक 38 साल पहले 07 जनवरी, 1984 को जालंधर के पास बिधिपुर गांव में एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। इस दुर्घटना में उनके साथ अंतर्राष्ट्रीय बास्केटबॉल खिलाड़ी प्रसोतम पांधे भी की भी मृत्यु हो गई थी, लेकिन इस दुर्घटना में उनके सबसे अच्छे दोस्त राम प्रताप, पूर्व एथलेटिक कोच, स्पोर्ट्स स्कूल, जालंधर इस हादसे में बाल-बाल बच गए। देश आज सुरजीत सिंह की 38वी पुण्यतिथि मना रहा है। ओलंपियन सुरजीत सिंह ने हर समय हॉकी और हॉकी खिलाड़ियों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने का हर संभव प्रयास किया। वह चाहते थे कि हर भारतीय हॉकी खिलाड़ी एक क्रिकेटर की तरह जीवन जिए। वह चाहते थे कि हॉकी खिलाड़ियों को क्रिकेटरों और हर हॉकी खिलाड़ियों को हर मैच के लिए क्रिकेट के समान पैसा मिले। उन्होंने हॉकी के मानक को उठाया और खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अंतिम समय तक लड़ाई लड़ी। ओलंपियन सुरजीत सिंह ने हॉकी खिलाड़ियों की मदद के लिए एक

स्पोर्ट्समेन बेनिफिट समिति की स्थापना की। उनका विचार था कि हॉकी में खिलाड़ियों के लिए क्रिकेट की तरह, समर्थन मैच आयोजित किए जाने चाहिए। वह नहीं चाहते थे कि खिलाड़ी उनके संन्यास के बाद हीनता की जिंदगी जीएं, जैसा कि हमारे ओलंपियन कप्तान रूप सिंह ने किया।

ओलंपियन रूप सिंह के पास बीमारी के इलाज के लिए पैसे भी नहीं थे और आखिरकार वह अल्लाह को प्यारे हो गए। इसीलिए ओलंपियन सुरजीत सिंह ने इस समिति का गठन किया था। समिति ने पहले ओलंपियन सुरजीत सिंह के समर्थन में एक बेनिफिट मैच आयोजित करने का फैसला किया। यह मैच भारत और पाकिस्तान के बीच 04 जनवरी, 1984 को जालंधर के गुरु गोबिंद सिंह स्टेडियम में खेला जाना था ।

शहर अच्छा और सचित्र पोस्टरों से भरा गया था। हर जगह मैच की चर्चा चल रही थी। सुरजीत को चार मैचों की श्रृंखला में खेलना था। दूसरी ओर, सुरजीत अपने हॉकी अभ्यास में अधिक मेहनत कर रहे थे, क्योंकि वह इन दिनों मैच की भी तैयारी कर रहे थे। सुरजीत सिंह कहते थे कि वह इस मैच में अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिखाएंगे लेकिन शायद भगवान को यह मंजूर नहीं था और सुरजीत इस मैच को नहीं खेल सके।

ऑस्ट्रेलिया को हॉकी विश्व कप में चौथी बार चैम्पियन बनने का भरोसा

भुवनेश्वर। तीन बार के चैंपियन और विश्व रैंकिंग में शीर्ष पर काबिज ऑस्ट्रेलिया को भरोसा है कि टीम 13 से 29 जनवरी तक भुवनेश्वर और राउरकेला में खेले जाने वाले एफआईएच (अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ) पुरुष हॉकी विश्व कप का खिताब फिर से जीतने में सफल होगी। ऑस्ट्रेलिया ने पिछली बार 2014 में नीदरलैंड के हेग में खिताब जीता था। टीम ने यहां अपने खिताब का बचाव करने में सफल रही थी। उसने अपना पहला खिताब 1986 में मेजबान इंग्लैंड को हराकर जीता था। पिछले विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया को कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा था। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान एडी ओकेनडेन ने यहां पहुंचने के बाद कहा, हमारे खिलाड़ी यहां आकर वास्तव में उत्साहित हैं और टूनार्मेंट में से हमें बड़ी उम्मीद है। उन्होंने कहा, हम अच्छा प्रदर्शन करना चाहते हैं और विश्वास है कि हम खिताब जीतने में सक्षम होंगे। हमारी टीम के पास बहुत अनुभव है और यह वास्तव में हमारे लिए महत्वपूर्ण होगा। ऑस्ट्रेलिया की टीम यहां 13 जनवरी को फ्रांस के खिलाफ अपने अभियान की शुरूआत करेगी। ऑस्ट्रेलिया के कोच कॉलिन बैच ने भी उम्मीद जताई कि इस बार खिताब जीतने के लिए उनके पास अच्छी टीम है और उनके इरादे मजबूत है। बैच ने कहा, ह्यह्यहमारे पास में एक अच्छी टीम है और हमारे खिलाड़ी शानदार गोल स्कोरर हैं जो वास्तव में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आपको मैच जीतने में मदद करता है। कोच ने कहा, इसके साथ ही टीम की रक्षापंक्ति भी काफी मजबूत है। हम अक्सर विपक्षी टीम को गोल करने से रोकते हैं। ऐसे में हमारी टीम काफी मजबूत है। उन्होंने कहा, हमारे खिलाड़ी भी भारत का सामना करने के लिए उत्साहित हैं क्योंकि वे घरेलू मैदान पर पूरी तरह से अलग टीम हैं। वे अपने घर में शानदार हॉकी खेलते हैं और दर्शकों से अतिरिक्त प्रेरणा प्राप्त करते हैं। अगर हम भारत के खिलाफ खेलते हैं तो उन्हें हराना मुश्किल होगा। इंग्लैंड की टीम भी शुक्रवार को यहां पहुंच गयी। विश्व कप में इंग्लैंड पूल डी में भारत, स्पेन और वेल्स के साथ है। विश्व कप में इंग्लैंड का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 1986 के सत्र में रजत पदक जीतना रहा है। टीम राउरकेला में 13 जनवरी को वेल्स के खिलाफ अपने अभियान की शुरूआत करेगी।

इंटरनेट की लत अफीम की लत के समान : राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत

राजस्थान में आज से 5जी, तीन शहरों से शुरूआत: सीएम ने जयपुर में लॉन्च की जियो सर्विस, बोले- इंटरनेट अफीम हो गया है, गहलोत ने बढ़ती साइबर धोखाधड़ी और इंटरनेट से उत्पन्न चुनौतियों पर भी चिंता जताई

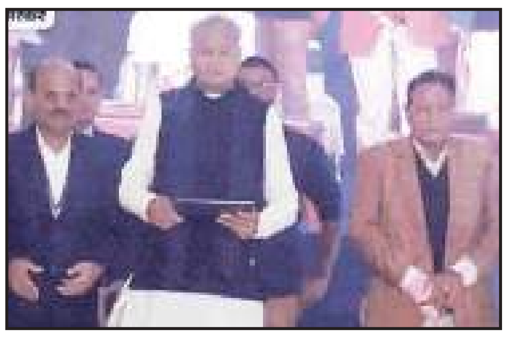

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने शनिवार को जयपुर, जोधपुर और उदयपुर में 5जी इंटरनेट सेवा का शुभारंभ किया। इस मौके पर जयपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में गहलोत ने कहा कि इंटरनेट ने युवा पीढ़ी के सपनों को पूरा करने का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने इंटरनेट की लत की तुलना अफीम की लत से करते हुए हल्के-फुल्के अंदाज में कहा, इसके बिना सभी काम अटक जाते हैं। गहलोत ने कहा, इंटरनेट का अपना महत्व है और अगर सही भावना से लिया जाए तो यह ज्ञान का स्रोत है। मौजूदा समय में ज्ञान ही शक्ति है और इंटरनेट ने युवा पीढ़ी के सपनों को पूरा करने का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने साइबर धोखाधड़ी के बढ़ते मामलों और इंटरनेट के इस्तेमाल से उत्पन्न अन्य चुनौतियों पर चिंता भी जताई। मुख्यमंत्री ने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा, आज इंटरनेट अफीम की तरह हो गया है, जिसके बिना काम अटक जाता है। इंटरनेट धीमा हो या सिग्नल कमजोर पड़ जाएं तो हम बेचैन हो जाते हैं। उन्होंने कहा, हमें इंटरनेट के इस्तेमाल की ऐसी आदत हो गई है कि अगर कुछ दोस्त तीन-चार घंटे साथ बैठे हों तो भी वे आपस में नहीं बतियाते, बल्कि इंटरनेट और मोबाइल पर गपशप करने में व्यस्त रहते हैं। गहलोत ने कहा कि लोगों को एक-दूसरे से आमने-सामने की मुलाकात करनी चाहिए और संस्कृति-परंपरा के बारे में बात करनी चाहिए। उन्होंने कहा, इंटरनेट के बिना किसी का काम चलता ही नहीं है। इंटरनेट तो एक तरफ से अफीम हो गया है। अगर व्यक्ति किसी गांव या कस्बे में चला गया और वहां सिग्नल कम आते हैं तो उसका दिमाग परेशान हो जाता है कि ये क्या हो गया। इसलिए इंटरनेट का अपना महत्व है, जिसे समझाने की जरूरत नहीं है। गहलोत ने बढ़ती साइबर धोखाधड़ी और इंटरनेट से उत्पन्न चुनौतियों पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा, साइबर जालसाजों के पास जांच एजेंसियों की तुलना में अधिक विशेषज्ञता होती है। ऐसे में साइबर अपराधों से निपटने के लिए कर्मचारियों को ज्यादा प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।

गहलोत ने कहा कि- जियो ने टेलीफोन सेक्टर में क्रांति ला दी है। हमने ही सबसे पहले जियो को फाइबर ऑप्टिकल लाइन बिछाने के लिए आउट ऑफ टर्म जाकर अनुमति दी थी। उन्होंने कहा कि लोग राजीव गांधी जी के समय बोलते थे कि इंटरनेट और कम्प्यूटर क्रांति से लोग बेरोजगार हो जाएंगे, लेकिन आज क्या इसका फायदा मिल रहा है ये आप सब देख रहे हैं। कंपनी का दावा है कि 5जी शुरू करने के बाद लेटेंसी की शिकायत बिल्कुल कम या कहें न के बराबर हो जाएगी। टेली कम्युनिकेशन की भाषा में लेटेंसी वो समय है जो डाटा (सूचना) को एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक पहुंचाने में समय लगता है। आम आदमी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और डाटा कॉलिंग के समय लेटेंसी या कहें होने वाले देरी से परेशान रहता है।

कंझावला केस में छठे आरोपी की गिरफ्तारी के बाद सातवें ने किया सरेंडर

नई दिल्ली। दिल्ली के कंझावला केस में एक बार फिर नया खुलासा हुआ है। इसी बीच पुलिस अब तक सात आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। आए दिन 20 वर्षीय अंजलि की मां, उसके साथ आखिरी समय में स्कूटी में मौजूद दोस्त निधि और कभी निधि की मां बयान दे रही है। इस मामले में शुक्रवार (6 जनवरी) शाम को सातवें आरोपी अंकुश खन्ना ने सुल्तानपुरी थाने में सरेंडर कर दिया। वह इसी केस में गिरफ्तार आरोपी अमित खन्ना का भाई है।

सीसीटीवी फुटेज चेक करने के बाद पुलिस ने पाया था कि आशुतोष और अंकुश कथित तौर पर आरोपियों को बचाने का प्रयास कर रहे थे। सीएम अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट किया, "अंजलि की दर्दनाक मौत ने पूरे देश को झकझोर दिया। इसकी भरपाई तो नहीं की जा सकती लेकिन उनके परिवार की मदद के लिए दिल्ली सरकार से आज दस लाख रुपए सैंक्शन किए। हम पूरी तरह से उनके परिवार के साथ हैं और उनकी हर तरह से मदद करेंगे।

एक बार फिर सलमान खान की एक्स गर्लफ्रेंड सोमी अली ने उन पर गंभीर आरोप लगाए

मुंबई। बॉलीवुड के दबंग सलमान खान अक्सर किसी न किसी वजह से सुर्खियों में बने रहते हैं। उनके चाहने वालों की कमी नहीं है। सबसे ज्यादा सलमान खान की फैन फॉलोइंग तो फीमेल्स में है। लड़कियां सलमान खान के पीछे पागल सी रहती हैं। सिर्फ इतना ही नहीं सलमान खान अपनी निजी जिंदगी और लव लाइफ को लेकर भी चर्चा में रहते हैं। हाल ही में एकबार फिर सलमान खान की एक्स गर्लफ्रेंड सोमी अली ने उनपर गंभीर आरोप लगाए हैं। सोमी अली की एक पोस्ट जमकर वायरल हो रही है। इस पोस्ट में वह अपने पुराने दिनों को याद करते हुए बात कर रही हैं। सोमी की पोस्ट की शुरूआत उनके एनजीओ नो मोर टियर्स से हुई। इस पोस्ट में आगे वह लिखती हैं कि ये एनजीओ उन्होंने मानव तस्करी और घरेलू हिंसा से पीड़ित लोगों के लिए शुरू किया था। उन्होंने पीड़ितों को बचाने के लिए 15 साल तक अपना खून-पसीना बहाया। इसे एक डॉक्यूमेंट सीरीज के तौर पर दिखाया भी गया था। इसके बाद सोमी ने बताया कि नो मोर टियर्स की शुरूआत उन्होंने इसलिए की, क्योंकि बचपन में वह खुद यौन हिंसा की शिकार हुई हैं। उन्होंने बताया कि पांच साल की उम्र में उनका शारीरिक शोषण हुआ है। इसके बाद नौ साल की उम्र में पाकिस्तान में हाउस हेल्पर ने उनका शारीरिक शोषण किया।

खास खबर

गुजरात: कुएं में गिरने से शेर-शेरनी की मौत, वन विभाग ने पोस्टमार्टम के लिए भेजे शव

अमरेली (गुजरात)। गुजरात के अमरेली जिले में गिर वन संभाग में एक खुले कुएं में गिरने से एक शेर और शेरनी की मौत हो गई। एक वन अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। गिर (पूर्व) के वन उप संरक्षक (डीसीएफ) राजदीप सिंह झाला ने बताया कि शेर-शेरनी की उम्र पांच से नौ साल के बीच थी और वे इलाके में घूम रहे थे तभी वे शुक्रवार सुबह खंभा तालुका में कोटदा गांव में एक किसान के कुएं में गिर गए। उन्होंने कहा, किसान को जैसे ही घटना की सूचना मिली उसने हमें सूचित किया। हालांकि जब तक वन विभाग की बचाव टीम घटनास्थल पर पहुंचती तब तक शेर और शेरनी की डूबने से मौत हो गई थी। शवों को कुएं से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

भारत और जापान की वायुसेनाओं के बीच पहला द्विपक्षीय अभ्यास होगा 12 जनवरी से

नई दिल्ली। भारत और जापान की वायुसेनाएं 12 से 26 जनवरी तक पहला द्विपक्षी अभ्यास करेंगी। दोनों देशों के बीच होने वाला यह अभ्यास हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की सैन्य ताकत को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच प्रगाढ़ होते रक्षा संबंधों को दशार्ता है। भारतीय वायु सेना (आईएएफ) और जापान एयर सेल्फ डिफेंस फोर्स (जेएएसडीएफ) के बीच 'वीर गार्जियन-2023' नामक यह अभ्यास जापान के हयाकुरी एयरबेस पर आयोजित किया जाएगा। भारतीय वायुसेना ने शनिवार को कहा कि अभ्यास में उसकी तरफ से चार सू-30 एमकेआई विमान, दो सी-17 विमान और एक आईएल-78 विमान हिस्सा लेंगे। जेएएसडीएफ के चार एफ-2 और चार एफ-15 विमान अभ्यास में हिस्सा लेंगे। आईएएफ ने एक बयान में कहा, देशों के बीच वायु रक्षा सहयोग को बढ़ावा देने के लिए, भारत और जापान संयुक्त हवाई अभ्यास 'वीर गार्जियन-2023' आयोजित करने के लिए तैयार हैं।

पीएम मोदी इंदौर में 17वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन का करेंगे उद्घाटन

तीन दिवसीय सम्मेलन 8 से 10 जनवरी तक होगा, राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु समापन करेंगी

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इंदौर में हो रहे 17वें प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) सम्मेलन का 9 जनवरी को शुभारंभ करेंगे और राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु समापन करेंगी। पीबीडी में विश्व में रह रहे हजारों प्रवासी भारतीय शामिल होंगे। तीन दिवसीय सम्मेलन 8 से 10 जनवरी तक होगा। पीबीडी सम्मेलन में संपूर्ण विश्व के प्रवासी भारतीय विभिन्न विषय पर चर्चा करेंगे।

प्रवासी भारतीयों को देश और प्रदेश की उपलब्धिओं और क्षमताओं से रू-ब-रू कराया जायेगा। सांस्कृतिक गतिविधियां होगी। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु तीन दिवसीय सम्मेलन के समापन पर प्रवासी भारतीयों का सम्मान करेंगी। प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन के प्रथम दिवस 8 जनवरी को युवा प्रवासी भारतीय दिवस पर गुयाना के राष्ट्रपति मोहम्मद इरफान अली, सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी तथा ऑस्ट्रेलिया की संसद सदस्य जेनेटा मैस्करेनहास शामिल होंगी। पीबीडी में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और केन्द्र एवं प्रदेश सरकार के मंत्री शामिल होंगे। पीबीडी सम्मेलन के प्रथम दिन युवा प्रवासी भारतीय दिवस के कार्यक्रम होंगे, जिसमें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का संबोधन, सचिव (सीपीवी, ओआईए) विदेश मंत्रालय डॉ. औसाफ सईद का स्वागत भाषण, केन्द्रीय युवा मामले एवं खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर का उद्बोधन, गेस्ट ऑफ ऑनर सुश्री जेनेटा मैस्करेनहास संसद सदस्य ऑस्ट्रेलिया का विशेष संबोधन होगा। केन्द्रीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर संबोधित करेंगे। सचिव युवा मामले और खेल सुश्री मीता राजीवलोचन आभार व्यक्त करेंगी। पहले दिन केन्द्रीय युवा मामले एवं खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर की अध्यक्षता में प्लेनरी सेशन में नवाचारों और नई प्रौद्योगिकी में प्रवासी युवाओं की भूमिका पर चर्चा होगी।

मणिपुर: 43 उग्रवादियों ने किया आत्मसमर्पण, 19 हथियार, 17 हथगोले और 209 गोला-बारूद भी सौंपे

इंफाल। मणिपुर में विभिन्न उग्रवादी संगठनों के 43 उग्रवादियों ने शनिवार को मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। राज्य के गृह विभाग द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान इन उग्रवादियों ने 19 हथियार, 17 हथगोले, पांच हैंडहेल्ड सेट, नौ पीईके, पांच देसी बम और 209 गोला-बारूद मुख्यमंत्री के सामने रखे। जिन उग्रवादियों ने आत्मसमर्पण किया है, उनमें घाटी आधारित कांगलीपाक यावोल कनबा लुप (केवाईकेएल) के 13, पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के पांच, कांगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी (पीपुल्स वार ग्रुप) के 11, यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट (यूएनएलएफ) के पांच, केसीपी (एन) के पांच, प्रीपाक (पीआरओ) के दो और एनएससीएन (यू) का एक उग्रवादी शामिल हैं। जीवन की मुख्य धारा में लौटने पर इन उग्रवादियों का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, आपने जो कठिनाइयां झेली है, उसे मैं समझता हूं। उन्होंने ट्वीट किया, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में प्रगतिशील मणिपुर बनाने के हमारे काम से और उग्रवादियों को जुड़ते हुए देख खुशी हो रही है।

हेमंत सोरेन ने झारखंड की पूरी सरकार लुटेरों और दलालों के हाथों में दे दी: अमित शाह ने साधा निशाना

जनसभा को संबोधित करते हुए आरोप लगाया, झारखंड में इस समय भ्रष्टाचार चरम पर

चाईबासा। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और उनकी सरकार पर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार में शामिल होने का आरोप लगाते हुए शनिवार को कहा कि हेमंत सोरेन ने झारखंड की पूरी सरकार लुटेरों और दलालों के हाथों में दे दी। अपने दो दिवसीय झारखंड दौरे के दूसरे दिन शाह ने चाईबासा के टाटा कॉलेज में एक जनसभा को संबोधित करते हुए आरोप लगाया, झारखंड में इस समय भ्रष्टाचार चरम पर है। हेमंत सोरेन ने तो राज्य की पूरी सरकार लुटेरों और दलालों के हाथों में सौंप दी है। झारखंड में खनन घोटाले समेत विभिन्न मामलों में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच में मुख्यमंत्री से जुड़े लोगों के खिलाफ मिले भ्रष्टाचार के सबूतों की तरफ इशारा करते हुए अमित शाह ने कहा, हेमंत भाई आपकी सरकार ने क्या काम किए हैं? भ्रष्टाचार के सिवा कुछ नहीं। वास्तव में हेमंत सोरेन के नेतृत्व में एक ऐसी सरकार आई, जिसने झारखंड को तबाह करके रख दिया। गृह मंत्री ने केंद्र सरकार को आदिवासियों की वास्तविक हितैषी बताया।

उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने आदिवासियों के कल्याण के लिए बजट राशि कांग्रेस की सरकारों के समय की अंतिम बजट राशि 21 हजार करोड़ रुपये से बढ़ाकर 86 हजार करोड़ रुपये कर दी है। शाह ने कहा, हेमंत सोरेन की आदिवासियों और गैर-आदिवासियों के बीच भेद पैदा करने की राजनीति सफल नहीं होगी। चाईबासा में तो भूमि बंदोबस्ती 1964 में हुई थी तो क्या सोरेन सरकार 1932 का खतियान लागू करके चाईबासा के लोगों को नौकरी नहीं देगी?

उन्होंने राज्य में सत्तारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो), राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कांग्रेस की महागठबंधन सरकार पर आदिवासियों के हितों से समझौता करने का आरोप लगाते हुए कहा कि सोरेन सरकार घुसपैठियों से आदिवासी माता-बहनों की रक्षा करने में विफल रही है। गृह मंत्री ने कहा, सोरेन सरकार को आदिवासी महिलाओं से शादी कर जमीन हथियाने वाले घुसपैठियों पर लगाम लगानी चाहिए। झारखंड में नक्सलियों के खिलाफ चलाए गए ऑपरेशन ऑक्टोपस सहित तीन बड़े अभियानों का जिक्र करते हुए शाह ने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) ने झारखंड में वामपंथी उग्रवाद की कमर तोड़ दी है। आने वाले कुछ ही समय में देश में नक्सलवाद समाप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा, हेमंत सोरेन भाई, आपके अच्छे दिन समाप्त हो चुके हैं। जनता 2024 में आपको सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाएगी। रैली के बाद शाह चाईबासा से कोरबा रवाना हो गए, जहां वह शाम को एक अन्य जनसभा को संबोधित करेंगे। उनका छत्तीसगढ़ से रवाना होने से पहले शाम सवा चार बजे कोरबा में माता सर्वमंगला मंदिर में पूजा-अर्चना करने का भी कार्यक्रम है।

एमएसपी नहीं, तो वोट नहीं के नारे साथ देशभर में चलेगा अभियान

एमएसपी गारंटी मोर्चा किसानों को संगठित करेगा

लखनऊ। किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य दिलाने को लेकर एमएसपी गारंटी मोर्चा देशभर में अभियान चलाकर किसानों को संगठित करेगा और अपनी आवाज बुलंद करेगा। किसान संगठनों की ओर से गठित एमएसपी गारंटी मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ राजाराम त्रिपाठी ने शनिवार को एक प्रेस वार्ता में कहा कि 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव में किसानों के लिए यह सबसे बड़ा मुद्दा होगा। कहा कि किसान आंदोलन की समाप्ति पर केंद्र की सरकार ने एमएसपी को लेकर जो वादा किया था उसे अब तक पूरा नहीं किया गया है। आज खेती जबरदस्त घाटे का सौदा बन चुकी है और किसानों के बेटे खेती से मुंह मोड़ रहे हैं। कहा कि हर साल सब्सिडी को अलग कर दिया जाए तो देश भर के किसानों को 5 लाख करोड़ का घाटा सहना पड़ रहा है। इन हालात में खेती और किसानी कैसे बचेगी यह सोचने का विषय है। उन्होंने बताया कि हाल ही में वह बस्ती जिले का दौरा करके लौटे हैं, जहां किसानों ने एमएसपी को लेकर निर्णायक लड़ाई लड़ने पर सहमति जताई है। कहा कि लखनऊ के बाद वह बुलंदशहर जा रहे हैं जहां किसानों से मुलाकात कर एमएसपी को लेकर आगे की रणनीति बनाएंगे। कहा कि उन्होंने तेलंगाना कर्नाटक महाराष्ट्र और देश के कई राज्यों में एमएसपी गारंटी को लेकर उन्होंने दौरा किया है और हर जगह किसान लड़ाई लड़ने को एकजुट है।

आगामी 2024 लोकसभा चुनाव को लेकर किसान संगठनों ने नारा दिया है कि ₹एमएसपी नहीं तो वोट नहीं₹. उन्होंने कहा एक किसान इस देश की आत्मा है और वह यह दिखा कर रहेंगे कि उनकी अनदेखी कर कोई भी सरकार सत्ता में नहीं रह सकती।

बीते 24 घंटे में सामने आए 214 नए मामले, देश में अभी कोविड की रफ्तार धीमी

एक व्यक्ति की मौत उत्तर प्रदेश में हुई

नई दिल्ली। भारत में शनिवार को कोविड-19 के 214 नए मामले दर्ज किए गए, जबकि उपचाराधीन रोगियों की संख्या मामूली रूप से बढ़कर 2,509 हो गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के शनिवार सुबह आठ बजे के आंकड़े के अनुसार नए मामलों के साथ संक्रमितों की संख्या बढ़कर 4.46 करोड़ हो गई है। मंत्रालय के अनुसार, संक्रमण से चार और मरीजों की मृत्यु होने से मृतक संख्या बढ़कर 5,30,718 हो गई है। इसमें दो मरीज केरल से हैं जिनकी कोविड-19 से मृत्यु की पुष्टि के बाद इसे आंकड़े में शामिल किया गया है। इसके अलावा पिछले 24 घंटे में एक मरीज की मृत्यु महाराष्ट्र में और एक व्यक्ति की मौत उत्तर प्रदेश में हुई है। स्वास्थ्य मंत्रालय की वेबसाइट पर कहा गया कि दैनिक संक्रमण दर 0.11 प्रतिशत दर्ज की गई और साप्ताहिक संक्रमण दर 0.12 प्रतिशत है। मंत्रालय ने बताया कि उपचाराधीन मामले कुल संक्रमितों का 0.01 प्रतिशत हैं जबकि कोविड-19 से ठीक होने की राष्ट्रीय दर बढ़कर 98.80 प्रतिशत हो गई है।

पिछले 24 घंटे में कोविड-19 के उपचाराधीन मामलों की संख्या में छह का इजाफा हुआ है। बीमारी से ठीक होने वालों की संख्या बढ़कर 4,41,46,534 हो गई है। मृत्यु दर 1.19 प्रतिशत दर्ज की गई है। मंत्रालय की वेबसाइट के अनुसार, राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान के तहत देश में कोविड-19 रोधी टीके की अब तक 220.13 करोड़ खुराक दी जा चुकी हैं। गौरतलब है कि भारत में सात अगस्त 2020 को कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या 20 लाख, 23 अगस्त 2020 को 30 लाख और पांच सितंबर 2020 को 40 लाख से अधिक हो गई थी। संक्रमण के कुल मामले 16 सितंबर 2020 को 50 लाख, 28 सितंबर 2020 को 60 लाख, 11 अक्टूबर 2020 को 70 लाख, 29 अक्टूबर 2020 को 80 लाख और 20 नवंबर को 90 लाख के पार चले गए थे। देश में 19 दिसंबर 2020 को ये मामले एक करोड़ से अधिक हो गए थे। पिछले साल चार मई को संक्रमितों की संख्या दो करोड़ और 23 जून 2021 को तीन करोड़ के पार पहुंच गई थी। इस साल 25 जनवरी को संक्रमण के कुल मामले चार करोड़ के पार हो गए थे।

केशव मौर्य जैसी जनाधार अखिलेश की कभी नहीं हो सकती

ओपी राजभर ने सपा प्रमुख पर साधा निशाना

लखनऊ। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) के अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर यूपी सरकार के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्या को संघर्षशील नेता बताते हुए कहा कि अखिलेश यादव विरासत में मिली राजनीति के बल पर प्रदेश में आए हैं लेकिन केशव प्रसाद मौर्य संघर्षशील नेता है और उनकी जितनी जनाधार है उतनी अखिलेश की जनाधार कभी नहीं हो सकती। इसके साथ ही उन्होंने समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए कहा कि उनको राजनीति विरासत मे मिली है उन्होंने ही अपने कार्यकाल में पिछड़ों वर्ग के लोगो के प्रमोशन का आरक्षण समाप्त कर दिया था। समाजवादी पार्टी (सपा) तथा बहुजन समाज पार्टी (बसपा) जब भी सत्ता में आई है तब-तब पिछड़ों का नुकसान हुआ है जिसकी भरपाई अभी तक नहीं हो पाई है भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) महिलाओं को आरक्षण देने के लिए वादा तो करती है लेकिन अपने वादे से कब मुखर जाती है किसी को पता ही नहीं चलता। उन्होंने कहा कांग्रेस पार्टी की नेता प्रियंका गांधी महिलाओं के लिए केवल भाषण दे रही है जब केंद्र तथा प्रदेश में उनकी सरकार थी तब उनके लोगों ने महिलाओं के बारे में कभी नहीं सोचा अगर उस समय महिलाओं को बराबर की हिस्सेदारी मिली होती तो आज हमारा देश कहीं और आगे होता। महिलाएं केवल घर तक सीमित रह जाती है जब महिला प्रत्याशियों की बात आती है तो महिलाओं को आगे करके चुनाव लड़ा दिया जाता है लेकिन फिर उन्हें घर के अंदर ही रखा जाता है जनता का प्रतिनिधित्व करने का मौका उन्हें केवल कागजों में मिलता है इसकी लड़ाई के लिए हम लोग अभी से तैयारी कर रहे हैं।

तिरंगा हो जाएगा भगवा, भाजपा देश का संविधान भी खत्म कर देगी: महबूबा मुफ्ती

जिस तरह से उसने प्रदेश के विशेष दर्जे को खत्म कर दिया

श्रीनगर। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) प्रमुख एवं जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने शनिवार को भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) पर निशाना साधते हुए दावा किया कि जिस तरह से उसने प्रदेश के विशेष दर्जे को खत्म कर दिया है, उसी तरह वह देश के संविधान को भी समाप्त कर देगी और तिरंगे की जगह भगवा कर देगी।

मुफ्ती अनंतनाग जिले में अपने पिता और पीडीपी संस्थापक मुफ्ती मोहम्मद सईद की सातवीं पुण्यतिथि पर पार्टी कार्यकताओं को संबोधित कर रही थी। पीडीपी के सैकड़ों कार्यकर्ता और नेता बिजबेहरा के दारा शिकोह उद्यान में एकत्र हुए थे, जहां मुफ्ती सईद को दफनाया गया था। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि उनके पिता भारत के विचार और धर्मनिरपेक्षता में विश्वास करते थे जो देश की नींव थी। उन्होंने कहा, भाजपा ने न केवल जम्मू कश्मीर के संविधान को समाप्त कर दिया है, बल्कि देश के संविधान को भी ध्वस्त कर दिया है। उन्होंने जिस तरह अनुच्छेद 370 को समाप्त किया, उसी तरह देश के संविधान को भी समाप्त कर देगी। उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर को महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और अबुल कलाम आजाद के भारत में शामिल किया गया है, न कि नाथूराम गोडसे के भारत में।

उन्होंने आरोप लगाया कि वर्तमान शासन ने देश के सभी संस्थानों को नष्ट कर दिया है। प्रधान न्यायाधीश की टिप्पणी का जिक्र करते हुए सुश्री मुफ्ती ने कहा कि आजकल अदालतें निशाना बनाए जाने के डर से बेगुनाहों को जमानत देने से कतराती हैं। उन्होंने कहा कि एक समय था जब अदालत ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के खिलाफ फैसला सुनाया था। मुफ्ती ने कहा कि जम्मू-कश्मीर को सेना की छावनी बना दिया गया है। उन्होंने कहा, हमें सेना से कोई समस्या नहीं है, लेकिन आप (भाजपा) दावा कर रहे हैं कि जम्मू-कश्मीर में स्थिति में सुधार हुआ है, तो इन बलों को वापस बैरकों में भेज दें। और इसके बजाय आप इसका उल्टा कर रहे हैं और लोगों को हथियार दे रहे हैं, आप किस तरह का भारत बनाना चाहते हैं। मुफ्ती ने कहा कि मौजूदा स्थिति को देखकर उनके पिता का दिल टूट गया होगा। उन्होंने कार्यकताओं से वर्तमान स्थिति के कारण हिम्मत नहीं हारने को कहा। उन्होंने कहा, मुफ्ती साहब हमेशा आश्वस्त थे और मानते थे कि कोई देश कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, वह अपने लोगों के खिलाफ युद्ध नहीं जीत सकता।

वर्जीनिया में 6 साल के बच्चे ने क्लासरूम में टीचर को मारी गोली

नोरफोक (अमेरिका)। अमेरिका के वर्जीनिया में छह साल के छात्र ने अपने स्कूल में एक शिक्षिका को गोली मार दी। शुक्रवार को कक्षा एक में पढ़ने वाले इस छात्र का शिक्षिका के साथ विवाद हुआ था। न्यूपोर्ट न्यूज शहर की पुलिस और स्कूल प्रबंधन ने यह जानकारी दी। पुलिस ने कहा कि रिचनेक एलिमेंट्री स्कूल में गोलीबारी की घटना में हालांकि कोई छात्र जख्मी नहीं हुआ। न्यूपोर्ट न्यूज के पुलिस प्रमुख स्टीव ड्रीयू ने बताया कि शिक्षिका की उम्र लगभग 30 वर्ष है और गोली लगने से वह गंभीर रूप से घायल हो गई थी। हालांकि, दोपहर बाद तक उसकी स्थिति में सुधार आया। ड्रीयू ने पत्रकारों से कहा, गोली चलने की घटना कोई दुर्घटना नहीं थी। छात्र और शिक्षिका एक-दूसरे को जानते थे तथा दोनों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ था।

अफगानिस्तान की सीमा से लगते पश्चिमोत्तर पाकिस्तान के कबाइली इलाकों में आतंकवाद और अपहरण की बढ़ती घटनाओं के विरोध में हजारों लोगों ने प्रदर्शन किया और क्षेत्र में तत्काल शांति बहाली की मांग की। दक्षिणी वजीरिस्तान कबाइली जिले के मुख्यालय वाना में शुक्रवार को 5,000 से अधिक कबाइलियों ने अपने यहां अशांति, आतंकवाद और अपहरण की बढ़ती घटनाओं के विरोध में रैली निकाली।

सेंसेक्स
सेंसेक्स 452 अंकों की गिरावट के साथ 59,900 के स्तर पर बंद

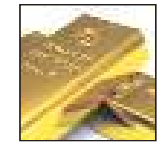

सोना
24 कैरेट के 10 ग्राम सोने की कीमत 55584 रुपये

चीन के बाजार खुलने से एशिया के दूसरे देशों में बढ़ेगी महंगाई: मॉर्गन स्टेनली ने आशंका जताई

अब चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था को खोल दिया है, ऐसे में एशिया में महंगाई बढ़ सकती है

नई दिल्ली। दुनिया की दिग्गज मल्टीनेशनल फर्म मॉर्गन स्टेनली ने इस बात की आशंका जताई है कि चीन के बाजारों के खुलने के बाद एशिया में महंगाई बढ़ सकती है। फर्म ने कहा है कि तीन साल बाद चीन के बाद चीन के बाजार खुलने से मांग में बढ़ेगी इससे कीमतों में इजाफा दिख सकता है। बता दें कि पिछले तीन वर्षों के दौरान जीरो कोविड पॉलिसी की रणनीति अपना रहा था। अब चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था को खोल दिया है, ऐसे में एशिया में महंगाई बढ़ सकती है। मॉर्गन स्टेनली ने एशियाइकोनॉमिक्से एशिया पैसिफिक- द व्यूप्वाइंटः रैपिड डिसइन्फ्लेशन एंड ग्रोथ आउटपरफॉर्मेंस' के नाम से अपनी एक रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट में फर्म ने चिंता जताई है कि चीन के बाजार खुलने से एशिया के दूसरे देशों में महंगाई बढ़ सकती है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि चीन की अर्थव्यवस्था में सुधार का मतलब ये होगा, कि स्वाभाविक तौर पर तेल की मांग में इजाफा होगा। चीन की तेल मांग वर्तमान में 2020-21 के स्तर से रोजाना 1 मिलियन बैरल प्रति दिन कम है, यह लॉकडाउन और अन्य प्रतिबंधों के कारण है। मॉर्गन स्टेनली का अनुमान है कि अब जबकि बाजार खुल गए हैं 2023 की जनवरी-मार्च तिमाही में देश में तेल मांग में सुधार शुरू हो जाएगा। मॉर्गन स्टेनली ने आगे कहा है कि इससे कच्चे तेल की कीमतों पर कुछ दबाव बढ़ेगा। अगर ऐसा होता है इससे महंगाई बढ़ सकती है। मॉर्गन स्टेनली ने अपनी रिपोर्ट में ये भी कहा है कि भले ही महंगाई के आंकड़ों में इजाफा देखने को मिले लेकिन औद्योगिक और निर्माण गतिविधियां जो लंबे समय से सुस्त पड़ी थी उनमें काफी हद तक तेजी आ जाएगी। इसके अलावा मॉर्गन स्टेनली ने अपनी रिपोर्ट में एक आशा जताते हुए कहा है कि तेल की मांग में वृद्धि 2022 की शुरुआत से होने लगी थी। लेकिन अब चीन में मांग में वृद्धि होने से तेल की आपूर्ति का प्रबंधन आसान होगा।

 # एशियाई बाजारों के लिए सकारात्मक संकेत

मॉर्गन स्टेनली ने महंगाई में वृद्धि की आशंका जाहिर करने के बावजूद एशियाई बाजारों के लिए सकारात्मक संकेत दिए हैं। फर्म के अनुसार महंगाई से जूझ रहे 90 प्रतिशत एशियाई देशों के केन्द्रीय बैंकों के लिए इस साल जून तक इस महंगाई को अपने नियंत्रण में करना आसान हो जाएगा। मॉर्गन स्टेनली ने कई कारकों का हवाला देते हुए कहा है कि जून महीने तक महंगाई में कमी आने की संभावना बनने लगेगी। बता दें कि बीते कुछ महीनों में वैश्विक स्तर पर विभिन्न केंद्रीय बैंकों ने महंगाई पर काबू पाने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि की है। मॉर्गन स्टेनली ने कहा, ₹2023 वो साल होगा, जब पूरी दुनिया में महंगाई का ग्राफ तेजी से कम होगा और 2023 के मध्य तक 90 प्रतिशत क्षेत्र के लिए मुद्रास्फीति नियंत्रण में आ जाएगी। मुद्रास्फीति की लड़ाई जीतने का साफ मतलब होगा कि एशिया के कई देश विकास के रास्ते पर दोबारा लौटने में सक्षम होंगे।

अमेजन में 18000 कर्मी निकाले जाएंगे, कुल कार्यबल में 6% की कटौती होगी

नई दिल्ली। आईटी क्षेत्र की दिग्गज कंपनी अमेजन 18,000 से अधिक नौकरियों को घटना चाहती है। कंपनी यह कदम लागत में कटौती करने के लिए उठा रही है। कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एंडी जेसी ने कर्मचारियों को भेजे एक नोट में कहा कि प्रभावित कर्मियों को 18 जनवरी से इसकी सूचना दी जाएगी। यह कटौती फर्म के लगभग 300,000 मजबूत कॉरपोरेट कार्यबल का लगभग 6% है। अमेजन इनती बड़ी छंटनी की शुरूआत करने वाली नवीनतम बड़ी आईटी कंपनी है। माना जा रहा है कि कंपनी के ग्राहकों ने अपना खर्च बढ़ने के कारण उसमें कटौती का फैसला किया है। जिससे कंपनी को भी छंटनी का फैसला लेना पड़ा। बता दें कि प्रौद्योगिकी क्षेत्र की दिग्गज कंपनी ने पिछले साल ही कहा था कि वह अपने कर्मचारियों की संख्या कम करेगी। नए साल में भी नौकरियों पर संकट बना रहेगा। मेटा और ट्विटर जैसी बड़ी कंपनियों के बाद अब दिग्गज ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन भी बड़े पैमाने पर छंटनी की तैयारी कर रही है। अमेजन ने बुधवार को कहा, वह 18 जनवरी से 18,000 से ज्यादा कर्मचारियों को नौकरी से निकालेगी। यह आंकड़ा नवंबर, 2022 में की गई 10,000 छंटनी से 80 फीसदी ज्यादा है। अमेजन के सीईओ एंडी जेसी ने कर्मचारियों को भेजे ईमेल में कहा, अनिश्चित अर्थव्यवस्था और पिछले कुछ साल में तेजी से की गईं भर्तियों की वजह से हम 18,000 से अधिक भूमिकाओं को खत्म करने की योजना बना रहे हैं। इसका सबसे ज्यादा असर ई-कॉमर्स और मानव संसाधन विभाग पर पड़ेगा। कई अन्य विभाग भी प्रभावित होंगे। उन्होंने कहा, हम इन फैसलों को हल्के में नहीं लेते हैं। छंटनी से प्रभावित लोगों के लिए मैं कहना चाहता हूं...अमेजन में आपके योगदान और ग्राहकों के लिए आपकी ओर से किए गए कार्यों के लिए कितना आभारी हूं।

टेस्ला की ई-कारें अमेरिका से चीन में 43% तक सस्ती

लंदन। अमेरिकी वाहन निमार्ता कंपनी टेस्ला इंक ने चीन में अपनी इलेक्ट्रिक कारों की कीमतों में तीसरी बार कटौती की है। कंपनी ने शुक्रवार को अपने मॉडल-3 और वाई की कीमतों में करीब दो लाख रुपए तक घटा दिए हैं। इसके साथ ही मॉडल एस सेडान और मॉडल एक्स को भी पेश किया है। टेस्ला की चीनी वेबसाइट के अनुसार, चीन में बने मॉडल वाई स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल की शुरूआती कीमत करीब 34.84 लाख रुपए से घटाकर 31.32 लाख रुपए (2,59,900 युआन) कर दी है। यह टेस्ला की अमेरिका में तय शुरूआती कीमत 54.53 लाख रुपए की तुलना में 43% कम है।

वहीं मॉडल-3 अमेरिका की तुलना में चीन में लगभग 30% सस्ता है। टेस्ला ने कहा कि फिर से डिजाइन किए गए इंटीरियर के साथ पेश किए गए मॉडल-एस की कीमत चीन में 95.24 लाख रुपए (7,89,900 युआन) है। टेस्ला की सबसे तेज ई-कार प्लेड वर्जन की कीमत 1.21 करोड़ रुपए रखी गई है। यह मात्र 2.1 सेकंड में शून्य से 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ लेती है।

एयर इंडिया के सीइओ ने विमान में पेशाब करने की घटना के लिए मांगी माफी

चालक दल-पायलट को ड्यूटी से हटाया गया

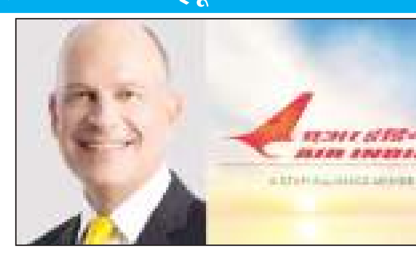

नई दिल्ली। टाटा समूह के स्वामित्व वाली एअर इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) कैंपबेल विल्सन ने नवंबर में न्यूयॉर्क से आई एक उड़ान में एक पुरुष यात्री द्वारा महिला सहयात्री पर पेशाब करने की घटना के लिए शनिवार को माफी मांगी और कहा कि चालक दल के चार सदस्यों तथा एक पायलट को जांच पूरी होने तक ड्यूटी से हटा दिया गया है तथा एअरलाइन विमान में शराब परोसने की अपनी नीति की समीक्षा कर रही है।

घटना से उचित तरीके से न निपटने के लिए आलोचनाओं के बीच विल्सन ने एक बयान में कहा कि एअरलाइन इस मामले से बेहतर तरीके से निपट सकती थी और उन्होंने ऐसे अनुचित व्यवहार की शिकायत करने के लिए मजबूत तंत्र बनाने का वादा किया। उन्होंने कहा, एअर इंडिया उड़ान के दौरान ऐसी घटनाओं को लेकर बहुत चिंतित है जहां उपभोक्ताओं को हमारे विमान में अपने सहयात्रियों के निंदनीय कृत्यों को सहना पड़ा है। हम इन घटनाओं से दुखी हैं तथा खेद जताते हैं। विल्सन ने कहा, एअर इंडिया यह मानती है कि वह उड़ान के दौरान तथा बाद में इन मामलों से बेहतर तरीके से निपट सकती थी और वह कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध है। एअरलाइन के आरोपी यात्री को कानून प्रवर्तन अधिकारियों को तुरंत न सौंपने को लेकर उठे सवालों को लेकर उन्होंने कर्मियों को सभी घटनाओं की जानकारी देने की सलाह दी, भले ही वे सुलझ ही क्यों न गयी हों। उन्होंने कहा, 26 नवंबर 2022 को न्यूयॉर्क-दिल्ली उड़ान- एआई-102 में हुई घटना में चालक दल के चार सदस्यों और एक पायलट को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है और उन्हें जांच पूरी होने तक ड्यूटी से हटा दिया गया है। विल्सन ने कहा कि इस बात की आंतरिक जांच की जा रही है कि क्या अन्य कर्मियों से भी चूक हुई थी। एअरलाइन विमान में शराब परोसने की नीति, घटना से निपटने, उड़ान के दौरान शिकायत दर्ज कराने और शिकायत से निपटने समेत अन्य पहलुओं की भी जांच कर रही है। विल्सन ने कहा कि एक जिम्मेदार एअरलाइन होने के नाते एअर इंडिया ने घटनाओं और यात्रियों के अनुचित व्यवहार से निपटने पर नीतियों का पालन करने तथा जागरूकता बढ़ाने के लिए एक व्यापक कार्यक्रम शुरू किया है। उन्होंने ज्यादा जानकारी दिए बगैर कहा कि एअरलाइन विमान में शराब परोसने की नीति की समीक्षा कर रही है।

ट्विटर से 20 करोड़ यूजर्स का डेटा चोरी

नई दिल्ली। हैकर्स ने 20 करोड़ से ज्यादा ट्विटर यूजर्स के ईमेल एड्रेस चुरा लिए और उन्हें एक ऑनलाइन हैकिंग फोरम पर पोस्ट कर दिया। इजराइली साइबर सिक्योरिटी-मॉनिटरिंग फर्म हडसन रॉक के को-फाउंडर अलोन गैल ने इसकी जानकारी दी।

24 दिसंबर को सिक्योरिटी रिसर्चर ने इसे सोशल मीडिया पर शेयर किया था। अब इसके स्क्रीनशॉट्स इंटरनेट पर वायरल हो रहे हैं। फिलहाल ट्विटर ने इस घटना पर कोई कमेंट नहीं किया है। कुछ रिपोर्ट में ये भी अनुमान लगाया गया है कि ये हैकिंग 2021 की शुरूआत में हुई हो, जो एलन मस्क के कंपनी का स्वामित्व संभालने से पहले की है। ट्विटर में हैकिंग से जुड़ी ये कोई पहली घटना नहीं है। इससे पहले कई बड़े पॉलिटिशियन और बिजनेसमैन के अकाउंट हैक होने की घटनाएं सामने आ चुकी है। इसमें पीएम मोदी और एलन मस्क के अकाउंट भी शामिल है।

सरकार 2023 में रेहड़ी-पटरी वालों को छोटे कर्ज देने पर देगी जोर: वैष्णव

नई दिल्ली। सात जनवरी (भाषा) दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को कहा कि सरकार वर्ष 2023 में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की मदद से रेहड़ी-पटरी वालों को 5,000 रुपये तक की सूक्ष्म ऋण सुविधा देने पर खास जोर देगी। वैष्णव ने डिजिटल इंडिया पुरस्कार वितरण समारोह में कहा, "2023 में रेहड़ी-पटरी वालों की 3,000 रुपये से 5,000 रुपये तक छोटी ऋण जरूरतों को पूरा करने के लिए सरल तरीके से ऋण सुविधाएं मुहैया करने पर खास ध्यान दिया जाएगा।"

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रत्येक नागरिक को डिजिटल रूप से जोड़ने के लिए देश के सभी हिस्सों तक 4जी और 5जी दूरसंचार सेवाएं पहुंचाने को लगभग 52,000 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। मंत्री ने कहा कि देश इस साल स्वदेशी रूप से विकसित 4जी और 5जी प्रौद्योगिकियों को लागू होते देखेगा। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के विजन के अनुसार देश में बहुत जल्द एक इलेक्ट्रॉनिक चिप विनिर्माण संयंत्र की स्थापना की जाएगी। प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (स्वनिधि) योजना को सूक्ष्म-ऋण सुविधा के रूप में जून 2020 में शुरू किया गया था। इस योजना का मकसद कोविड-19 महामारी के चलते हुए नुकसान की भरपाई के लिए रेहड़ी पटरी वालों को सशक्त बनाना है।

जियो ने ग्वालियर और जबलपुर में लॉन्च की 5जी सर्विस:

नई दिल्ली। रिलायंस जियो ने शुक्रवार को ग्वालियर और जबलपुर में जियो ट्रू 5जी सर्विस लॉन्च की। इसके साथ ही देश के 72 शहरों में अब तक जियो ट्रू 5जी सर्विस लॉन्च हो चुकी है। मप्र के इंदौर में हो रहे प्रवासी भारतीय दिवस और ग्लोबल इन्वेस्टर समिट को देखते हुए जियो ने 2 और शहरों में अपने 5जी नेटवर्क को मजबूत किया है। इससे पहले जियो इंदौर और भोपाल में भी ट्रू5जी सर्विस लॉन्च कर चुका है। आज से ग्वालियर और जबलपुर के जियो यूजर्स को 'जियो वेलकम ऑफर ' के तहत आमंत्रित किया जाएगा। जियो वेलकम ऑफर के तहत यूजर्स को मुफ्त में 1 जीबीपीएस+ की स्पीड से अनलिमिटेड डेटा मिलेगा। रिलायंस जियो अब प्रदेश के 4 बड़े शहरों में 5जी सर्विस देने वाला पहला ऑपरेटर है। जियो ने कहा, 'हमें ग्वालियर और जबलपुर में जियो ट्रू 5जी शुरू करते हुए खुशी हो रही है। जियो ट्रू 5जी से मप्र के लोगों के लिए ई-गवर्नेंस, शिक्षा, ऑटोमेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, गेमिंग, हेल्थकेयर, कृषि, आईटी और छोटे उद्योगों के लिए विकास के अनंत दरवाजे खुलेंगे।

तेल कंपनियों ने जारी किए पेट्रोल-डीजल के दाम

नई दिल्ली। तेल कंपनियों ने आज के लिए पेट्रोल और डीजल के दाम जारी कर दिए हैं। आज कंपनियों ने तेल के दामों में कोई बदलाव नहीं किया है। सरकार ने कुछ महीने पहले पेट्रोल-डीजल की कीमतें घटाने की घोषणा की थी। देश में तेल के दाम लगभग पिछले चार महीने से ज्यादा समय से स्थिर हैं। आज दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर जबकि डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर मिल रहा है। मुंबई में पेट्रोल की कीमत 106.31 रुपये व डीजल की कीमत 94.27 रुपये प्रति लीटर है। कोलकाता में पेट्रोल का दाम 106.03 रुपये जबकि डीजल का दाम 92.76 रुपये प्रति लीटर है। वहीं चेन्नई में भी पेट्रोल 102.65 रुपये प्रति लीटर तो डीजल 94.25 रुपये प्रति लीटर है। पेट्रोल-डीजल की कीमत आप एसएमएस के जरिए भी जान सकते हैं। इंडियन ऑयल की वेबसाइट पर जाकर आपको फ्रढ और अपने शहर का कोड लिखकर 9224992249 नंबर पर भेजना होगा। हर शहर का कोड अलग-अलग है, जो आपको आईओसीएल की वेबसाइट से मिल जाएगा। बता दें कि प्रतिदिन सुबह छह बजे पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव होता है। सुबह छह बजे से ही नई दरें लागू हो जाती हैं। पेट्रोल व डीजल के दाम में एक्साइज ड्यूटी, डीलर कमीशन और अन्य चीजें जोड़ने के बाद इसका दाम लगभग दोगुना हो जाता है।

मैकडॉनल्ड्स के सीईओ बोले- जा सकती है कुछ लोगों की नौकरी, जानें क्यों लिया जाएगा ये फैसला?

लंदन। मैकडॉनल्ड्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी क्रिस केम्पजिंस्की ने शुक्रवार को कर्मचारियों को भेजे ज्ञापन में कहा है कि कंपनी अपने कुछ कॉरपोरेट कर्मचारियों में कटौती करने की योजना बना रही है। केम्पजिंस्की ने कहा, ₹हम संगठन के कुछ हिस्सों में भूमिकाओं और स्टाफिंग स्तरों का मूल्यांकन करेंगे और कुछ कठिन फैसले भी लिए जा सकते हैं। उन्होंने कहा, 'कंपनी की कुछ पहलों को प्राथमिकता से हटा दिया जाएगा या पूरी तरह से रोक दिया जाएगा।' उन्होंने कहा 'यह हमें एक संगठन के रूप में तेजी से आगे बढ़ने में मदद करेगा और हमारी वैश्विक लागत को कम करेगा। ऐसा होने से हमारे संसाधन विकास योजनाओं में निवेश करने के लिए मुक्त होंगे।

मैकडॉनल्ड्स महामारी के दौरान भी स्टार रहा। लोगों ने कोविड के शुरूआती दिनों के दौरान कंपनी से अधिक से अधिक टेकआउट का ऑर्डर दिया।

पिछले एक साल में बिक्री में वृद्धि हुई है क्योंकि मुद्रास्फीति ने रेस्तरां जाने वालों को सस्ते विकल्पों की तलाश करने के लिए प्रेरित किया है। सीईओ ने आंतरिक बाधाओं को तोड़ने, विकास करने और कंपनी की प्राथमिकताओं के अनुरूप काम करने की योजना को रेखांकित करते हुए कहा कि कंपनी अपनी अब तक की अपनी उपलब्धियों पर निर्भर नहीं रह सकती। केम्पजिंस्की ने कर्मचारियों को लिखा, हमारे पास गर्व करने के लिए बहुत कुछ है पर हम और भी बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। हम बढ़िया प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन हम और भी बेहतर कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि कंपनी को तेज, ज्यादा इनोवेटिव व और अधिक कुशल बनना होगा। वॉल स्ट्रीट जर्नल के साथ शुक्रवार को एक साक्षात्कार में केम्पजिंस्की ने कहा कि इसका मतलब है कि कंपनी छंटनी की घोषणा करेगी।

जैक मा को चीन सरकार से पंगा लेना पड़ा भारी: बिलिनेयर जैक मा के हाथ में अब नहीं रहा फिनटेक कंपनी एंट ग्रुप का कंट्रोल

नई दिल्ली। चीन के बिलिनेयर जैक मा के हाथ से अब फिनटेक जायंट कंपनी एंट ग्रुप की कमान छिन गई है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, एंट ग्रुप ने शनिवार को कहा कि कंपनी पर अब जैक मा का कंट्रोल नहीं रह गया है। जैक मा ही एंट ग्रुप के फाउंडर थे और उन्होंने ही इस कंपनी को ऊंचाईयों पर पहुंचाया था। रिपोर्ट के मुताबिक, कंपनी ने कहा कि जैक मा के वोटिंग राइट्स भी बहुत कम कर दिए गए हैं। कभी एंट ग्रुप में जैक मा के पास 50% वोटिंग राइट्स हुआ करते थे, जो अब घटकर 6.2% ही रह गए हैं। वहीं एंट ग्रुप में जैक मा की हिस्सेदारी 50.5% से घटकर अब सिर्फ 10% रह गई है। एंट ग्रुप चीन की दिग्गज ई-कॉमर्स कंपनी अलीबाबा की सहयोगी है। दरअसल, जैक मा को चीन की सरकार से पंगा लेना महंगा पड़ा है। वे एक समय एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति थे, लेकिन आज उनकी हालत खराब हो गई है। जैक मा मार्च 2020 में मुकेश अंबानी को पछाड़कर एशिया के सबसे बड़े अमीर आदमी बने थे, लेकिन चीन की सरकार के बारे में दिए गए एक बयान के बाद उनकी मुश्किलें बढ़ गई थीं। पिछले साल जैक मा की नेटवर्थ में काफी गिरावट देखने को मिली थी। ब्लूमबर्ग बिलिनेयर इंडेक्स के मुताबिक, जैक मा की नेटवर्थ अब 34.1 बिलियन डॉलर रह गई है और वह दुनिया के अमीरों की लिस्ट में 34वें नंबर पर आ गए हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी 86.8 बिलियन डॉलर की नेटवर्थ के साथ एशिया में दूसरे और दुनिया में 8वें सबसे अमीर आदमी हैं। वहीं अडाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडाणी 117 बिलियन डॉलर की नेटवर्थ के साथ एशिया के सबसे अमीर आदमी हैं। वहीं दुनिया के अमीरों की लिस्ट में अडाणी तीसरे नंबर पर हैं। हाल ही में खबर आई थी कि जैक मा करीब 6 महीने से सेंट्रल टोक?यो में रह रहे हैं। साल 2021 में जब जैक मा के गायब होने की खबरें सामने आईं तो हर कोई हैरान हो गया था। जैक मा ने चीन के बैंकों पर मनी लेंडर्स जैसी मानसिकता रखने का आरोप लगाया था। दरअसल, जैक मा 24 अक्टूबर 2020 को एक मीटिंग में सरकार के निशाने पर आए थे। इस मीटिंग में चीनी राजनीति और अर्थव्यवस्था के सबसे बड़े अधिकारी पहुंचे हुए थे। इसमें जैक मा ने चीनी बैंकों की आलोचना की थी। उन्होंने कहा था, ह्यचीनी बैंक फंडिंग के लिए कुछ गिरवी रखने की मांग करते हैं। इससे नई तकनीकों को फंड नहीं मिल पाता और नए प्रयोग रुक जाते हैं। *एजेंसी*

संक्षेप

रेकिट बेंकिसर के पूर्व सीईओ ने बिट्स पिलानी को दिया 12 लाख डॉलर का दान

नई दिल्ली। रेकिट बेंकिसर के पूर्व वैश्विक सीईओ राकेश कपूर ने अपने पुराने इंजीनियरिंग संस्थान बिट्स पिलानी को 12 लाख डॉलर (करीब 10 करोड़ रुपये) का दान दिया है। यह संस्थान को मिला अब तक का सबसे बड़ा दान है। बिट्स पिलानी ने एक बयान में यह जानकारी देते हुए कहा, "दान में मिली इस राशि का इस्तेमाल अत्याधुनिक नवोन्मेष केंद्र के निर्माण के लिए किया जाएगा।"यह राशि दान करने वाले कपूर बिट्स पिलानी के पूर्व छात्र हैं। इस केंद्र को प्रसिद्ध वास्तुकार हफीज कॉन्ट्रैक्टर डिजाइन करेंगे और यह 40,000 वर्ग फुट क्षेत्र में फैला होगा। इसमें प्रौद्योगिकी और हार्डवेयर से संबंधित नवाचार प्रयोगशालाएं होंगी। इस नवाचार केंद्र में पिलानी इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट सोसाइटी (पीआईईडीएस) भी स्थित होगी, जो बीआईटीएस का बिजनेस इनक्यूबेटर है। कपूर की उदारता और संस्थान के प्रति समर्पण को देखते हुए इस नवोन्मेष केंद्र का नाम 'द कपूर सेंटर ऑफ इनोवेशन' रखा जाएगा।

भारत की नजर निष्पक्ष व न्यायपूर्ण मुक्त व्यापार समझौतों पर, पीयूष गोयल बोले

नई दिल्ली। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शनिवार को कहा कि कई देशों के साथ द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) करने के लिए बातचीत सही दिशा में चल रही है। कुछ 'निष्पक्ष और न्यायपूर्ण' बहुपक्षीय समझौतों पर भी भारत की नजर है। भारत ने वर्ष 2022 में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और ऑस्ट्रेलिया के साथ एफटीए को लागू कर इन देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार व निवेश को बढ़ाने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। इसके अलावा ब्रिटेन, कनाडा और यूरोपीय संघ के साथ भी एफटीए पर बातचीत हो रही है। गोयल ने '27वें व्हार्टन इंडिया इकोनॉमिक फोरम' को ऑनलाइन संबोधित करते हुए कहा कि कई देशों के साथ द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौता संपन्न करने के लिए बातचीत हो रही है। उन्होंने कहा, इसके अलावा भारत की नजर एक या दो बहुपक्षीय व्यापार समझौतों पर भी है। हमें उम्मीद है कि इनसे हमें लाभ हो सकता है। किसी मुक्त व्यापार समझौते के तहत दोनों पक्ष एक-दूसरे के अधिकांश उत्पादों और सेवाओं को शुल्क-मुक्त या न्यूनतम शुल्क पर पहुंच देते हैं। इससे उनके बीच व्यापार और निवेश को बढ़ावा मिलता है। गोयल ने कहा कि द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौतों का हिस्सा बनना भारत के हित में है। उन्होंने कहा, ₹यह जरूरी है कि समझौते संतुलित हों और वे दोनों ही देशों के हित में हों। वे दोनों देशों के संवेदनशील पहलुओं का ध्यान रखते हैं और कुछ खास क्षेत्रों को संरक्षण देने में भी मदद करते हैं। उन्होंने कहा कि भारत हरेक उत्पाद को सक्षम ढंग से नहीं बना सकता है और ऐसी स्थिति में उन उत्पादों का आयात करना महत्वपूर्ण हो जाता है। वहीं कपड़ा, चमड़ा, फुटवेयर और दवा जैसे कुछ ऐसे उत्पाद हैं जिनमें भारत प्रतिस्पर्द्धी है और इनके निर्यात में व्यापार समझौते कारगर साबित हो सकते हैं।

भारत से छिन सकता है सबसे तेज आर्थिक वृद्धि दर वाले देश का दर्जा, सात प्रतिशत रह सकती है विकास दर

नई दिल्ली। मांग में नरमी के साथ विनिर्माण व खनन क्षेत्र के कमजोर प्रदर्शन से देश की आर्थिक वृद्धि दर चालू वित्त वर्ष में सालाना आधार पर 1.7 फीसदी घटकर 7 फीसदी रह सकती है। ऐसा होने पर भारत सबसे तेज आर्थिक वृद्धि दर वाले देश का दर्जा खो सकता है। सऊदी अरब इससे आगे निकल सकता है, जिसकी वृद्धि दर 7.6 फीसदी रहने का अनुमान है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) की ओर से शुक्रवार को जारी राष्ट्रीय आय के पहले अग्रिम अनुमान में यह संभावना जताई गई है। हालांकि, यह आरबीआई के 6.8% के अनुमान से ज्यादा है। 2021-22 में जीडीपी की वृद्धि दर 8.7% रही थी।? एनएसओ के मुताबिक, नॉमिनल जीडीपी (बाजार या मौजूदा कीमत पर एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य) भी 2022-23 के दौरान 4.1 फीसदी घटकर 15.4 फीसदी रह सकती है। 2021-22 में यह आंकड़ा 19.5 फीसदी रहा था। आंकड़ों के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष में विनिर्माण क्षेत्र का उत्पादन घटकर 1.6 फीसदी रहने का अनुमान है। 2021-22 में इसमें 9.9 फीसदी की वृद्धि हुई थी। इसी तरह, खनन क्षेत्र में उत्पादन की वृद्धि दर कम होकर 2.4 फीसदी रह सकती है, जो इससे पिछले वित्त वर्ष के दौरान 11.5 फीसदी रही थी। चालू वित्त वर्ष में नॉमिनल जीडीपी 36.43 लाख करोड़ रुपये बढ़कर 273.08 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच सकती है। 2021-22 में यह आंकड़ा 236.65 लाख करोड़ रहा था। वास्तविक जीडीपी या स्थिर मूल्य (2011-12) पर आकार 2022-23 में 157.60 लाख करोड़ रह सकता है। पहले 147.36 लाख करोड़ का अनुमान था।

उत्कर्ष क्लासेस सीएचओ परीक्षा के लिए एमसीक्यू क्रैश कोर्स आयोजित करेगा

नई दिल्ली। अच्छी स्वास्थ्य सेवा खुशहाल और समृद्ध जीवन के लिए है। नर्सेस रोगियों तक सर्वोत्तम स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं को सुनिश्चित करने और स्वास्थ्य लाभ में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आरएसएमएसएसबी ने सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों (सीएचओ) के लिए 3531 रिक्त पदों की घोषणा की है। इन रिक्त पदों पर आवेदन करने के लिए आरएसएमएसएसबी 19 फरवरी को एक परीक्षा आयोजित कर रहा है। सभी को गुणवत्तापूर्ण और सस्ती शिक्षा प्रदान करने के अपने लक्ष्य के तहत, जोधपुर-मुख्यालय उत्कर्ष क्लासेस जयपुर में चुनिंदा ऑफलाइन स्थानों पर सीएचओ एमसीक्यू परीक्षा के लिए क्रैश कोर्स आयोजित कर रहा है। पाठ्यक्रमों के लिए ऑनलाइन कक्षाएँ मिलकर आयोजित की जाएगी। क्लास जयपुर सेंटर पर सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक लगेगी। 8 जनवरी या उससे पहले आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को पाठ्यक्रम पर 500 रुपये की छूट मिलेगी। उम्मीदवार उत्कर्ष क्लासेस, हिंडौन हाइट्स, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर में श्री गोपाल नगर में पंजीकरण करा सकते हैं। ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की लागत रु. 4000 और 1000 रुपये की पेशकश मूल्य में उपलब्ध हैं। उम्मीदवार पाठ्यक्रमों के लिए पंजीकरण कर सकते हैं। उत्कर्ष क्लासेस के संस्थापक और सीईओ डॉ. निर्मल गहलोत ने पाठ्यक्रमों के बारे में बात करते हुए कहा, स्वास्थ्य सेवा मानवता की सेवा का सबसे बड़ा रूप है। हम आशा करते हैं कि सुलभ और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ, हम उम्मीदवारों को उनके सपने को पूरा करने और समाज की अच्छी तरह से सेवा करने में मदद कर सकते हैं। उत्कर्ष 8 जनवरी को गोपालपुरा बाईपास रोड के उत्कर्ष टॉवर के पास शकुंतला भवन में सीएचओ परीक्षा की तैयारी के लिए एक सेमिनार भी आयोजित कर रहा है।

लीड ने भारत में पियर्सन के स्थानीय के-12 लर्निंग व्यवसाय का अधिग्रहण किया

नई दिल्ली। भारत की सबसे बड़ी स्कूल एडटेक कंपनी लीड ने घोषणा की कि उसने भारत में अपने स्थानीय के-12 लर्निंग व्यवसाय का अधिग्रहण करने के लिए दुनिया की अग्रणी लर्निंग कंपनी पियर्सन के साथ समझौता किया है। इस अधिग्रहण के साथ, लीड तुरंत 9000 से अधिक स्कूलों तक अपनी पहुंच का विस्तार करेगी और भारत में 5 लाख से अधिक निजी स्कूलों के पूरे स्पेक्ट्रम को पूरा करने के लिए अपने उत्पाद पोर्टफोलियो को और बढ़ाएगी। लीड के सह-संस्थापक और सीईओ सुमीत मेहता ने कहा, ष्लीड का मिशन हर बच्चे को उत्कृष्ट शिक्षा देना है। स्कूल एडटेक कोविड के बाद निरंतर विकास के लिए तैयार है और पियर्सन इंडिया के स्थानीय के-12 लर्निंग बिजनेस के अधिग्रहण के साथ, हम हर बच्चे को उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने के अपने मिशन की सेवा में अधिक स्कूलों और छात्रों तक पहुंचने में सक्षम होंगे। यह अधिग्रहण भारत के स्कूलों में 21वीं सदी के स्कूल एडटेक इनोवेशन को लाने के लिए हमारे संयुक्त ज्ञान, अनुभव और प्रौद्योगिकी ताकत पर तालमेल को अनलॉक करेगा और निर्माण करेगा। अपने के-12 लर्निंग पोर्टफोलियो में, पियर्सन इंडिया निजी, अंग्रेजी माध्यम सीबीएसई और आईसीएसई स्कूलों को उच्च गुणवत्ता वाले मिश्रित शिक्षण समाधान (किताबें प्लस डिजिटल) प्रदान करता है, जो घर पर सीखने की निरंतरता सुनिश्चित करता है; और शिक्षक संसाधन। भारत में पियर्सन के स्थानीय के-12 लर्निंग व्यवसाय के लीड के अधिग्रहण को नए धन उगाहने और आंतरिक संसाधनों के संयोजन के माध्यम से वित्त पोषित किया जा रहा है।

खंभे लगे वर्षो पहले, कनेक्शन के लिए नहीं लगाए गए इंसुलेटर वॉयर

यह है हाल

विद्युत विभाग की लापरवाही के खिलाफ नागरिकों ने किया प्रदर्शन

जनसंदेश न्यूज

विद्युत विभाग के खिलाफ प्रदर्शन करते नागरिक

गोपीगंज। नगर पालिका परिषद गोपीगंज के वार्ड नंबर 11 अलीनगर में वर्षो पहले खंभे तो लगे, लेकिन इंसुलेटर वायर आज तक नहीं खींची गई। नागरिकों ने बताया कि हम यहाँ पर दशकों से रहते चले आ रहे हैं और वैध कनेक्शन धारी है, हमारा बिल भी अपडेट है, कोई बकाया नही है।

हमे अपने कनेक्शन को अपने घरों तक पहुंचाने में दस से पंद्रह हजार रुपए खर्च करने पड़ते है। तब कही जाकर घरों में उजाला हो पाता है। जब कभी बरसात का मौसम आता है, बीच रास्ते से तार टूट जाने पर विद्युतकर्मियों को बुलाने पर हजारों का खर्च आता है। विद्युत लाइन लाने के लिए काफी परेशानी झेलनी पड़ती है, कोई अपने बारजे से तार नहीं आने देता। जब इस संबंध में विद्युत विभाग के आलाअधिकारियो के पास जाते है तो बजट नहीं होने का हवाला देकर टाल दिया जाता है। इस संबंध में नागरिकों ने विद्युत विभाग के आला अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराने हेतु प्रदर्शन कर मांग किया कि हम वैध उपभोक्ता है। हमारे मोहल्ले में इंसुलेटर वायर का विस्तार किया जाए जिससे हमें सुचारू रूप से विद्युत आपूर्ति मिलती रहे। प्रदर्शन में शामिल अध्यक्ष पद के प्रत्याशी गुड्डू चौधरी ने कहा कि इस समस्या की समाधान के लिए बिजली विभाग के अधिकारियों से मिलकर बात की जाएगी। प्रदर्शनकारियों में मुख्य रूप से अब्दुल रशीद, शरीफ राइन, शमसुद्दीन राइन, आलम राइन, मोहम्मद वसीम, शहजाद आदि लोग उपस्थित रहे।

यातायात सड़क सुरक्षा हेतु छात्राओं ने ली शपथ, निकाली जागरूकता रैली

भदोही। सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान माह के अंतर्गत केशव प्रसाद मिश्र राजकीय महिला महाविद्यालय औराई की छात्राओं ने प्राचार्य डॉ. बृजकिशोर त्रिपाठी एवं महाविद्यालय परिवार के साथ यातायात सुरक्षा हेतु शपथ ग्रहण लिया एवं सड़क सुरक्षा जागरूकता रैली निकाली गई।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. बृज किशोर त्रिपाठी ने महाविद्यालय की छात्राओं को सर्व प्रथम सडक सुरक्षा शपथ दिलाई एवं उनसे सड़क सुरक्षा हेतु नियम प्रतीक चिन्हों आदि का समुचित तरीके से पालन करने की अपील की। उन्होंने कहा कि छात्राएं जब अपने घर से निकलें तभी सड़क सुरक्षा के नियमों को पालन करने का प्रण लें एवं सड़क पर हमेशा बायें चलें, सर्विस लेन में चलने का प्रयास करें, स्कूटी या गाड़ी चलाते समय हमेशा सीट बेल्ट का प्रयोग करें, शराब या मदिरापान करके गाड़ी न चलाएं चौराहे पर ट्रैफिक लाइट के नियमों का समुचित पालन करें।

इस अवसर पर सड़क सुरक्षा अभियान के संयोजक अनुज कुमार सिंह ने सड़क सुरक्षा माह जो कि 5 जनवरी से प्रारंभ होकर 04 फरवरी तक चलेगा, उसके अंतर्गत होने वाले रोड सेफ्टी क्लब का गठन, जागरूकता कार्यक्रम, वालराइटिंग, पोस्टर, निबंध प्रतियोगिता एवं सेमिनार गोष्ठी आदि के बारे में छात्राओं को विस्तार से बताया। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक गण एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

संक्षेप

खादी तथा ग्रामोद्योगी वृहद प्रदर्शनी में 40 लाख की हुई बिक्री

गोपीगंज। उत्तर प्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा रामलीला मैदान, मीरजापुर रोड, गोपीगंज में जनपद स्तरीय खादी तथा ग्रामोद्योगी वृहद प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक तीन से बारह जनवरी तक किया जा रहा है, जिसमें प्रतिदिन खादी उत्पादो एवं ग्रामोद्योगी इकाईयों के स्टॉलों पर भारी भीड़ उमड़ी रही है। आयोजित वृहद प्रदर्शनी में शनिवार को मौसम खुला तो लोगों की भारी भीड़ प्रदर्शनी की ओर चली। सबसे ज्यादा लोग ऊनी कपड़ों की स्टाल पर नजर आये खादी रेशम, खादी जैकेट, स्वदेशी कलेक्शन पर ट्रेक सूट, कश्मीरी ड्राई फ्रूट्स पर लोगों की भीड़ जुटी रही। खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी में रासरंग संस्था लखनऊ कज संगीता यादव और कलाकारों के द्वारा सब गोलमाल है नाटक प्रस्तुत किया गया। हास्य नाट्य लोगों ने जमकर तालियां बजाई। खरीदारी के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी लोग आनंद लेते नजर आए। युवाओं की भीड़ सेल्फी पॉइन्ट पर लोग सेल्फी भी खींचते हुए नजर आ रहे थे 3 तारीख से चलने वाली इस प्रदर्शनी में लगभग 44 लाख से ज्यादा की बिक्री की गई है।

कल से चलेगा विशेष टीकाकरण अभियान

जौनपुर। शासन के निर्देश के क्रम में सोमवार से बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं के लिये विशेष टीकाकरण अभियान जनपद में चलाया जायेगा। यह अभियान तीन चरणों में चलाया जायेगा। प्रथम चरण- 9 जनवरी से 20 जनवरी तक, द्वितीय चरण- 13 फरवरी से 24 फरवरी एवं तृतीय चरण 13 मार्च से 24 मार्च तक चलाया जायेगा। इसके साथ नियमित टीकाकरण कार्यक्रम प्रत्येक बुद्धवार एवं शनिवार को पूर्व की भाँति चलता रहेगा। बताते चलें कि जनपद में 13 जानलेवा बीमारियों से बचाव हेतु 11 प्रकार के टीके बच्चों को लगाये जाते है। यह टीकाकरण कार्यक्रम पूरे वर्ष अनवरत चलाये जाते हैं, इस दौरान कुछ बच्चे टीकाकरण से छूट जाते है, यह विशेष टीकाकरण अभियान मुख्य रूप से ऐसे ही किसी कारणवश छूटे हुये बच्चों को सभी टीकों से आच्छादित करने के लिए चलाया जा रहा है। विभाग द्वारा इसके लिये 0 से 5 वर्ष के सभी बच्चों का सर्वे आशा एवं ऑगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा कराया गया है, सर्वे में कुल 0 से 5 वर्ष के 527522 बच्चे मिले है, इन 0 से 5 वर्ष के बच्चों में से एमआर-1 के 16315 बच्चे छूटे मिले हैं एवं एमआर-2 के 28958 बच्चे छूटे मिले हैं। विभाग द्वारा उपरोक्त समस्त बच्चों का शत-प्रतिशत टीकाकरण करने हेतु माइक्रोप्लान तैयार कर लिया गया है एवं वैक्सीन व अन्य लॉजिस्टिक की व्यवस्था पूर्ण कर ली गयी है, अभियान के दौरान प्रतिदिन टीकाकरण किया जायेगा। जिलाधिकारी द्वारा सभी विभागों को इस टीकाकरण अभियान में सहयोग प्रदान करने हेतु निर्देशित किया गया है। जिलाधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं जिला प्रतिरक्षण अधिकारी ने जनपदवासियों से अपील की है कि, अपने बच्चों को इस दौरान छूटे हुये टीके अवश्य लगवायें।

यातायात माह के तहत किया गया जागरूक

जौनपुर। शासन के निर्देश के क्रम में शनिवार को सड़क सुरक्षा माह- 2023 के दृष्टिगत पुलिस उपमहानिरीक्षक/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आदेशानुसार क्षेत्राधिकारी यातायात/ नगर कुलदीप कुमार गुप्ता के निर्देशन में प्रभारी निरीक्षक यातायात जीडी शुक्ला व समस्त उप निरीक्षक यातायात की उपस्थिति में एनसीसी कैडेटों को यातायात नियमों के पालन हेतु जागरूक करते हुये समाज में इस विषय की महत्ता को लेकर प्रोत्साहित किया गया। यातायात के प्रति सजगता को एक जन अभियान के साथ जोड़ने का आवाहन किया गया साथ ही वाहन चेकिंग के दौरान दिल में ना धारण करने वालों को उसके हानि लाभ से अवगत कराया गया तथा एनसीसी कैडेटों को यातायात संकेतो के संचालन का प्रशिक्षण भी दिया गया।

दो टीमों के खेल से सौहार्द्र और बढ़ता है : प्रभाकर

केराकत। केराकत स्पोर्ट्स डेवलपमेंट एकेडमी के तत्वावधान में स्थानीय नार्मल स्कूल के मैदान पर शनिवार को स्व. चौधरी चरण सिंह स्मारक फुटबाल प्रतियोगिता में केराकत स्पोर्टिंग क्लब तथा यूनाईटेड क्लब मुबारकपुर के बीच मैच खेला गया। जिसमें खिलाड़ी एक दूसरे पर आक्रमक हमले पर हमला करते रहे। खेल का शुभारंभ सोनार समाज के अध्यक्ष प्रभाकर उर्फ राजू सेठ ने सहयोगियों संग खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर फुटबाल को किक मारा और खिलाड़ियों का पीठ थपथपाते हुए कहा कि सभी खिलाड़ी ईमानदारी से खेल खेलते हुए अच्छा प्रदर्शन करें जिससे अपना नाम रोशन करें और खिलाड़ियों के बीच और सौहार्द व पहचान बने। खेल के पहले हाफ के 5 मिनट पर मुबारकपुर की टीम ने एक गोल करके बढ़त हासिल कर लिया। फिर खेल के 25वें मिनट पर मुबारकपुर की टीम ने एक और गोल मारकर 2 गोल से बढ़त बना लिया। खेल और आक्रामक हो गया। दूसरे हाफ के थोड़े देर में केराकत ने एक गोल मारकर अपना भी झंड़ा गाड़ दिया। खेल के आखिरी में मुबारकपुर ने फिर एक गोल मारकर 3-1 से विजयी घोषित हुई। निर्णायक राजेश यादव (मिश्रा) रहे। खेल के कुशल कमेंट्रेटर वीरेन्द्र उर्फ वीरू यादव रहे। खेल के कोच जीशान हैदर, स्वतन्त्र कुमार यादव रहे। इस मौके पर मनोज कमलापुरी, बेचू यादव, जयसिंह चौहान, योगेश यादव आदि लोग मौजूद रहे। संयोजक दूधनाथ यादव, उपाध्यक्ष सुशील सोनकर, सचिव सत्यनारायण सोनी ने आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

घायल को पहुंचाएं चिकित्सालय पाएं पांच हजार रुपये का पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र

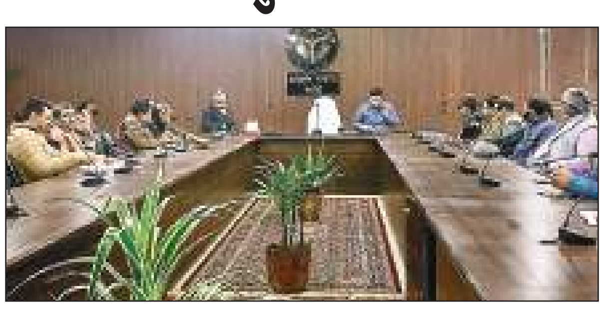

जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में उपस्थित अधिकारीगण

जनसंदेश न्यूज

प्रोत्साहन

घायल व्यक्ति की जान बचा कर बनें गुड सेमेरिटन व बनें नेक आदमी

सड़क सुरक्षा माह के अन्तर्गत जिला सड़क सुरक्षा समिति की हुई मासिक समीक्षा बैठक

भदोही। जिला सड़क सुरक्षा समिति की मासिक समीक्षा बैठक शनिवार को अपर जिलाधिकारी न्यायिक शिवनारायण सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई।

नोडल अधिकारी अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी संजीव भीमराव ने बताया कि तुलनात्मक रूप से सड़क दुर्घटना में 10 प्रतिशत से अधिक की कमी आयी है। निरन्तर इसी दिशा में उत्तरोत्तर प्रर्वतन एवं जागरूकता हेतु प्रयास करने के निर्देश दिए गये। एनएचआई के सवेकृत स्थल पर कस्बा गोपीगंज, लालानगर, जंगीगंज, माधोसिंह, में दुर्घटना के कारणों एवं उनके निदान पर आवश्यक कार्यवाही हेतु बल दिया गया। बल देते हुए मुख्य हाईवे पर अनाधिकृत रूप से वाहन खड़े किए जाने पर मनाही के निर्देश दिए गये।

अधिशाषी अभियंता ने कहा कि बैठक में सड़क सुरक्षा माह के दृष्टिगत गुड सेमरिटन नेक आदमी बने घायल व्यक्ति की जान बचाए। जिसके अन्तर्गत सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को गोल्डेन हार्वस एक घण्टा में चिकित्सालय में पहुंचाकर, अपने नैतिक कर्तव्य का निर्वहन करें और पांच हजार रुपए का पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र पाये।

बैठक में अपर जिलाधिकारी न्यायिक शिवनारायण सिंह ने जनपदवासियों से अपील किया कि सभी यातायात नियमों का शत-प्रतिशत पालन कर जिम्मेदार नागरिक बने। बैठक में एआरटीओ शरद कुमार मिश्रा, वुडवर्ड स्कूल के प्रबन्धक पुनीत मेहरा एवं सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

अब तक दस अभियुक्तों की कराई जा चुकी है जमानत निरस्त

ज्ञानपुर। डॉ. अनिल कुमार एसपी भदोही द्वारा शातिर अभियुक्तों की जमानत निरस्तीकरण हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के क्रम में भदोही पुलिस द्वारा प्रभावी पैरवी करते हुए जमानत की शर्तों का उल्लंघन करने वाले व गलत तरीकों से जमानत का लाभ प्राप्त करने वाले अपराधियों की जमानत निरस्त कराने की लगातार कार्यवाही की जा रही है। थाना भदोही पुलिस के अथक प्रयास से जमानत पर रिहा मादक द्रव्य पदार्थों की तस्करी करने वाले गिरोह का अंतर्जनपदीय शातिर सदस्य अभियुक्त निवासी मौजीवंश का पुरा खडेरी थाना बरसठी जनपद जौनपुर उम्र 21 वर्ष का जनपद भदोही से संबंधित दो जमानतदारों द्वारा स्वेच्छा से अपनी जमानत वापस लेने का शपथ पत्र समक्ष न्यायालय अपर जनपद न्यायाधीश एफटीसी प्रथम के दाखिल किया गया। प्रभारी निरीक्षक भदोही के प्रभावी कार्यवाही के फलस्वरुप न्यायालय द्वारा स्वापक ओषधि एवं प्रभावी पदार्थ अधिनियम एनडीपीएस एक्ट के आरोपी की जमानत निरस्त की गई है। अभियुक्त के विरुद्ध जनपद भदोही व जौनपुर में गैंगस्टर सहित एनडीपीएस एक्ट के तहत कुल 4 अभियोग पंजीकृत हैं। जनपद पुलिस द्वारा प्रभावी पैरवी कर अब तक 10 अभियुक्तों की जमानत न्यायालय से निरस्त करायी जा चुकी है।

13.01 लाख रुपये की हुई वसूली 72 बकाएदारों के कनेक्शन कटे

कार्रवाई

10 के विरुद्ध विद्युत चोरी का मुकदमा पंजीकृत कराया

मोहल्ला राजपुरा में विद्युत कनेक्शन की जांच करते अवर अभियंता कुंवर ज्योति प्रकाश

भदोही। विद्युत विभाग द्वारा लगातार जांच अभियान चलाने के साथ ही बकायेदारों के विरुद्ध मुकदमा भी पंजीकृत कराया जा रहा है। इसके बावजूद बकायेदारों पर कोई असर नहीं पड़ रहा है। विभाग द्वारा शहर व ग्रामीण अंचलों में भी विद्युत बकाया को लेकर जांच अभियान चल रहा है।

शहर के कई मोहल्लों में अवर अभियनयन्ताओं के नेतृत्व में जांच के दौरान विद्युत बकायेदारों से 13 लाख एक हजार रुपये की बकाया वसूली की गई जब कि 72 बकाएदारों के कनेक्शन काटे गए साथ ही 10 लोगों के विरुद्ध विद्युत चोरी का मुकदमा भी पंजीकृत कराया गया। जिससे मोहल्लों में हड़कंप मचा रहा। शनिवार को अवर अभियंताओं ने अपने अपने क्षेत्रों में जांच अभियान चलाया।

कार्रवाई से प्रभावित क्षेत्रों में अफरा तफरी मची रही। टाउन फीडर के अवर अभियंता प्रमोद चौहान के नेतृत्व में टीम द्वारा जांच करते हुए मोहल्ला जलालपुर, काजीपुर, पीरखानपुर, स्टेशन रोड क्षेत्र में जांच करते हुए 28 उपभोगताओं की जांच की जिसमे 17 उपभोक्ताओं का कनेक्शन काटा गया जब कि 2.65 लाख वसूली के साथ दो के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत कराया। इंदिरामिल फीडर के अवर अभियंता कुंवर ज्योति प्रकाश ने मोहल्ला राजपुरा, चौरी रोड, बाजार सरदार खान, धासकरी, हृदय पट्टी, पिपरी व गंगापुर को निशाना बनाया। जांच में 4.25 लाख वसूली व 28 बकाएदारों की बत्ती गुल की गई साथ ही 3 के विरुद्ध विद्युत चोरी का एफआईआर भी दर्ज कराया।

कार्पेट सिटी फीडर के अवर अभियंता मनोज कुमार सिंह के नेतृत्व में आलमपुर व घमहापुर क्षेत्र में जांच की गई। इस दौरान 1.55 लाख की वसूली करने के साथ 12 बकाएदारों की बत्ती गुल की गई। नई बाजार अवर अभियंता सुजीत पटेल के नेतृत्व में जांच टीम में नई बाजार, मर्यादपट्टी, अशोक नगर व पटेल नगर में जांच करते हुए बकाया वसूली में 15 बकायदारों का विद्युत कनेक्शन काटने के साथ ही 4.56 लाख की वसूली करते हुए 5 लोगों पर विद्युत चोरी का मुकदमा भी पंजीकृत कराया।

भदोही थाने की पुलिस ने पंद्रह हजार के इनामी को दबोचा

भदोही। कानून व्यवस्था सुदृढ़ रखने के दृष्टिगत अपराधों की रोकथाम व आपराधिक प्रवृत्ति के अभियुक्तों के विरुद्ध लगातार की जा रही प्रभावी पुलिस कार्यवाही के क्रम में एसपी के कुशल निर्देशन में थाना भदोही की गठित टीम को बड़ी सफलता मिली है। भदोही पुलिस को उत्तर प्रदेश गिरोह बंद समाज विरोधी क्रियाकलाप निवारण अधिनियम से सम्बन्धित वांछित व 15,000 रुपये का इनामी आरोपी राजू बनवासी पुत्र चनिका बनवासी निवासी मुंहफोड़ा थाना भदोही को मुखबिर की सूचना के आधार पर गिरफ्तार करने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। गिरफ्तार अभियुक्त के कब्जे से एक अदद चाकू नाजायज बरामद करने का पुलिस ने दावा किया है। उक्त बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर धारा 4/25 आर्म्स एक्ट का अभियोंग पंजीकृत किया गया। गिरफ्तारशुदा अभियुक्त चोरी, नाजायज शस्त्र व गैंगस्टर जैसे जघन्य अपराध में शामिल है। जिसकी गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक ने पन्द्रह हजार रुपये का इनाम घोषित था। राजू लगभग चार माह पूर्व से वांछित चल रहा था।

शिकायतों को निस्तारित कर आख्या को पोर्टल पर करें अपलोड

बोले सीडीओ

जनपद के तीनों तहसीलों में आयोजित हुआ सम्पूर्ण समाधान दिवस

जनसंदेश न्यूज

ज्ञानपुर में लोगों की समस्याओं को सुनते एसडीएम और सीएमओ

भदोही। जन शिकायतों के त्वरित निस्तारण एवं कार्यवाही के दृष्टिगत सम्पूर्ण समाधान दिवस जनपद के सभी तहसीलों में आयोजित किया गया। तहसील ज्ञानपुर में प्रभारी मुख्य विकास अधिकारी श्याम जी, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. संतोष कुमार चक, प्रभागीय वनाधिकारी नीरज आर्य, उप जिलाधिकारी अश्वनी पांडेय, पुलिस उपाधीक्षक प्रभात राय, तहसील भदोही में अपर पुलिस अधीक्षक राजेश भारती, उप जिलाधिकारी डॉ. कृपा शंकर पांडेय व तहसील औराई में उप जिलाधिकारी लाल बाबू दूबे, पुलिस क्षेत्राधिकारी डॉ. उमेश्वर प्रभात सिंह अन्य अधिकारियो द्वारा सम्पूर्ण समाधान दिवस में उपस्थित होकर फरियादियों की समस्याओ को सुना गया।

जनपद के तीनों तहसीलों में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस पर उपस्थित अधिकारियों ने कहा कि सम्पूर्ण समाधान दिवस पर प्राप्त प्रार्थना पत्रो को अधिकारी गुणवत्तापूर्ण ढंग से एक सप्ताह के अन्दर निस्तारण कराना सुनिश्चित कराये। प्रभारी मुख्य विकास अधिकारी श्याम जी ने कहा कि आईजीआरएस के निस्तारण मे डिफाल्टर कदापि नही होना चाहिये, प्राप्त संदर्भो का ससमय निस्तारित करते आख्या को पोर्टल पर अपलोड किया जाय।

इसी क्रम में तहसील ज्ञानपुर में उप जिलाधिकारी अश्वनी पांडे द्वारा कुल 40 प्रार्थना पत्रो में 07 का निस्तारण तथा तहसील भदोही में अपर पुलिस अधीक्षक राजेश भारती व उप जिलाधिकारी डॉ. कृपा शंकर पांडेय व अन्य अधिकारियो द्वारा कुल 50 प्रार्थना पत्रो में 08 का निस्तारण किया गया।

दहेज हत्या का वांछित आरोपी गिरफ्तार

ज्ञानपुर। पुलिस अधीक्षक डॉ. अनिल कुमार भदोही द्वारा महिला सम्बंधित अपराधों में त्वरित कार्यवाही अपराधों की रोकथाम व अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही तथा पंजीकृत अभियोग के वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु निर्देश के क्रम में थानाध्यक्ष चौरी के नेतृत्व में गठित टीम ने दहेज हत्या के आरोपी वीरेंद्र कुमार यादव पुत्र दयाशंकर यादव निवासी चांदी गहना थाना को रेलवे स्टेशन चौरी से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

पूर्व विधायक पं. सूर्यनाथ उपाध्याय की पुण्यतिथि आज

जनसंदेश न्यूज

सिकरारा। दिवंगत कांग्रेस नेता और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पूर्व विधायक पं. सूर्यनाथ उपाध्याय का जन्म 16 जनवरी 1918 को विकास खंड के देहजुरी गोपालपुर गांव के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पिता पूर्णमासी उपाध्याय की प्रेरणा से आजादी की लड़ाई में कूदे सूर्यनाथ ने सन 1938 में सत्याग्रह में भाग लिया तो 18 मार्च 1941 को पहली बार गिरफ्तार हो गए। नौ माह कठोर कारावास हुआ। सौ रुपये जुर्माना न देने पर तीन माह सजा और बढ़ा दी गई।

उन्होंने जेल में रहते हुए जबरदस्त क्रांतिकारी संगठन बना लिया। जेल से छूटने के बाद सिरसी, बरईपार के शिव मंदिर पर क्रांतिकारियों की बैठक में उन्हें संगठन का कमांडर चुना गया। उनकी अगुवाई में मछलीशहर तहसील पर आजादी के दीवानों ने धावा बोला और सुजानगंज थाना लूट लिया। ताहिरपुर में बने राजा बनारस की छावनी को तहस नहस कर दिया। कई गोदाम, डाकखाने लूटने के साथ बरगुदर पुल तोड़ने का प्रयास किया। इस संगठन से अंग्रेजी हुकूमत इस कदर बौखला गई कि पं. सूर्यनाथ को गोली मारने का हुक्म जारी कर दिया साथ ही दस हजार का इनाम।

16 अक्टूबर 1942 को कुल्हनामऊ में डाक लूटने के बाद कुछ गद्दारों के कारण सूर्यनाथ अपने साथियों बैजनाथ सिंह, दुखरन मौर्य, उदरेज सिंह, शिवव्रत सिंह सहित गिरफ्तार कर लिए गए। गिरफ्तारी के बाद अंग्रेजों ने उनका घर फुंकवा दिया। सात वर्ष कठोर कारावास के बाद सौ रुपये जुर्माना न देने पर सजा 18 महीने और बढ़ा दी गई। सजा पूरी होने के बाद दूसरे केस में फंसाकर 24 साल की सजा 1943 में वाराणसी सेंट्रल जेल में 15 दिन तक अनशन पर रहे।

हरदोई रेलवे स्टेशन पर नारा लगाते समय पुलिस से नोक-झोंक हुई तो अपशब्द कहने पर लोटे से प्रहार कर अंग्रेज अधिकारी का सिर फोड़ दिया। जेल में सख्त पहरा के बावजूद भागते समय अंतिम फाटक पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। अंग्रेजों ने खपींचे ठोंककर उनके नाखून उखड़वा लिए। इतनी बर्बरतापूर्ण यातना दी कि शरीर से मांस के लोथड़े लटक आए। कैदियों ने समझा कि सूर्यनाथ की मौत हो गई। 12 दिन बेहोशी के बाद जब उन्हें होश आया तो साथियों की जान में जान आई। आजादी के बाद फतेहगढ़ सेंट्रल जेल से 1962 में सिकरारा के ब्लाक प्रमुख और 1969 में रारी के विधायक बने। 1980 से 1982 तक जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे।

रारी से 1980 में पुनः उपचुनाव में विधायक बने। उसके बाद मड़ियाहूं से विधायक चुने गए। 8 जनवरी 1998 को देहांत हो गया। जिनके दो पुत्र राजबली उपाध्याय व अभयराज उपाध्याय के साथ पौत्र संजय उपाध्याय, अनिल उपाध्याय, अविनाश उपाध्याय (कान्हा) व अवनीश उपाध्याय (लल्ला) शिक्षणकार्य सहित समाजसेवा में लगे हैं।

दो दिवसीय टूर्नामेंट में नैय्यर-अरशद की जोड़ी ने जीता खिताब

खेलकूद

जेसीआई सिटी व जेजे के तत्वावधान में हुआ आयोजन

शाहगंज। सामाजिक संस्था जेसीआई शाहगंज सिटी ने दो दिवसीय बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन किया। टूर्नामेंट डिहवा भादी स्थित एक मैरेज लान में हुआ। मैच में कुल 16 जोड़ियों ने प्रतिभाग किया। शानदार संयोजन और बेमिसाल प्रदर्शन के बल पर नैय्यर और अरशद की जोड़ी ने खिताब अपने नाम किया। उजैर और अहद की जोड़ी टूर्नामेंट की उपविजेता रही।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि नपा अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रदीप जायसवाल, विशिष्ट अतिथि सभासद संदीप जायसवाल, कृष्णकांत सोनी और शीमप्रकाश अग्रहरि सिम्पू ने विजेता और उपविजेता टीम को कप देकर पुरस्कृत किया। इसके अलावा विजेता टीम को 3100 और उपविजेता टीम को 2100 रुपए का इनाम भी दिया गया। बाकी खिलाड़ियों को संस्था द्वारा प्रशस्ति पत्र दिया गया। इससे पहले टूर्नामेंट के पहले दिन मुख्य अतिथि समाजसेवी वीरेंद्र सिंह बंटी और विशिष्ट अतिथि डा. सुधाकर मिश्रा ने मैदान पर हाथ आजमाकर टूर्नामेंट की शुरूआत की। अध्यक्ष निर्भय जायसवाल ने बताया कि कुल 16 टीमों ने कांटे की टक्कर प्रस्तुत की और टूर्नामेंट का स्तर शानदार रहा। संचालन रविकांत जायसवाल ने किया। जेजे चेयरमैन आदित्य अग्रहरि रहे। जबकि रेफरी की भूमिका में एसडी चौहान, विकास जायसवाल, गौतम जायसवाल, अजय, पवन आदि थे। अंत में कार्यक्रम संयोजक सुमित अग्रहरि ने सभी का आभार ज्ञापित किया। टूर्नामेंट के दौरान पूर्व अध्यक्ष दीपक जायसवाल, दिवाकर, अविनाश, आशीष, सचिव कार्तिक अग्रहरि, हिमांशु, मिथिलेश, अमन अग्रहरी, अश्विनी, रौनक मोदनवाल, रोमिल अग्रहरि, आर्यन अग्रहरि और आयुष अग्रहरि मौजूद रहे।

ट्राफी के साथ विजेता टीम

जनसंदेश टाइम्स प्रा. लि. के लिए **प्रवीण कुमार कुशवाहा,** 8/6 ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज से प्रकाशित एवं मीडिया टेक्स्ट (Media Text) प्रा.लि. प्रेस, रोहनिया, वाराणसी से मुद्रित।
प्रधान सम्पादक - सुभाष राय
स्थानीय सम्पादक - प्रवीण कुमार कुशवाहा
पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बन्धित विवादों का न्याय क्षेत्र वाराणसी होगा।
फोन नं. -0532 - 2400063
आरएनआई नं. **UPHIN/2012/46202**
डाक पंजीयन सं.: जीपीओएलडब्ल्यू / एनपी - 78/2011-13.

जनसूचना अधिकारी पर सूचना छिपाने का आरोप

जांच की मांग

आरटीआई कार्यकर्ता को प्रधानपति ने धमकाया

सरायख्वाजा। शाहगंज विकास खंड के मेहरावां ग्राम प्रधान रानी सिंह के खिलाफ जांचोपरांत आरटीआई एक्ट में अनेक बिन्दुओं पर मांगी गई जानकारी को सही तरीके से न उपलब्ध कराने और आधी अधूरी जानकारी देने का गंभीर आरोप खंड विकास अधिकारी पर लगाया गया है।

आरटीआई कार्यकर्ताओं महेन्द्र बिन्द एडवोकेट एवं सुरेन्द्र सिंह ने मेहरावां ग्राम प्रधान रानी सिंह पर मनरेगा योजना में कराये गये कार्यों एवं खेल कूद मैदान व तीन परिषदीय विद्यालयों में काया कल्प योजना की जानकारी के साथ-साथ गांव की आंगनवाड़ी कार्यकत्री अनुसीता सिंह के सम्बन्ध में जनसूचना अधिकार अधिनियम 2005 के तहत सूचना मांगी थी लेकिन विकास खंड अधिकारी नन्दलाल एवं पंचायत अधिकारी भोले यादव तथा आंगनबाड़ी सुपरवाइजर ने समय सीमा निर्धारित के बाद आगे अपील करने पर उपलब्ध कराया वह भी तथ्यों को छिपा कर आधी अधूरी दिया है। सूचना मांगे जाने से खफा प्रधान पति अनिल सिंह व उनके भाई प्रदीप सिंह ने महेंद्र विन्द एडवोकेट आरटीआई कार्यकर्ताओं पर गत दिनों लपरी गांव के पास जानलेवा हमला कर घायल कर दिया जिसकी एफआईआर थाने में दर्ज किया था। आरटीआई कार्यकर्ताओं महेन्द्र बिन्द एडवोकेट एवं सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि विकास खंड अधिकारी एवं पंचायत अधिकारी तथा आंगनबाड़ी सुपरवाइजर प्रधान पति अनिल सिंह के प्रभाव के कारण सही जानकारी नहीं देते हैं उन्होंने जनसूचना अधिकारियों पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं और प्रदेश के जनसूचना आयोग लखनऊ में याचिका दायर की है।

आयुष में इन पद्धतियों का है समावेश (आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध व होम्योपैथी)

बेहतर स्वास्थ्य सेवा व गुणवत्तापूर्ण खाद्य सरकार की प्राथमिकता

अश्विनी कुमार श्रीवास्तव

वाराणसी। केंद्र सरकार में पहली बार बातौर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2014 में आयुष आयुष में इन पद्धतियों का है समावेश (आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध व होम्योपैथी) मंत्रालय का गठन किया, इसके बाद दुनिया में आयुर्वेद के प्रति लोगों का रुझान और बढ़ा है। आयुर्वेद एक प्राचीन पद्धति है जिसकी गाथा हजारों वर्षो की है। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी प्रदेश में आयुष के लिए लगातार कार्य कर रहें है जिसका नतीजा नये मेडिकल कॉलेज, नये बेड का अस्पताल, दवाओं की लम्बी लिस्ट, पंचकर्म के लिए उपकरण और आयुर्वेद में भी जरुरत के हिसाब से पैथलॉजी लैब बन रहे हैं। खास मुलाकात में जनसंदेश टाइम्स के प्रतिनिधि से बातचीत में प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार आयुष, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन डॉ. दयाशंकर मिश्र 'दयालु' ने इस बात को साझा किया। बताया कि भगवान धन्वंतरी ईश्वरीय वैद्य हैं जो आयुर्वेद के जनक मानें जाते हैं, भारत में इलाज की अति प्राचीन परम्पराओं में आयुर्वेद ही है जिसे पूर्व की सरकारों ने हाशिये पर रखा था, लेकिन आज योग की तरह आयुर्वेद को भी दुनिया अपना रही है, यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ही देन है कि आयुर्वेद के प्रति एक बार फिर लोगों का रुझान बढ़ा है।

प्रदेश भर के प्रसिद्ध मंदिरों में भगवान को लगने वाले भोग की गुणवत्ता की जांच कराई जा रही

सोनभद्र मिर्जापुर, चंदौली वाराणसी में प्राकृतिक चिकित्सा का अस्पताल जल्द लेगा मूर्त रूप

प्रदेश के साथ मंडल में सचल खाद्य जांच प्रयोगशाला को किया गया संचालित ताकि आम लोगों तक पहुंचने वाला खाद्य हो गुणवत्तापूर्ण

जनसंदेश टाइम्स
डॉ. दयाशंकर मिश्र 'दयालु' से
खास मुलाकात

खाद्य सुरक्षा के प्रति गंभीर है सरकार

खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए मंत्री दयालु ने कहा कि प्रदेश के साथ मंडल में सचल खाद्य जांच प्रयोगशाला संचालित की जा रही है। इन मंडल के जिलों में सचल दल जाकर नमूने ले रहा है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में लखनऊ में हनुमान सेतु मंदिर, कानपुर में इस्कॉन मंदिर, गाजियाबाद में मोदी मंदिर, मेरठ में हनुमान मंदिर और वाराणसी में संकट मोचन मंदिर सहित 75 धार्मिक स्थलों का चयन किया गया है। इन मंदिरों के प्रसाद की गुणवत्ता की जांच कराई जा रही है, मिलावट खोरों के प्रत सरकार पूरी तरह से सख्त है, सरकार की मंशा है कि हर ग्राहक तक गुणवत्ता पूर्ण खाद्य सामग्री उपलब्ध करायी जाए। खास मुलाकात के दौरान उनके पीआरओ गौरव राठी भी उपस्थित रहें।

डॉ. दयाशंकर मिश्र 'दयालु' राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार आयुष, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन उत्तर प्रदेश सरकार

गोरखपुर में बनने वाले आयुष विश्वविद्यालय के बाद सभी 105 आयुष कॉलेजों की संबंद्धता इसी विश्वविद्यालय से होगी

इंटरनेशनल ट्रेडिशनल मेडिसीन इंस्टीट्यूट जामनगर में

डॉ.दयालु ने बताया कि पुरानी सरकारों ने आयुर्वेद को हाशिये पर रखा लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक बार फिर दुनिया में आयुर्वेद को स्थापित करने का बिढ़ा उठाया है, जिस तरह से योग को दुनिया में प्रधानमंत्री ने स्थापित किया है उसी तरह आयुर्वेद के प्रति भी उनके द्वारा किये जा रहे कार्य का नतीजा है कि जामनगर में इंटरनेशनल ट्रैडिशनल मेडिसीन इंस्ट्टियूट बनाया गया जहां 176 देशों की परम्परागत दवाओं व इलाज की पद्धतियों पर काम करने के लिए इडब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने इन दवाओं पर अध्ययन के लिए भारत को चुना है यह हमारी परम्परागत पद्धति की ही देन है।

प्रदेश में इंटीग्रेटेड अस्पतालों का बढ़ रहा दायरा

आयुष मंत्री डॉ. दयाशंकर मिश्र ने बताया कि उत्तर प्रदेश में इंटीग्रेटेड अस्पतालों का दायरा लगातार बढ़ाया जा रहा है जहां एक ही छत के नीचे आयुर्वेद, योग, यूनानी और होम्योपैथ से इलाज किया जा सकेगा, प्रदेश में 50 बेड के 13 अस्पताल बना चुके हैं,11 अस्पताल बनकर तैयार हैं, प्रदेश के हर जिलों में इस तरह के अस्पताल बनाने का प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लक्ष्य रखा है। बताया कि चार हजार अस्पताल पहले से हैं। 19 राजकीय महाविद्यालय है, जहां पढ़ाई भी होती है और इलाज भी किया जाता है। उत्तर प्रदेश में आयुष के 105 राजकीय व निजी मेडिकल कॉलेज है, इसके साथ ही प्रदेश में प्रधानमंत्री ने गाजियाबाद में एक नये इंस्ट्टियूट की स्थापना की जो यूनानी पद्धति की है, प्रदेश के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है। गोरखपुर में आयुष का विश्वविद्यालय बन रहा है जो प्रदेश में आयुष को बढ़ावा देने के लिए बड़ी उपलब्धि है। इसके बनने से पहली बार 105 आयुष कॉलेजों का संबंद्ध आयुष विश्वविद्यालय से होगा।

प्राकृतिक चिकित्सा का अस्पताल जल्द

बताया कि कैथी में भारत सरकार की मंशा के अनुरूप प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति एक अस्पताल की तैयारी शुरू की जा रही है। भारत सरकार की ओर से बजट जारी कर दिया गया है। वहां की जमीन की चहारदीवारी करा दी गयी है। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भी मंशा है कि प्रदेश में प्राकृतिक चिकित्सा का एक बड़ा अस्पताल मूर्त रुप ले, इसके लिए लगातार जमीन तलाशी जा रही है। आने वाला समय आयुर्वेद का ही है। प्रदेश में इको टूरिज्म बोर्ड को बनाया गया है। इसमें आयुष मंत्रालय को भी शामिल किया है।

आने वाला कल आयुर्वेद का

आयुष मंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आयुर्वेद के परिकल्पना को पूरी तरह से साकार किया है, जिसका नतीजा हर आयुर्वेद अस्पताल में पैथलाजी लैब बना, इसके साथ ही अल्ट्रासाउंड व एक्सरे मशीन को भी स्थान दिया गया है। प्रधानमंत्री की सकारात्मक सोच की देन है कि आने वाला समय आयुर्वेद का है, इलाज के नाम पर देश के बाहर जाने वाले पैसे की पूरी बचत होगी।

बेगुनाह था,जेल में नहीं मिला 'सुख', दें दस हजार करोड़ का हर्जाना

गजब केस

रेप के मामले में दो साल तक जेल में रहा बाद में बेगुनाह साबित हुआ

मध्य प्रदेश का रतलाम ज़िला कोर्ट10 जनवरी को एक ऐसे मामले की सुनवाई करने जा रहा है, जिसमें मांगी गई मुआवजे की रकम चर्चा का विषय बन गई है। मुआवजे के रूप में मांगी गई रकम देख सबके होश उड़ जाएंगे। यह राशि है 10 हजार छह करोड़ दो लाख रुपये। यह रकम वाकई मांगी गई है, कोई कल्पना की बात नहीं।

ये राशि गैंगरेप के एक ऐसे मामले के लिए मांगी गई है जिसमें कांतिलाल सिंह को दो साल तक जेल में रहना पड़ा, लेकिन बाद में कोर्ट ने उन्हें तमाम आरोपों से बरी कर दिया। लेकिन कांतिलाल ने सबकुछ भूल जाना कबूल नहीं किया। उन्होंने कोर्ट से गुहार लगाई है कि 'जेल में रहने के कारण हुए नुकसान के लिए उन्हें मुआवजा दिलाया जाए। कांतिलाल ने छह करोड़ रुपये तमाम दूसरे नुकसान के लिए मांगे हैं, जबकि 10 हजार करोड़ की भारी भरकर रकम ' जेल में बिताए 666 दिन तक यौन सुख से वंचित रहने' के बदले मांगी गई है। पीड़ितों को दिये गये मुआवजे को 1989 में सुप्रीम कोर्ट ने उचित बताया था। लेकिन, कई लोग मानते हैं कि और मुआवजा मिलना चाहिए और इलाके की ठीक से सफाई होनी चाहिए। आदिवासी समुदाय के कांतिलाल ने कोर्ट में अपने वकील विजय सिंह यादव के जरिये याचिका दायर की है। मुआवजे से जुड़ी याचिकाओं में कोर्ट फीस भी लगानी होती है लेकिन 'विशेष प्रावधान के तहत' कांतिलाल ने शुल्क मुक्ति का आवेदन भी लगाया है। कांतिलाल सिंह उर्फ कांतु रतलाम से लगभग 55 किलोमीटर दूर स्थित घोड़ाखेड़ा के रहने वाले हैं।

कांतिलाल की दलील ये है

कांतु ने बताया, ?मुझे इस केस में बेवजह फंसाया गया था जबकि मैं बेगुनाह था। मुझे दो साल तक जेल में रहना पड़ा। मेरी पूरी जिंदगी बदल गई। मुझे कई तरह की प्रताड़ना का सामना करना पड़ा। मुझे उसका मुआवजा मिलना चाहिये। कांतिलाल का यह भी कहना है कि न सिर्फ उन्होंने, बल्कि उनके पूरे परिवार ने तमाम दिक्कतों का सामना किया। उनका कहना था कि परिवार के पास खाने तक को कुछ नहीं रहता था। उनकी गैरमौजूदगी में वो 'बेघर हो गये। बच्चों का पढ़ना-लिखना छूट गया।

कांतिलाल गिरफ़्तारी से पहले मजदूरी कर अपने परिवार का भरण पोषण करते थे। उनका ये भी दावा है कि जेल से छूटने के बाद भी उन्हें कोई काम देने को तैयार नहीं। इसकी वजह वो 'गंभीर आरोप' हैं, जो उन पर लगाए गए थे। कांतिलाल के परिवार में उनकी मां और पत्नी के अलावा तीन बच्चे है। उनकी एक बहन और उनका बच्चा भी उनके साथ रहते हैं. कांतिलाल के मुताबिक उनके भरण पोषण की जिम्मेदारी भी उन्हीं की थी। 10 हजार करोड़ मुआवजे के सवाल पर कांतिलाल के वकील विजय सिंह यादव ने कहा कि मानव जीवन की कोई कीमत तय नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि गलत मामले की वजह से एक व्यक्ति का जीवन बर्बाद हो जाता है। उसके परिवार को तरह-तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। लेकिन किसी को कोई फर्क नही पड़ता है. इसलिए ये जरुरी है कि उसे उसका उचित मुआवजा मिले। यादव का ये आरोप भी है, 'जिस महिला ने कांतिलाल पर आरोप लगाया था, उसने अपने अधिकारों का दुरुपयोग किया। वो ये संदेश भी देना चाहते है कि गरीबों के भी अपने अधिकार होते हैं और पुलिस उन्हें जब चाहे तब बेवजह के मामले में नहीं फंसा सकती। विजय सिंह यादव कहते हैं, दो साल तक जेल में रहकर कांतिलाल बाइज्जत बरी हो गए लेकिन उनके जीवन की जो पीड़ा है या ये कहें कि एक गरीब को जेल से बाहर आने के बाद जिस तकलीफ से गुजरना पड़ता है वो भी लोगों को पता चलना चाहिए। वकील यादव का कहना है कि इस मामले में जो बात सामने आयी है, उससे जानकारी हुई कि महिला के पति ने निजी वजह से आरोप लगाया था। उन्होंने बताया कि महिला छह महीने तक अपने घर नहीं लौटी. लेकिन इस दौरान उनकी गुमशुदगी की रिपोर्ट तक दर्ज नहीं कराई गई थी।

इन बातों के लिए मांगा मुआवजा

कांतिलाल को कोर्ट ने 20 अक्टूबर 2022 को सभी आरोपों से दोषमुक्त कर दिया. इस दौरान वो पूरे 666 दिन जेल में रहे। कांतिलाल ने वकील के जरिए जो मुआवजा मांगा है उसमें उन्होंने अलग अलग दिक्कतों के लिए अलग अलग मुआवजा मांगा है। क्षतिपूर्ति की मांग वाली याचिका में एक करोड़ रुपये व्यवसाय में नुकसान और जीवन में उत्पादक वर्षों की हानि के लिये मांगे हैं। एक करोड़ रुपये प्रतिष्ठा में नुकसान के लिये मांगे हैं। एक करोड़ रुपये शारीरिक और मानसिक पीड़ा के लिए मांगे गए हैं। एक करोड़ रुपये पारिवारिक जीवन के नुकसान के लिए और एक करोड़ रुपये शिक्षा और कैरियर की प्रगति के लिए अवसरों के नुकसान के कारण मांगे हैं। इसके अलावा दो लाख रुपये कोर्ट में लड़ने के लिये मांगे हैं। सबसे ज्यादा 10 हजार करोड़ रुपये का मुआवजा भगवान से इंसानों को मिले 'यौन सुख उपहार' से वंचित रहने के लिए मांगा गया है। वकील विजय सिंह यादव ने बताया, कांतिलाल बहुत गरीब हैं और वो उनका केस मुफ्त में अपनी संस्था 'जय कुलदेवी फाउंडेशन' के जरिये लड़ रहे हैं। उनके वकील का आरोप है कि इस तरह के मामले लगातार बढ़ रहे है जिसमें पुरुषों को झूठे आरोप में फंसा दिया जाता है और 'पुलिस बगैर जांच के काम करती है. इसे रोका जाना चाहिये। भोपाल के वरिष्ठ वकील सिद्धार्थ गुप्ता का कहना है कि जरूरत इस बात की है कि पुलिस में 'लॉ एंड आर्डर विंग और विवेचना विंग अलग-अलग होना चाहिए। प्रकाश सिंह बनाम यूनियन ऑफ इंडिया के मामले में 11 जनवरी 2007 के एक फैसले में भी कोर्ट ने ये माना कि ये 'अलग-अलग होना चाहिये ताकि इस तरह के मामलों में लोगों को जेल में न सड़ना पड़े। सिद्धार्थ गुप्ता ने आगे कहा, ऐसा होता नहीं है इसलिये ऐसे मामले सामने आते हैं जिसमें लोगों को बेगुनाह होते हुये भी जेल में रहना पड़ता है। गुप्ता के मुताबिक, मध्य प्रदेश में 2012 में ग्वालियर और भोपाल में इसे पायलेट प्रोजेक्ट के तौर पर लागू किया गया था लेकिन उसके बाद कुछ नहीं हुआ।

खोदाई-ब्लास्टिंग का कुप्रभाव दिखने लगा जोशीमठ पर

जोशीमठ में जमीन धंसने के बाद अब पानी बाहर आ रहा है। सरकार ने 600 परिवारों को सुरक्षित जगह पहुंचाने के निर्देश दिए हैं। उत्तराखंड का जोशीमठ धंस रहा है। यहां के 561 घरों में दरारें आ गई हैं। 4,677 वर्ग किमी में फैले इलाके से करीब 600 परिवारों को निकालने का काम चल रहा है। करीब 5 हजार लोग दहशत में हैं। उन्हें डर है कि उनका घर कभी भी ढह सकता है। सबसे ज्यादा असर शहर के रविग्राम, गांधीनगर और सुनील वार्ड में है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जोशीमठ के मकानों में दरार आने की शुरूआत 13 साल पहले हो गई थी। हालात काबू से बाहर निकले तो एनटीपीसी पॉवर प्रोजेक्ट और चार धाम ऑल वेदर रोड का काम रोकने के आदेश दे दिए गए। एक्सपर्ट्स का कहना है कि ब्लास्टिंग और शहर के नीचे सुरंग बनाने की वजह से पहाड़ धंस रहे हैं। अगर इसे तुरंत नहीं रोका गया, तो शहर मलबे में बदल सकता है। हिमालय के इको सेंसेटिव जोन में मौजूद जोशीमठ बद्रीनाथ, हेमकुंड और फूलों की घाटी तक जाने का एंट्री पॉइंट माना जाता है। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि जोशीमठ की स्थिति क्यों संवेदनशील है।

ग्लेशियर पर बसा है जोशीमठ

पुराने ग्लेशियर पर बसा शहर, बसावट के नीचे मिट्टी-पत्थर के ढेर

जोशीमठ की जियोलॉजिकल लोकेशन पर जारी रिपोर्ट्स में बताया गया है कि ये शहर इतना अस्थिर क्यों है।

जोशीमठ ग्लेशियर के मलबे पर बसा: वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी ने अपनी रिसर्च में कहा था- उत्तराखंड के ऊंचाई वाले इलाकों में पड़ने वाले ज्यादातर गांव ग्लेशियर के मटेरियल पर बसे हैं। जहां आज बसाहट है, वहां कभी ग्लेशियर थे। इन ग्लेशियरों के ऊपर लाखों टन चट्टानें और मिट्टी जम जाती है। लाखों साल बाद ग्लेशियर की बर्फ पिघलती है और मिट्टी पहाड़ बन जाती है। 1976 में गढ़वाल के तत्कालीन कमिश्नर एमसी मिश्रा की अध्यक्षता में बनी कमेटी ने कहा था कि जोशीमठ का इलाका प्राचीन भूस्सखलन क्षेत्र में आता है। यह शहर पहाड़ से टूटकर आए बड़े टुकड़ों और मिट्टी के ढेर पर बसा है, जो बेहद अस्थिर है। कमेटी ने इस इलाके में ढलानों पर खोदाई या ब्लास्टिंग कर कोई बड़ा पत्थर न हटाने की सिफारिश की थी। साथ ही कहा था कि जोशीमठ के पांच किलोमीटर के दायरे में किसी तरह का कंस्ट्रक्शन मटेरियल डंप न किया जाए।

जोशीमठ हिमालयी इलाके में जिस ऊंचाई पर बसा है, उसे पैरा ग्लेशियल जोन कहा जाता है। इसका मतलब है कि इन जगहों पर कभी ग्लेशियर थे, लेकिन बाद में ग्लेशियर पिघल गए और उनका मलबा बाकी रह गया। इससे बना पहाड़ मोरेन कहलाता है। वैज्ञानिक भाषा में ऐसी जगह को डिस-इक्विलिब्रियम कहा जाता है। इसके मायने हैं- ऐसी जगह जहां जमीन स्थिर नहीं है और जिसका संतुलन नहीं बन पाया है। एक वजह यह भी है कि जोशीमठ विंटर स्नो लाइन की ऊंचाई से भी ऊपर है। विंटर स्नो लाइन या शीत हिमरेखा वह सीमा होती है, जहां तक सर्दियों में बर्फ रहती है। ऐसे में भी बर्फ के ऊपर मलबा जमा होते रहने पर वहां मोरेन बन जाता है।

वाडिया इंस्टीट्यूट ने अपनी रिपोर्ट में पाया था कि मोरेन पहाड़ का एक तय वक्त के बाद खिसकना तय होता है। हालांकि, अंधाधुंध ब्लास्ट्स और बेतरतीब कंस्ट्रक्शन ने इसकी रफ्तार में इजाफा कर दिया है। वहीं, इसके वैज्ञानिकों ने कहा था कि जोशीमठ शहर के नीचे एक तरफ धौली गंगा और दूसरी तरफ अलकनंदा नदी है। दोनों नदियों की वजह से पहाड़ के कटाव ने भी पहाड़ को कमजोर किया है। एनटीपीसी के हाइडल प्रोजेक्ट की 16 किमी लंबी सुरंग जोशीमठ के नीचे से गुजर रही है। यह सुरंग मलबा घुस जाने के बाद बंद है। वैज्ञानिकों का कहना है कि सुरंग में गैस बनने पर इससे बना दबाव मिट्टी को अस्थिर कर रही है। इस वजह से जमीन धंस रही है।

हालात बिगड़ने पर सरकार ने ठळढउ के हाइडल प्रोजेक्ट की सुरंग और चार धाम ऑल-वेदर रोड (हेलंग-मारवाड़ी बाइपास) का काम रोकने का आदेश दिया था, लेकिन कागजों पर जहां काम बंद है, लेकिन मौके पर बड़ी मशीनें लगातार पहाड़ खोद रही हैं। भूगर्भ वैज्ञानिकों का कहना है कि जोशीमठ अलकनंदा नदी की ओर खिसक रहा है। इसकी जद में सेना की ब्रिगेड, गढ़वाल स्काउट्स और भारत-तिब्बत सीमा पुलिस की बटालियन भी है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि तुरंत असरदार कदम नहीं उठाए गए, तो बड़ी प्राकृतिक आपदा आ सकती है। इसमें जोशीमठ का वजूद ही मिट सकता है।

जोशीमठ की तस्वीरें बहुत ही भयावह

राहुल बोले

जमीन का फटना और सड़कों का धंसना बेहद चिंताजनक

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने उत्तराखंड के जोशीमठ में भूमि धंसने की घटनाओं पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि वहां की तस्वीरें विचलित करती हैं और लोगों को राहत देने के लिए तत्काल सख्त कदम उठाने की जरूरत है। गांधी ने फेसबुक संदेश में कहा कि उत्तराखंड के जोशीमठ से आ रही तस्वीरें अत्यंत भयावह हैं, जिन्हें देख कर काफी विचलित हूं। घरों में चौड़ी दरारें, पानी का रिसाव, जमीन का फटना और सड़कों का धंसना बेहद चिंताजनक है। एक हादसे में, भूस्खलन से भगवती मंदिर तक ढह गया। उन्होंने कहा कि प्रकृति के विरुद्ध जा कर, पहाड़ों पर लगातार खोदाई और अनियोजित निर्माण से आज जोशीमठ के लोगों पर भयानक संकट टूट पड़ा है। इस कड़कड़ाती ठंड में, इस आपदा ने लोगों से उनके आशियाने छीन लिए हैं। गांधी ने वहां के सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं से जल्द से जल्द लोगों की मदद करने और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने में मदद करने की अपील की है। उन्होंने उत्तराखंड सरकार से भी आग्रह किया है कि वह इस कठोर मौसम में लोगों का संज्ञान ले कर उनके तत्काल पुनर्वास का प्रबंध करे और मंदिर की सुरक्षा सुनिश्चित करे।